वर्ष 08 अंक 05 माह अगस्त, 2023 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

12

बाल गंगाधर तिलक ने उठाई थी पूर्ण स्वराज की मांग

जी–20 सम्मेलन
भारत की प्रतिष्ठा
में लगेंगे चार चांद

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या – 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा–139/2022–24

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

Mathura

Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 08, अंक - 05, अगस्त 2023

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क
340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)

बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश

पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
राजनीति

26 | अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने...

विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) ने मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का निर्णय लेकर अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता, नासमझी एवं विवेकहीनता का ही परिचय दिया है, यह प्रस्ताव स्वीकार भी हो गया। अब प्रतीक्षा है उस पर बहस की। आइएनडीआइए भले ही अविश्वास प्रस्ताव को अपनी जीत समझ रहा हो और यह मानकर चल रहा हो कि उसे संसद में अपनी एकजुटता एवं ताकत दिखाने का अवसर मिलेगा...

विशेष
सुर्खियों में

28 | योगी ने ज्ञानवापी पर जो कुछ कहा है...

मुख्यमंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि मुझे लगता है कि भगवान ने जिसे दृष्टि दी है वो देखे ना। त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा है। हमने तो नहीं रखे न। ज्योर्तिलिंग हैं देव प्रतिमायें हैं। पूरी दीवारें चिल्ला-चिल्ला के क्या कह रही हैं।

जरूर पढ़ें
चिंताजनक

38 | राहुल ने जो अमेठी सीट गँवाई थी, उसे कांग्रेस...

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के लिए बंजर मरुस्थल बन गया है। अब यहां ना कांग्रेस की सीटें आती हैं, ना वोट मिलता है। स्थिति यह है कि कांग्रेस यूपी में सोनिया गांधी की एक मात्र रायबरेली संसदीय पर सिमट गई है। कहने को तो गांधी परिवार से ताल्लुक रखने वाली मेनका गांधी और वरूण गांधी भी यूपी से सांसद हैं, लेकिन वह कांग्रेस की जगह भारतीय जनता पार्टी से चुने गए हैं।

जरूर पढ़ें
बारिश बनी मुसीबत

22 | क्यों तड़प उठी दिल्ली में यमुना नदी

जब भी किसी भी नदी की धारा सूख जाती है, तो लोग उसमें अपना घर बना लेते हैं या तरह-तरह के अतिक्रमण कर लेते हैं और जब बारिश के दिनों में नदी अपने वास्तविक स्वरूप में लौटती है तो कहा जाने लगता है कि देखो, बाढ़ आ गई। आज जब यमुना अपनी अस्तित्व तो बचाने के लिए अपने पूरे सामर्थ्य के साथ दिल्ली...

इंटरनेशनल इलेक्शन
अमेरिका

16 | व्हाइट हाउस की रेस 3 भारतवंशी विशेष...

अमेरिका में भारतीय मूल के इंजीनियर हर्षवर्धन सिंह ने राष्ट्रपति पद के लिए अपनी दावेदारी की घोषणा की है। वह निक्की हेली और विवेक रामास्वामी के बाद भारतीय मूल के तीसरे व्यक्ति बन गए हैं, जिन्होंने 2024 में अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के लिए रिपब्लिकन पार्टी...

42	कहानी
50	कविता

सम्पादकीय

सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है सावन शिवरात्रि

शिवरात्रि को भगवान शिव का सबसे पवित्र दिन माना गया है, जो सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत भी है। हालांकि पूरे साल मनाई जाने वाली इन शिवरात्रियों में से दो की मान्यता सर्वाधिक है, फाल्गुन महाशिवरात्रि और सावन शिवरात्रि। प्रायः जुलाई या अगस्त माह में मानसून के सावन महीने में मनाई जाने वाली सावन शिवरात्रि को कांवड़ यात्रा का समापन दिवस भी कहा जाता है। इस वर्ष सावन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 15 जुलाई शनिवार को रात 8.32 बजे से शुरू हो रही है और इस तिथि का समापन 16 जुलाई की रात 10.08 बजे होगा। विभिन्न हिन्दू तीर्थ स्थानों से गंगाजल भरकर शिवभक्त अपने स्थानीय शिव मंदिरों में इस पवित्र जल से भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार भारत में सावन शिवरात्रि का बहुत महत्व है। इस दिन गंगाजल से भगवान शिव का जलाभिषेक करना बहुत पुण्यकारी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन तीर्थस्थलों के गंगाजल से जलाभिषेक के साथ भगवान शिव की विधि विधान से पूजा-अर्चना करने और व्रत रखने से वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं और उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। दाम्पत्य जीवन में प्रेम और सुख शांति बनाए रखने के लिए भी यह व्रत लाभकारी माना गया है। सावन शिवरात्रि के दिन व्रत रखने से क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान और लोभ से मुक्ति मिलती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह व्रत कुंवारी कन्याओं के लिए श्रेष्ठ माना गया है और यह व्रत रखने से क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान तथा लोभ से भी मुक्ति मिलती है। सर्वत्र पूजनीय शिव को समस्त देवों में अग्रणी और पूजनीय इसलिए भी माना गया है क्योंकि वे अपने भक्तों पर बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं और दूध या जल की धारा, बेलपत्र व भांग की पत्तियों की भेंट से ही अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उनकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। वे भारत की भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता के प्रतीक हैं। भारत में शायद ही ऐसा कोई गांव मिले, जहां भगवान शिव का कोई मंदिर अथवा शिवलिंग स्थापित न हो। यदि कहीं शिव मंदिर न भी हो तो वहां किसी वृक्ष के नीचे अथवा किसी चबूतरे पर शिवलिंग तो अवश्य स्थापित मिल जाएगा। हालांकि बहुत से लोगों के मस्तिष्क में यह सवाल उमड़ता है कि जिस प्रकार विभिन्न महापुरूषों के जन्मदिन को उनकी जयंती के रूप में मनाया जाता है, उसी प्रकार भगवान शिव के जन्मदिन को उनकी जयंती के बजाय रात्रि के रूप में क्यों मनाया जाता है? इस संबंध में मान्यता है कि रात्रि को पापाचार, अज्ञानता और तमोगुण का प्रतीक माना गया है और कालिमा रूपी इन बुराईयों का नाश करने के लिए हर माह चराचर जगत में एक दिव्य ज्योति का अवतरण होता है, यही रात्रि शिवरात्रि है। शिव और रात्रि का शाब्दिक अर्थ एक धार्मिक पुस्तक में स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि जिसमें सारा जगत शयन करता है, जो विकार रहित है, वह शिव है अथवा जो अमंगल का ह्रास करते हैं, वे ही सुखमय, मंगलमय शिव हैं। जो सारे जगत को अपने अंदर लीन कर लेते हैं, वे ही करूणासागर भगवान शिव हैं। जो नित्य, सत्य, जगत आधार, विकार रहित, साक्षीस्वरूप हैं, वे ही शिव हैं। शिव के मस्तक पर अर्द्धचंद्र शोभायमान है, जिसके संबंध में कहा जाता है कि समुद्र मंथन के समय समुद्र से विष और अमृत के कलश उत्पन्न हुए थे। इस विष का प्रभाव इतना तीव्र था कि इससे समस्त सृष्टि का विनाश हो सकता था, ऐसे में भगवान शिव ने इस विष का पान कर सृष्टि को नया जीवनदान दिया जबकि अमृत का पान चन्द्रमा ने कर लिया। विषपान करने के कारण भगवान शिव का कंठ नीला पड़ गया, जिससे वे 'नीलकंठ' के नाम से जाने गए। विष के भीषण ताप के निवारण के लिए भगवान शिव ने चन्द्रमा की एक कला को अपने मस्तक पर धारण कर लिया। यही भगवान शिव का तीसरा नेत्र है और इसी कारण भगवान शिव 'चन्द्रशेखर' भी कहलाए। धार्मिक ग्रंथों में भगवान शिव के बारे में उल्लेख मिलता है कि तीनों लोकों की अपार सुन्दरी और शीलवती गौरी को अर्धांगिनी बनाने वाले शिव प्रेतों और भूत-पिशाचों से घिरे रहते हैं। उनका शरीर भस्म से लिपटा रहता है, गले में सर्पों का हार शोभायमान रहता है, कंठ में विष है, जटाओं में जगत तारिणी गंगा मैया हैं और माथे में प्रलयंकर ज्वाला है। बैल (नंदी) को भगवान शिव का वाहन माना गया है और ऐसी मान्यता है कि स्वयं अमंगल रूप होने पर भी भगवान शिव अपने भक्तों को मंगल, श्री और सुख-समृद्धि प्रदान करते हैं। शिव की भक्ति करने वाले को अपनी मस्तिष्क के पड़े उस अज्ञान के पर्दे को हटाने की जरूरत है जो उस कल्याणकारी देव प्रभाव को नहीं देख पाता है। शिव हरेक संकट में एक आश्वासन हैं। उनकी हरेक श्मशान घाट या भूमि में लगी मूर्ति मानव समाज को राहत देती है। उन कठोर पलों में उनको देखकर ऐसा लगता है मानो कोई आपकी पीठ को थपथपा रहा है। जैसे वे कहे रहे हो, 'मैं अभी हूं न तुम्हारे साथ।' अभी तक शिव का श्मशान भूमि में एकछत्र राज रहा है। वह उनकी दुनिया है। उसमें अतिक्रमण निषेध है। श्मशान में शिव की सत्ता है। शिव की मूर्ति के आसपास कुछ शोकाकुल लोग बैठ भी जाते हैं। उनको करीब से देखते भी हैं। मन ही मन सवाल भी करते होंगे कि क्यों श्मशान प्रिय है शिव को? हालांकि इस प्रश्न के उतर बार-बार मिल चुके हैं। सतगुरु जग्गी कहते हैं कि दरअसल शिव का श्मशान डेरा है। 'श्म' का मतलब 'शव' से और 'शान' का मतलब 'शयन' या 'बिस्तर' से है। जहां शव पड़े होते हैं, वहीं वह रहते हैं। ■

> ***शिव अपने भक्तों से कभी दूर नहीं जाते। श्रावण मास में समाधिस्थ शिव संसार को शंकाओं से मुक्त करते हुए समाधान से युक्त करते हैं। वे श्रद्धापूर्वक की गई प्रार्थनाओं को सुनते हुए हमारे पुरुषार्थ को फलीभूत करते हैं। सावन महीने के किसी सोमवार को शिव मंदिर में शिवलिंग के पास बैठकर पूजा करने का सुख वास्तव में अलौकिक होता है। इस दौरान काशी और झारखण्ड का वैद्यनाथ धाम तो काँवरियों से पट जाती है। महादेव शिव बनारस में लोकदेव हैं। सावन में शिव की पूजा, उपवास और ध्यान को उत्तम माना गया है। वर्ष का मास शिव को याद करने का है।***

डॉ. वंदना पालीवाल

हमारा लक्ष्य

बेहतर शिक्षा
बेहतर स्वास्थ्य

एक जनपद-एक मेडिकल कॉलेज की ओर अग्रसर

65 मेडिकल कॉलेज संचालित, 22 मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन

डबल इंजन की सरकार
विकास की दोगुनी रफ़्तार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएं राष्ट्रीय भावना को पैदा करती हैं

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में बौद्धदर्शन, महाभारत तथा रामायण के कथानक स्वतः ही उतर आते हैं। हिन्दी की खड़ी बोली के रचनाकार गुप्तजी हिन्दी कविता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। उनका काव्य वर्तमान हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी है।

संजय पाण्डे

इतिहास और साहित्य में ऐसी प्रतिभाएं कभी-कभी ही जन्म लेती हैं जो बनी बनाई लकीरों को पोंछकर नई लकीरें बनाते हैं। वे अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीते हुए नया जीवन-दर्शन निरुपित करते हैं और कुछ विलक्षण सृजन करते हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का व्यक्तित्व और कृतित्व भी इसका अपवाद नहीं हैं। यह शब्द सिद्धा अपने वजूद के रेशे-रेशे में, अपनी सांस-सांस में कविता की सिहरनें जीता हुआ राष्ट्रीय चेतना को बलशाली बनाता गया। शायद इसीलिये उनका बोला हर शब्द कविता बनकर जन-जन में राष्ट्र के प्रति आन्दोलित करता रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के उस दौर के अधिकांश कवि आजादी के गीत गा रहे थे, उनके कंठों में स्वतंत्रता का संगीत एवं क्रांतिकारी ज्वाला थी। मैथिलीशरण गुप्त भी अपनी कविताओं के माध्यम से देशभक्ति को स्वर देते आ रहे थे। आजादी की अनुगूंजें उनके काव्य का प्रमुख स्वर बनती गयीं। आजादी के लिये उनके क्रांतिकारी एवं आन्दोलनकारी शब्दों की ज्वाला ने देशभक्ति की अलख जगाई और वे जेल की सलाखों के पीछे भेज दिये गये। फिर भी उनकी शब्द-ज्वाला मंद नहीं पड़ी।

हिन्दी साहित्याकाश के दैदीप्यमान नक्षत्रों में से एक मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी के एक भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण काव्यानुरागी परिवार में 1886 में हुआ था। पिता सेठ रामचरण कनकने, माता कौशल्याबाई की वे तीसरी सन्तान थे। संस्कृत, बांग्ला, मराठी आदि कई भाषाओं का अध्ययन इन्होंने मुख्यतया घर पर ही किया। तत्पश्चात् आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आने से इनकी काव्य रचनाएं प्रतिष्ठित 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदीजी की प्रेरणा और सान्निध्य से इनकी रचनाओं में गंभीरता तथा उत्कृष्टता का विकास हुआ। इनके काव्यधारा राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं। गांधी जीवन दर्शन से खासे प्रभावित गुप्त ने स्वतंत्रता संग्राम में भी योगदान दिया और असहयोग आंदोलन में जेल यात्रा भी की। 1930 में महात्मा गांधी ने उन्हें साहित्य साधना के लिए 'राष्ट्र कवि' की उपाधि दी। हिन्दी भाषा की विशिष्ट सेवा के लिए आगरा विश्वविद्यालय ने इन्हें 1948 में डी. लिट् की उपाधि से अलंकृत किया। सन् 1952 में गुप्तजी राज्यसभा में सदस्य के लिए मनोनीत भी हुए थे। 1954 में उन्हें पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया था।

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में बौद्धदर्शन, महाभारत तथा रामायण के कथानक स्वतः ही उतर आते हैं। हिन्दी की खड़ी बोली के रचनाकार गुप्तजी हिन्दी कविता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। उनका काव्य वर्तमान हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी है। इसमें वह संजीवनी शक्ति है जो किसी भी जाति, वर्ग, धर्म को उत्साह जागरण की शक्ति का वरदान दे सकती है। उनकी कविताओं में हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, का विचार सभी के भीतर बदलाव की मानसिकता से गूँज उठा। मानवीय संवेदनाओं और जीवनदर्शन के साथ-साथ गुप्तजी की रचनाएं अनेक स्थानों पर सूक्तियां बन गई हैं। वे राष्ट्रीय चेतना, मानवतावादी सोच, नैतिक और सांस्कृतिक काव्यधारा के विशिष्ट कवि थे। 'भारत-भारती' गुप्तजी की प्रसिद्ध काव्यकृति है जो 1912-13 में लिखी गई थी। इसकी लोकप्रियता का आलम यह था कि इसकी प्रतियां रातोंरात खरीदी गईं। प्रभात फेरियों, राष्ट्रीय आन्दोलनों, शिक्षा संस्थानों, प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में भारत-भारती के पद गाँवों, नगरों में गाये जाने लगे। 'भारत भारती' के तीन खण्डों में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। यह स्वदेश-प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग है। भारतवर्ष के संक्षिप्त दर्शन की काव्यात्मक प्रस्तुति 'भारत भारती' निश्चित रूप से किसी शोध कार्य से कम नहीं है। गुप्तजी की सृजनता की दक्षता का परिचय देने वाली यह पुस्तक कई सामाजिक एवं राष्ट्रीय आयामों पर विचार करने को विवश करती है। भारतीय साहित्य में 'भारत-भारती' सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज है। गुप्तजी जिस काव्य के कारण जन-जन के प्राणों में रच-बस गये और राष्ट्रकवि कहलाए वह कृति 'भारत-भारती' ही है।

मैथिलीशरण गुप्त के लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों में भारत भारती (1912), रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया आदि उल्लेखनीय हैं। रामचरितमानस के पश्चात हिंदी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण साकेत है। नारी के प्रति उनका हृदय सहानुभूति और करुणा से आप्लावित हैं। यशोधरा, उर्मिला, कैकयी, विधृता आदि उनकी नारी प्रधान काव्य कृतियां हैं। गुप्तजी की भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का सुंदर अद्भुत समावेश है। वे गंभीर विषयों को भी सुंदर और सरल शब्दों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। इनकी भाषा में लोकोक्तियां एवं मुहावरे के प्रयोगों से जीवंतता देखने को मिलती है। इनकी शैली में गेयता, प्रवाहमयता एवं संगीतमयता विद्यमान है। उनकी राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक स्थान है। हिंदी काव्य से राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा को बहाने का श्रेय गुप्तजी को ही हैं। अतः ये सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। इनके काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

राष्ट्रप्रेम गुप्तजी की कविता का प्रमुख स्वर है। गांधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्य की कथावस्तु गुप्ताजी ने आज के जीवन से ना लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। वे अतीत की गौरव गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपनाते थे। उन्होंने हिन्दी काव्य-साहित्य के क्षेत्र में कथ्य एवं शिल्प दोनों में आमूलचूल बदलाव कर दिया था। काव्य की एक सर्वथा मौलिक किन्तु सशक्त धारा उनसे जन्मी। इस साहित्यिक क्रांति का यह आश्चर्यजनक पहलू था कि यह ऐसे राष्ट्रप्रेमी लेखक की कलम से उपजी थी जिसने स्वतंत्रता आन्दोलन को नया मुकाम दिया। वह एक समय ऐसा था जब भारत विद्या, कला-कौशल, साहित्य, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, शौर्य व सभ्यता में, संसार का शिरोमणि था और एक यह समय है कि इन्हीं बातों का इसमें सोचनीय अभाव हो गया है। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पग-पग पर पराया मुँह ताक रही है। क्या हम लोग अपने मार्ग से यहाँ तक हट गये हैं कि अब उसे पा ही नहीं सकते? संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो सचमुच उद्योग से सिद्ध न हो सके। परन्तु उद्योग के लिये उत्साह की आवश्यकता होती है। इसी उत्साह को एवं इसी मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिये गुप्तजी ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष एवं जन-जागृति का शंखनाद किया है। तभी उनके स्वर मुखरित हुए कि जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं। वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

मैथिलीशरणजी अंत तक अपनी कविताओं में इसी तरह राष्ट्रीयता के नए-नए रंग भरते रहे और नव रस घोलते प्रसारित करते रहे। उनकी कविताओं में मुख्यतः विषय भक्ति, राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति और समाज सुधार हैं। इनकी धार्मिकता में संकीर्णता का आरोप नहीं किया जा सकता, बल्कि इनकी धार्मिकता समग्रता और व्यापकता पर आधारित है। वे भारतीय संस्कृति के सच्चे पुजारी थे और सांस्कृतिक परंपराओं के अक्षुण्ण रखने के प्रबल पक्षधर थे। इसलिए इन सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण से वे असंतुष्ट, आन्दोलित और दुखी हो जाते थे। गुप्तजी ने सत्यं, शिवम् और सौन्दर्य की युगपत् उपासना करते हुए राष्ट्रीय भावना को बलशाली बनाया। इसलिये उनका काव्य मनोरंजन एवं व्यावसायिकता से ऊपर राष्ट्रीय भावना को पैदा करने वाला है। उनका काव्य एवं सृजन आत्माभिव्यक्ति, प्रशंसा या किसी को प्रभावित करना नहीं, अपितु जन-कल्याण एवं देशप्रेम की भावना का जगाना है। इसी कारण उनके विचार सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। किसी भी सहृदय को झकझोरने में सक्षम है। निश्चित ही मैथिलीशरण गुप्त होना अपने आम में एक घटना है, स्वतंत्रता आन्दोलन का अमूल्य दस्तावेज एवं प्रेरक कथानक है। ■

विशेष

बाल गंगाधर तिलक ने उठाई थी पूर्ण स्वराज की मांग

देश के प्रमुख नेता, समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का 1 अगस्त को निधन हो गया था। उन्होंने सबसे पहले ब्रिटिश राज से भारतीयों के लिए पूर्ण स्वराज की मांग उठाई थी। आज यानी की 1 अगस्त को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का निधन हो गया था। वह देश के प्रमुख नेता, समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी थे। बता दें कि बाल गंगाधर तिलक के नाम के आगे जो 'लोकमान्य' लगाया जाता है। यह ख्याति बाल गंगाधर ने खुद अर्जित की थी। उन्होंने ही सबसे पहले ब्रिटिश राज के दौरान पूर्ण स्वराज की मांग को उठाया था। इसी वजह से तिलक को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जनक भी कहा जाता है।

अनन्या मिश्रा

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायक बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया था। वह स्वतंत्रता सेनानी और लोकप्रिय नेता ही नहीं बल्कि इतिहास, संस्कृत, हिंदू धर्म, गणित और खगोल विज्ञान जैसे विषयों के विद्वान भी थे। तिलक का पूरा जीवन आदर्श है। आइए जानते हैं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की डेथ एनिवर्सरी के मौके पर उनके जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार: महाराष्ट्र के रत्नागिरी में 13 जुलाई 1856 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम गंगाधर रामचंद्र तिलक था। जो संस्कृत के विद्वान और शिक्षक थे। वहीं तिलक की माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। साल 1871 में तिलक का विवाह तपिबाई नामक कन्या से हुआ था। तपिबाई का विवाह के बाद नाम सत्यभामा हो गया था।

शिक्षा: तिलक के पिता संस्कृत के विद्वान थे। ऐसे में तिलक भी पढ़ाई में निपुण होने के साथ ज्ञानी थे। जब बाल गंगाधर तिलक के पिता का ट्रांसफर पूणे हुआ तो तिलक ने पूणे के एंग्लो वर्नाकुलर स्कूल से शिक्षा प्राप्त की। वहीं 16 साल की उम्र में तिलक के सिर से माता का साया उठ गया और यहीं से उनके असली संघर्ष की कहानी शुरू हुई। साल 1877 में बाल गंगाधर तिलक ने पुणे के डेक्कन कॉलेज से संस्कृत और गणित विषय की डिग्री प्राप्त की। जिसके बाद मुंबई के सरकारी कॉलेज से LLB की पढ़ाई पूरी की। तिलक आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले भारतीय युवाओं में शामिल थे।

तिलक का कॅरियर: अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद तिलक एक प्राइवेट स्कूल में अंग्रेजी और गणित के शिक्षक बन पढ़ाने लगे। लेकिन स्कूल के अन्य शिक्षकों से मतभेद के चलते साल 1880 में तिलक ने पढ़ाना छोड़ दिया। बता दें कि वह अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के आलोचक थे। ब्रिटिश विद्यार्थियों की तुलना में भारतीय विद्यार्थियों के हो रहे दोहरे व्यवहार का वह विरोध करते थे। इसके अलावा उन्होंने समाज में फैली छुआछूत के खिलाफ भी आवाज उठाई थी।

तिलक के आजादी के लिए प्रयास: इसके बाद तिलक ने भारत में शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए दक्खन में शिक्षा सोसायटी की स्थापना की। वहीं मराठी भाषा में उन्होंने मराठा दर्पण और केसरी नामक दो अखबारों की शुरूआती की, यह दोनों ही अखबार उस दौरान काफी फेमस हुए थे। तिलक ने स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बन अंग्रेजी हुकूमत का विरोध किया। साथ ही ब्रिटिश राज से भारतीयों को पूर्ण स्वराज देने की मांग की। समाचार पत्र केसरी में छपने वाले लेखों के कारण बाल गंगाधर तिलक को कई बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। अपने प्रयासों के चलते बाल गंगाधर तिलक को 'लोकमान्य' की उपाधि से नवाजा गया था।

मौत: वहीं 1 अगस्त 1920 में स्वतंत्रता सेनानी और लोकप्रिय नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सदा के लिए अपनी आंखें मूंद लीं। ■

एम.एस.एम.ई.–प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र
केन्द्रीय पादुका प्रशिक्षण संस्थान, आगरा
(सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार की संस्था)

फुटवियर क्षेत्र में एक अग्रणी प्रशिक्षण संस्थान

- **60 वर्षीय** स्थापित पुरानी संस्था
- **6000 +** छात्र, जाने माने संगठनों में कार्यरत
- इंटर्नशिप और समर्पित रोजगार सहायता
- व्यावहारिकता और रचनात्मकता पर मुख्य फोकस

कोर्स ऑफर्ड

- Diploma in Footwear Manufacture & Design (2 Years)
  (Accredited with Textile Institute, UK & Moderation by Leicester College UK)
- PG Diploma in Footwear Technology (1.5 Years)
- Advanced Certificate in Footwear Design and Product Development (1 Year)
- Advanced Certificate in Footwear Manufacturing Technology (1 Year)
- Certificate in Footwear Design & Production (6 Months)
- Certificate in SHOE CAD (3 Months)

मूल गतिविधियां
- मानव संसाधन विकास
- सामान्य सुविधा सेवाएँ
- परामर्श सेवाएँ एवं तकनीकी सहायता

प्रशिक्षण सम्बद्धता/समन्वय
टैक्सटाइल इन्स्टीट्यूट यू.के., लीसेस्टर कॉलेज यू.के. से सम्बद्ध और साटरा टेक्नॉलॉजी सेंटर, यू.के. के सदस्य

NSQF स्वीकृत पाठ्यक्रम
उद्योग की आवश्यकता के अनुरूप गठित प्रयोगात्मक कौशल विकास प्रशिक्षण

शू डिजाइन स्टूडियो
2डी/3डी डिजाइन और सम्पूर्ण डिजाइन समाधान समायोजन के लिए नवीनतम शू-कैड/ कैम सॉफ्टवेयर की सुविधा

हमारे कुछ प्रमुख नियोक्ता
MIRZA, ALPINE (estd. 1986), LIBERTY, action, RELAXO, KIWI, CONDOR, VKC pride, ALBERTO TORRESI (Virola Shoes pvt Ltd), WASAN'S, dawar, Bolant, JQR

Scan QR code for Prospectus

Scan QR code YouTube Channel

- अत्याधुनिक मशीनरी और उपकरणों से सुसज्जित
- योग्य और अनुभवी संकाय और सहायक कर्मचारियों द्वारा प्रदान प्रशिक्षण
- फुटवियर व्यापार से संबंधित पुस्तकों के साथ पुस्तकालय की सुविधा
- छात्र व छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास की सुविधा
- छात्रों के रचनात्मक उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए ई-मार्केटिंग पोर्टल

केंद्रीय पादुका प्रशिक्षण संस्थान, सी- 41 व 42, साईट-सी, औधौगिक क्षेत्र, सिकंदरा, आगरा- 282007 (उ0प्र0)
Email Id: info@cftiagra.org.in Website: www.cftiagra.org.in
सम्पर्क करें :9411204684, 9411029121, 0562-2642005

कितना जिएंगे इससे ज्यादा यह मायने रखता है कि

किस तरह का जीवन जिएंगे?

जिन्दगी तो सभी जीते हैं, लेकिन यहां बात यह मायने नहीं रखती कि आप कितना जीते हैं, बल्कि लोग इसी बात को ध्यान में रखते हैं कि आप किस तरह और कैसे जीते हैं। जीवन में आधा दुख तो इसलिए उठाते फिरते हैं कि हम समझ ही नहीं पाते हैं कि सच में हम क्या हैं?

ललित गर्ग

उतार-चढ़ाव, हर्ष-विषाद, सुख-दुःख हर इंसान के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, लेकिन फिर भी इन जटिलताओं के बीच एक सपना एवं जिजीविषा जरूर होनी चाहिए जो आपको हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहे। जीवन ऐसे जीना चाहिए जैसे जिंदगी का आखिरी दिन हो। भले ही हमारी जिंदगी उतार-चढ़ावों से भरी हो फिर भी हमें बढ़िया और नेक काम करते हुए जीवन के पल-पल को उत्साह एवं उमंग से जीना चाहिए। लेकिन हमारी बढ़िया या नेक काम करने की इच्छा अधूरी ही रहती है क्योंकि अक्सर जब हम जिंदगी के बुरे दौर से गुजरते हैं, तब उससे निकलने और जब अच्छे दौर में होते हैं, तब उस स्थिति को बरकरार रखने में जिन्दगी बिता देते है। हर इंसान के जीवन में निराशा एवं असंतुष्टि पसरी है। आंकड़े बताते हैं कि करीब 70 फीसदी लोग अपनी मौजूदा नौकरी या काम से संतुष्ट नहीं हैं और करीब 53 फीसदी लोग किसी भी रूप में खुश नहीं हैं। यह एक चिंताजनक बात है। जब हम दिल से प्रसन्न नहीं होते तो हमारे अंदर से आगे बढ़ने की चाह खत्म होने लगती है। और फिर धीरे-धीरे तनाव बढ़ने लगता है, जो जीवन को नीरस और उबाऊ बना देता है। जिन्दगी तो सभी जीते हैं, लेकिन यहां बात यह मायने नहीं रखती कि आप कितना जीते हैं, बल्कि लोग इसी बात को ध्यान में रखते हैं कि आप किस तरह और कैसे जीते हैं। जीवन में आधा दुख तो इसलिए उठाते फिरते हैं कि हम समझ ही नहीं पाते हैं कि सच में हम क्या हैं? क्या हम वही है जो स्वयं को समझते हैं? या हम वो हैं जो लोग समझते हैं। हमारे संकल्प और हमारे आदर्श सांसारिक जीवन के बंधनों में बंधे रहने के बजाय उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बढ़ना चाहते हैं, लेकिन मन की इच्छाएं इसके विपरीत होती हैं। इन दोनों में लगातार संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में जीत अक्सर मन की इच्छाएं की ही होती है। इसका कारण यह है कि इच्छाओं की मांगें पूरी करने में मनुष्य को तुरंत सुख और आनंद मिलता है। इसके विपरीत आदर्श को जीने या आदर्श की अपेक्षाओं को पूरा करने में मनुष्य को शुरूआती दौर में अपने सुख और आनंद का बलिदान करना होता है। इसलिए लोग सामान्यतया ऐसा करने से बचते हैं। अगर यही स्थिति लंबे समय तक बनी रहे और आदर्श की अपेक्षाओं को दबाया जाता रहे, तो धीरे-धीरे आदर्श की उड़ान समाप्त होने लगती है। महान और आदर्श काम करने के लिए अक्ल से ज्यादा दिलेरी की जरूरत होती है और यह दिलेरी लुप्तप्राय होती जा रही है। आज लगभग देश और दुनिया इसी आदर्शहीनता के स्थिति से ही मुखातिब है। सीधे-सीधे आसान रास्तों पर चलते हुए भी कोई भटकता रह जाता है। कुछ भटकते हुए भी मंजिल की ओर ही कदम बढ़ा रहे होते हैं। दरअसल, जब भीतर और बाहर का मन एकरूप होता है तो भटकना बेचैन नहीं करता। भरोसे और भीतर की ऊर्जा से जुड़े कदम आप ही राह तलाश लेते हैं। ओशो कहते हैं, 'भटकता वही है, जो अपने भीतर की यात्रा करने से डरता है।' जब आपके अंदर किसी काम को लेकर जुनून होता है तो कभी-कभी वह जुनून ही जीवन के उद्देश्य में तब्दील होने लगता है। जीवन कभी एक सा नहीं चलता। इसलिए यह जरूरी भी नहीं कि बेहद प्रारंभिक अवस्था में ही आपको अपने जीवन का उद्देश्य मिल जाए। जीवन में अनेक पड़ाव आते हैं, जो अलग-अलग अनुभव देते हैं। इसलिए कभी एक बेहद तनाव वाले पड़ाव में लगे कि किसी तरीके का बदलाव आपके जीवन को सरल और खुशनुमा बना सकता है तो उसे आप अपना उद्देश्य बना लीजिए। लेकिन यह कोई ऐसा कार्य नहीं है, जिसके बारे में आप बैठकर अलग से मंथन करें। यह हमारा मन तय करता है कि उसे किस कार्य को करने से खुशी मिलती है। पर दिमाग के साथ दिल का तालमेल बिठाना न भूलें और जहां लगे कि दिल और दिमाग मिल गए हैं तो समझ जाएं कि आपको अपने जीवन का उद्देश्य मिल गया है। ■

संतुष्टि और आनंद की अवस्था में व्यक्ति रहता है तनावमुक्त

आप या तो इस बात पर सिर धुन सकते हैं कि गुलाब में कांटे हैं या इस पर खुश हो सकते हैं कि कांटों से भी गुलाब खिलते हैं। जब भी हम ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करते हैं, किसी की मदद करते हैं अथवा कोई अच्छा कार्य करते हैं, अपने जीवन के कार्यों को अंजाम तक पहुंचाते हैं तो उससे अपने भीतर हम अपार संतोष महसूस करते हैं। तब वही भाव हमारे चेहरे और विचारों पर भी झलकने लगता है। इससे हमारे पूरे व्यक्तित्व में एक सकारात्मक परिवर्तन होता है। संतुष्टि और आनंद की अवस्था में व्यक्ति तनावमुक्त रहता है और इसलिए स्वस्थ रहता है। यह अवस्था मनुष्य के अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ एक सफल एवं सार्थक जीवन की परिचायक है।

जिंदगी का कोई लम्हा मामूली नहीं होता

जिंदगी का कोई लम्हा मामूली नहीं होता, हर पल वह हमारे लिए कुछ-न-कुछ नया पेश करता रहता है- जब हमारी ऐसी सोच बनती है तभी हम अपने आप से रूबरू होते। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार के बिना हमारी लक्ष्य की तलाश और तैयारी दोनों अधूरी रह जाती है। स्वयं की शक्ति और ईश्वर की भक्ति भी नाकाम सिद्ध होती है और यही कारण है कि जीने की हर दिशा में हम औरों के मोहताज बनते हैं, औरों का हाथ थामते हैं, उनके पदचिन्ह खोजते हैं। अक्सर आधे-अधूरे मन और निष्ठा से हम कोई भी कार्य करते हैं तो उसमें सफलता संदिग्ध हो जाती है। सफलता या ऊंचाइयों आप तभी पा सकते हैं, जब अपना काम करते हुए इस बात को नजरअंदाज कर दें कि इसकी वाहवाही किसे मिलेगी? हम तो मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च में जाकर भी अपने धनबल, बाहुबल या सत्ताबल के आधार पर लम्बी-लम्बी लाइनों के बजाय वीआईपी दर्शन करके लौट जाते हैं। क्या हमारा ईश्वर से मिलने का यह तरीका परिणामकारी हो सकता है? हम हमारी आस्था या भगवान के प्रति निष्ठा को सस्ता न बनने दें। हमें अपना हर सुख इस तरह भोगना चाहिए, जैसे हम सौ साल तक जीयेंगे, पर ईश्वर से रोजाना प्रार्थना एवं अपना काम ऐसे करना चाहिए, जैसे कल हमारी जिंदगी का आखिरी दिन हो। जब हम ईश्वर के प्रति और अपने उद्देश्यों-कार्यों के प्रति इतने पवित्र, जुझारू एवं परोपकारी बनकर प्रस्तुत होंगे तभी जीवन को सार्थकता तक पहुंचा सकेंगे। वैसे भी अमीर वह नहीं है, जिसके पास सबसे ज्यादा है, बल्कि वह है, जिसे और कुछ नहीं चाहिए। सच्चाई तो यही है कि जिसे और कुछ नहीं चाहिए वही सच्चे रूप में ईश्वर से साक्षात्कार की पात्रता अर्जित करता है।

एक अनुमान के मुताबिक, वर्तमान में भारत के

25 फीसद स्कूली बच्चे उन स्कूलों में पढ़ाई शुरू करने लगे हैं, जहां पर मातृभाषा की बजाय शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इन बच्चों को शिक्षा का आनंद आ ही नहीं सकता।

क्यों जरूरी है बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देना

अभी कुछ दिन पहले ही केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसआई) ने एक बेहद जरूरी फैसला लिया। इसके तहत अब सीबीएसई स्कूलों को प्री-प्राइमरी से 12वीं कक्षा तक क्षेत्रीय व मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने का विकल्प देगी। अब तक, राज्य बोर्ड स्कूलों के विपरीत, सीबीएसई स्कूलों में केवल अंग्रेजी और हिंदी माध्यम ही शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प था। सीबीएसई ने अपने सभी संबंधित स्कूलों से कहा है कि जहाँ तक संभव हो सके यथाशीघ्र तो पांचवीं कक्षा तक क्षेत्रीय भाषा में या फिर बच्चे की मातृभाषा में पढ़ाई के विकल्प उपलब्ध करायें । बेशक, यह एक युगांतकारी फैसला है। हरेक बच्चे के पास यह विकल्प होना ही चाहिए कि वह अपनी मातृभाषा में स्कूली शिक्षा ग्रहण कर सके। हां, उसे विषय के रूप में कोई एक भाषा या एकाधिक भाषाएं पढ़ाई जा सकती हैं।

हरिश्चन्द्र शर्मा

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने भी अपनी स्कूली शिक्षा क्रमशः अपनी मातृभाषाओं हिन्दी और मराठी में ही ली थी। ये दोनों आगे चलकर अंग्रेजी में भी महारत हासिल करने में सफल रहे। इन दोनों से बड़ा ज्ञानी कौन होगा। यानी आप प्राइमरी तक अपनी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने के बाद बेहतर ढंग से आगे बढ़ सकते हैं। टाटा समूह के चेयरमेन नटराजन चंद्रशेखरन ने भी अपनी स्कूली शिक्षा अपनी मातृभाषा तमिल में ही ली थी। उन्होंने स्कूल के बाद इंजीनियरिंग की डिग्री रीजनल इंजीनयरिंग कालेज (आरईसी), त्रिचि से हासिल। यह जानकारी अपने आप में महत्वपूर्ण इस दृष्टि से है कि तमिल भाषा से स्कूली शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी ने आगे

चलकर अंग्रेजी में भी महारत हासिल किया और करियर के शिखर को छुआ। बेशक, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने की अंधी दौड़ के चलते अधिकतर बच्चे असली शिक्षा को पाने के आनंद से वंचित रह जाते हैं। असली शिक्षा का आनंद तो आप तब ही पा सकते हैं,जब आपने कम से कम पांचवीं तक की शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही हासिल की हो। विभिन्न अध्ययनों से प्रमाणित हो चुका है कि जो बच्चे मातृभाषा में स्कूली शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे अधिक सीखते हैं। अंग्रेजी का विरोध नहीं है या अंग्रेजी शिक्षा या अध्ययन को लेकर कोई आपत्ति भी नहीं है। पर भारत को अपनी भाषाएं, चाहे हिन्दी, तमिल, बांग्ला या कोई अन्य, में प्राइमरी स्कूली शिक्षा देने के संबंध में तो बहुत पहले ही फैसला ले लेना चाहिए था। क्योंकि उसके बिना बच्चों को सही शिक्षा तो नहीं दी जा सकती। हां, शिक्षा के नाम पर प्रमाणपत्र जरूर बांटे जा सकते हैं। याद रखें कि शिक्षा का अर्थ है ज्ञान। बच्चे को ज्ञान कहां मिला? हम तो उन्हें नौकरी पाने के लिए तैयार कर रहे हैं। अभी हमारे यहां पर दुर्भाग्यवश स्कूली या कॉलेज शिक्षा का अर्थ नौकरी पाने से अधिक कुछ भी नहीं है। आजादी के बाद हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के उत्थान का जो सपना देखा गया था वह सपना दस्तावेजों और सरकारी कार्यक्रमों में ही दबकर रह गया था। हम सब जानते हैं कि सारे देश में अंग्रेजी के माध्यम से स्कूली शिक्षा लेने- देने की महामारी ने अखिल भारतीय स्वरूप ले लिया है। जम्मू-कश्मीर तथा नगालैंड ने अपने सभी स्कूलों में शिक्षा का एकमात्र माध्यम अंग्रेजी ही कर दिया है। महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडू समेत कुछ और अन्य राज्यों में छात्रों को विकल्प दिए जा रहे हैं कि वे चाहें तो अपनी पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी रख सकते हैं। यानी बच्चों को उनकी मातृभाषा से दूर करने की भरपूर कोशिशें हुईं। मुझे मेरे एक मित्र, जो राजधानी के मशहूर स्कूल के प्रधानाचार्य रहे हैं, बता रहे थे कि जब वे हरियाणा के करनाल जिले के एक ग्रामीण इलाके में पढ़ा रहे थे तो उन्हें एक नया अनुभव हुआ। वहां पर माता-पिता के साथ बच्चे खुशी-खुशी स्कूल में दाखिला लेने आते। वे नई किताबें और कॉपियाँ लेकर स्कूल आने लगते। लेकिन, स्कूल में कुछ दिन बिताने के बाद उनका स्कूल से मोहभंग होने लगता। वे कहने लगते कि उन्हें तो पढ़ना आता ही नहीं। वे धीरे-धीरे चुप रहने लगते कक्षा में। इसकी वजह यह थी कि उन्हें पढ़ाया जाता था अंग्रेजी में। उन्हें उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता तो शायद उनका स्कूल और पढ़ाई से मोहभंग न होता। इस स्थिति के कारण अनेक बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ भी देता है। विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा देना मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक रूप से वांछनीय है। क्योंकि, विद्यालय आने पर बच्चे यदि अपनी भाषा में पढ़ते हैं, तो वे विद्यालय में आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं और यदि उन्हें सब कुछ उन्हीं की भाषा में पढ़ाया जाता है, तो उनके लिए सारी चीजों को समझना बेहद आसान हो जाता है। समूचे संसार के भाषा-वैज्ञानिकों, अध्यापकों और शिक्षा से जुड़े अन्य जानकारों की राय है कि बच्चा सबसे आराम से अपनी भाषा में पढ़ाए जाने पर ही शिक्षा ग्रहण करता है। जैसे ही उसे किसी अन्य भाषा में पढाया जाने लगता है, तब ही गड़बड़ चालू हो जाती है पर हमारे देश में तो यही होता चला आ रहा है। कई अध्ययनों से साबित हो चुका है कि जो बच्चे अपनी मातृभाषा में प्राइमरी से पढ़ना चालू करते हैं उनके लिए शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ने की संभावनाएं अधिक प्रबल रहती हैं। यानी बच्चे जिस भाषा को घर में अपने अभिभावकों, भाई-बहनों, मित्रों के साथ बोलते हैं, उसमें पढ़ने में उन्हें अधिक सुविधा रहती है। अफसोस कि हमारे देश के एक बड़े वर्ग ने मान लिया है कि अंग्रेजी जाने-समझे बिना गति नहीं है। इसके चलते हर स्तर पर इसे बढ़ावा देने की मानसिकता नजर आती है। एक तरह से यह सोच घर कर गई है कि अंग्रेजी जाने बिना दुनिया अधूरी-अधकचरी है।

बेशक, इसी मानसिकता के चलते हमारे समाज का एक बड़ा हिस्सा अपनी आय का एक बड़ा भाग अपने बच्चों को कथित अंग्रेजी स्कूलों में भेजने पर खर्च करने लगा है। एक अनुमान के मुताबिक, वर्तमान में भारत के 25 फीसद स्कूली बच्चे उन स्कूलों में पढ़ाई शुरू करने लगे हैं, जहां पर मातृभाषा की बजाय शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इन बच्चों को शिक्षा का आनंद आ ही नहीं सकता। और इनमें से अनेक अंग्रेजी की अनिवार्यता का चलते स्कूलों को छोड़ देते हैं। खैर, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के ताजा फैसले से एक उम्मीद अवश्य जागी है कि चलो हमने भी भारत की अपनी भाषाओं को सम्मान देना भले ही देर से चालू तो किया। ■

जी-20 सम्मेलन

भारत की प्रतिष्ठा में लगेंगे चार चांद

इसके साथ ही कहा जा सकता है कि

1956

से तमाम शिखर सम्मेलनों और अहम कार्यक्रमों की मेजबानी करने वाले विज्ञान भवन को अब कुछ आराम मिलेगा।

अब जी-20 शिखर सम्मेलन के मुख्य आयोजन में दो महीने से भी कम वक्त बचा हुआ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रगति मैदान में पुनर्विकसित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र (आईईसीसी) के उद्घाटन करने के साथ ही अब साफ हो गया है कि शिखर सम्मेलन के लिए भारत तैयार है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन समेत जी- 20 देशों के बीस राष्ट्राध्यक्ष एक साथ राजधानी नई दिल्ली में आ रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी-20 के प्रमुख की हैसियत से बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और यूएई आदि मित्र देशों को अतिथि देशों के रूप में आमंत्रित कर सकते हैं। तो अब यह बहुत साफ हो गया है कि नई दिल्ली में होने वाला जी-20 शिखर सम्मेलन अब तक का सबसे विशाल सम्मेलन होगा।

आर.के. सिन्हा

इसके साथ ही कहा जा सकता है कि 1956 से तमाम शिखर सम्मेलनों और अहम कार्यक्रमों की मेजबानी करने वाले विज्ञान भवन को अब कुछ 'आराम' मिलेगा। इसी में 1983 में गुट निरपेक्ष सम्मेलन हुआ था। उस शिखर सम्मेलन को आयोजित हुए अब चार दशक पूरे हो रहे हैं। इस दौरान भारत पूरी तरह बदल चुका है। अब भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक शक्ति बन चुका है। कुछ समय पहले भारत ब्रिटेन को पछाड़कर विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी की ही अर्थव्यवस्था आज के दिन भारत से बड़ी है। हमारी प्रगति की रफ़्तार को देखकर यह कहा जा सकता है कि हम जल्दी ही जापान और जर्मनी को भी मात दे देंगे। यानी 1983 और 2023 वाला भारत बहुत ही अलग है। भारत की दुनिया में इस वक्त जो साख है, उसे देखकर यह कह सकते हैं, कि उसी के अनुरूप का सम्मलेन का मेन कॉम्पलेक्स जी-20 के लिए तैयार किया गया है। महत्वपूर्ण है कि लगभग 123 एकड़ क्षेत्र में फैले आईईसीसी कॉम्प्लेक्स को भारत के सबसे बड़े एमआईसीई (बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनियां) गंतव्य के रूप में विकसित किया गया है। ये दुनिया के शीर्ष प्रदर्शनी और सम्मेलन परिसरों में जल्द ही अपनी जगह बना लेगा। भारत को पिछले साल 1 दिसंबर को जी-20 की अध्यक्षता मिली थी। भारत आगामी 30 नवंबर, 2023 तक इस मंच की अध्यक्षता करेगा। भारत को जैसे ही जी-20 की अध्यक्षता मिली, तब ही से देशभर में बैठकों और छोटे सम्मेलनों के दौर शुरू गए। ये बैठकें राजधानी दिल्ली के अलावा देश के अन्य प्रमुख शहरों और पर्यटन स्थलों पर हुईं। इनमें करीब 200 बैठकें हुईं जिनमें जी-20 देशों के नुमाइंदों ने भाग लिया। भारत की जी-20 की अध्यक्षता कई मायनों में ऐतिहासिक होने जा रही है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भारत ने महज बैठकों का संचालन कर इतिश्री नहीं की है, बल्कि उसने बैठकों से इतर अन्य कई गतिविधियों पर भी जोर दिया है। हम जानते हैं कि विविधताओं से भरे हमारे देश के हर राज्य की अपनी एक आभा है, अपना एक सौंदर्य है, अपनी एक संस्कृति है और अपना खास खानपान है। भारत ने इसी विविधता को बड़ी खूबसूरती से विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। अभी तक जिस भी राज्य या शहर में जी20 से जुड़ी बैठकें आयोजित हुई है, वहां जरूरी विषयों पर विचार-विमर्श से इतरविदेशी मेहमानों को स्थानीय भ्रमण कराते हुए हमारी प्राचीन वास्तुकला का अनुभव भी कराया गया है। इसके अलावा बैठक स्थलों पर नुमाइंदों को स्थानीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक दिखाने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ है। भारत ने विश्व स्तर पर अपनी प्राचीन और समृद्ध संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए जी-20 की मेजबानी को बेहतरीन तरीके से भुनाया है। जी-20 देशों के प्रतिनिधि बैठकों के लिए देश के जिस भी हिस्से का दौरा करते हैं, उन्हें स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं। अतिथि देवो भवः की भावना से ओत-प्रोत भारत की मेहमान नवाजी हमेशा के लिए विदेशी मेहमानों के दिल में बस गई है। ऐसे कई मौके आए हैं, जब भारतीय और विदेशी मीडिया ने जी20 प्रतिनिधियों से उनका अनुभव जानने का प्रयास किया है तो उनका स्पष्ट शब्दों में यही जवाब रहा है कि उन्होंने भारत जैसी मेहमाननवाजी कहीं नहीं देखी। कुल मिलाकर भारत ने अपनी मेजबानी को ऐतिहासिक बनाने का कोई भी मौका नहीं गंवाया है। यह याद रखा जाए कि भारत के लिए इस बड़े अंतरराष्ट्रीय मंच की अध्यक्षता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा है कि हमारे देश में हुई सभी महत्वपूर्ण जी-20 बैठकों के ठोस नतीजे निकले हैं, जिनसे जी20 की साझा प्राथमिकताओं पर आम सहमति को बढ़ावा मिला है। आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य और वैश्विक समावेशी विकास की दिशा में भारत के प्रयास रंग लाए हैं और उसकी कई सिफारिशों पर सदस्यों देशों के बीच आम सहमति बनी है।

1955 में मेजबानी भारत को मिलने के बाद भारत सरकार ने विज्ञान भवन का निर्माण करवाया था। विज्ञान भवन का डिजाइन तैयार किया था प्रसिद्ध आर्किटेक्ट आर.ए.गहलोते ने। वे सीपीडब्ल्यूडी से जुड़े थे। उन्होंने ही कृषि भवन और उद्योग भवन का भी डिजाइन तैयार किया था। यहीं पर 1983 का निर्गुट सम्मेलन हुआ था। उसमें सौ देशों के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री पधारे थे।

इसे कई उदाहरणों से समझा जा सकता है, जैसे जी-20 सदस्यों ने जीवाश्म ईंधन की खपत में कटौती करके अगले 10 वर्षों में होने वाले तकनीकी नवाचारों को साझा करने पर सहमति व्यक्त की है। विदेश मंत्रियों की बैठक में बहुपक्षीय सुधारों, विकास सहयोग, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद का मुकाबला, नए उभरते खतरों, वैश्विक कौशल मैपिंग और आपदा जोखिम में कमी लाने पर सहमति बनी है। इसके अलावा साझा प्राथमिकताओं में बहुपक्षीय विकास बैंकों में सुधार और ऋण उपायों पर एक विशेषज्ञ समूह की स्थापना शामिल है। एक बार फिर चर्चा विज्ञान भवन की। विज्ञान भवन की दशकों तक पहचान बड़े अहम सरकारी सम्मेलनों, समारोहों और अन्य कार्यक्रमों के आयोजन स्थल के रूप में ही होती रही है। स्वतंत्रता मिलने के बाद पहली पहली बार 1956 में भारत मेजबानी कर रह था यूनेस्को सम्मेलन की। इसकी 1955 में मेजबानी भारत को मिलने के बाद भारत सरकार ने विज्ञान भवन का निर्माण करवाया था। विज्ञान भवन का डिजाइन तैयार किया था प्रसिद्ध आर्किटेक्ट आर.ए.गहलोते ने। वे सीपीडब्ल्यूडी से जुड़े थे। उन्होंने ही कृषि भवन और उद्योग भवन का भी डिजाइन तैयार किया था। यहीं पर 1983 का निर्गुट सम्मेलन हुआ था। उसमें सौ देशों के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री पधारे थे। इसमें लंबे समय तक प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन भी हुए। पर कुछ साल पहले यहां पर सरकार ने आसियान सम्मेलन का आयोजन न करके संदेश दे दिया था कि विज्ञान भवन का स्वर्णिम युग निकल चुका है। बहरहाल, आगामी जी-20 शिखर सम्मेलन अगले कई दशकों तक याद रखा जाएगा और इससे भारत की विश्व में प्रतिष्ठा में चार चांद लगेंगे। ■

व्हाइट हाउस की रेस

3 भारतवंशी विशेष– निक्की, विवेक के बाद हर्ष वर्धन अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल

आकाशवाणी समाचार के अनुसार, भारतीय अप्रवासी माता-पिता से जन्मे सिंह ने 2009 में न्यू जर्सी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की है।

अभिनय आकाश

अमेरिका में भारतीय मूल के इंजीनियर हर्षवर्धन सिंह ने राष्ट्रपति पद के लिए अपनी दावेदारी की घोषणा की है। वह निक्की हेली और विवेक रामास्वामी के बाद भारतीय मूल के तीसरे व्यक्ति बन गए हैं, जिन्होंने 2024 में अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के लिए रिपब्लिकन पार्टी में अपनी दावेदारी पेश की है। उन्होंने ट्विटर पर एक विडियो संदेश में कहा कि वह आजीवन रिपब्लिकन और अमेरिकी हितों को तवज्जो देने वाला शख्स रहे हैं। उन्होंने न्यू जर्सी रिपब्लिकन पार्टी के एक रूढ़िवादी विंग को बहाल करने के लिए काम किया। सिंह के अनुसार, अमेरिकियों को बिग टेक और बिग फार्मा दोनों से गंभीर खतरों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, अमेरिकी पारिवारिक मूल्यों, माता-पिता के अधिकारों और खुली बहस पर चौतरफा हमला हो रहा है।

कौन हैं हर्ष वर्धन सिंह ?

आकाशवाणी समाचार के अनुसार, भारतीय अप्रवासी माता-पिता से जन्मे सिंह ने 2009 में न्यू जर्सी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की है। सिंह ने खुद को एकमात्र प्योर ब्लड कैंडिडेट के रूप में संदर्भित किया है। उन्होंने कोविड-19 वैक्सीन लेने से इनकार कर दिया था। उन्हें स्टेरॉयड पर ट्रम्प के रूप में वर्णित किया गया है। उनकी वेबसाइट पर एक प्रोफाइल के अनुसार, उन्होंने एक इंजीनियर और संघीय ठेकेदार के रूप में काम किया है। 2017 में गवर्नर पद के उम्मीदवार के रूप में न्यू जर्सी की राजनीति में प्रवेश करते हुए सिंह केवल 9.9 प्रतिशत वोट शेयर हासिल कर दौड़ में तीसरे स्थान पर रहे। हालांकि, अन्य रिपब्लिकन उम्मीदवारों की तुलना में, उनकी घोषणा देर से हुई है और अब तक सीमित मीडिया कवरेज के साथ, उन्हें अभी भी राष्ट्रीय मान्यता का समान स्तर प्राप्त नहीं है। सिंह भारतीय-अमेरिकी समुदाय की बढ़ती राजनीतिक आकांक्षाओं की व्यापक प्रवृत्ति का हिस्सा हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पिछले महीने अमेरिका की अपनी राजकीय यात्रा में संयुक्त राज्य कांग्रेस की संयुक्त बैठक में अपने भाषण में 'समोसा कॉकस' का उल्लेख किया था। इस शब्द का प्रयोग कभी-कभी कांग्रेस में भारतीय मूल के अमेरिकियों के अनौपचारिक समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। पीएम मोदी ने कमला हैरिस का जिक्र करते हुए कहा था कि यहां लाखों लोग हैं, जिनकी जड़ें भारत में हैं। उनमें से कुछ इस कक्ष में शान से बैठते हैं। मेरे पीछे एक है, जिसने इतिहास रच दिया है! वर्तमान में, भारतीय मूल के पांच अमेरिकी प्रतिनिधि हैं। छठी, उपराष्ट्रपति हैरिस, सीनेट की नेता हैं। सभी डेमोक्रेट हैं। फरवरी 2023 की न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश भारतीय अमेरिकी मतदाता डेमोक्रेट हैं। ऐसे में इस बात को लेकर मंथन हो रहा है कि रिपब्लिकन भारतीय मूल के उम्मीदवार उनका कितना समर्थन जुटा पाएंगे। अतीत में जब भारतीय अमेरिकी रिपब्लिकन के रूप में चुनाव लड़े थे, तो उन्होंने शायद ही कभी अपने पारिवारिक इतिहास के बारे में ज्यादा बात की हो। सिंह ने बार-बार अपने उपनाम का अर्थ शेर शब्द बताया है, उनके अभियान चिन्ह में भी शेर का सिर दिखाया गया है।

ट्रंप के फैन हैं ?

हर्ष वर्धन सिंह ने कहा कि अमेरिकी मूल्यों को बहाल करने के लिए हमें मजबूत नेतृत्व की जरूरत है। इसीलिए मैंने 2024 के चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी से नामांकन लेने का फैसला किया है। डोनाल्ड ट्रंप की प्रशंसा करते हुए सिंह ने कहा कि अमेरिका को और अधिक ऐसे लोगों की जरूरत है। सिंह ने खुद को राष्ट्रपति के लिए एकमात्र सही उम्मीदवार बताते हुए कहा कि ये बीते युग के पुराने राजनेताओं से आगे बढ़ने का समय है।

एक अन्य भारतवंशी रामास्वामी के बारे में जानें

37 वर्षीय रामास्वामी के माता-पिता केरल से संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए थे और ओहियो में एक जनरल इलेक्ट्रिक प्लांट में काम करते थे। वह रिपब्लिकन प्रेसिडेंशियल प्राइमरी में प्रवेश करने वाले दूसरे भारतीय-अमेरिकी हैं। इस महीने की शुरूआत में दक्षिण कैरोलिना के दो-कार्यकाल की पूर्व गवर्नर और संयुक्त राष्ट्र में पूर्व अमेरिकी राजदूत हेली ने अपने राष्ट्रपति अभियान की घोषणा की थी। उन्होंने घोषणा की कि वह रिपब्लिकन पार्टी के नामांकन के लिए अपने पूर्व बॉस और पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ चुनाव लड़ेंगी।

हर्ष वर्धन सिंह की चुनावी संभावनाएं क्या हैं ?

उनकी राजनीतिक यात्रा पर गौर करें तो साल 2017 और 2021 में न्यू जर्सी के गवर्नर के लिए रिपब्लिकन पार्टी के नामांकन, 2018 में हाउस सीट और 2020 में सीनेट की स्थिति को सुरक्षित करने के पिछले प्रयास शामिल हैं। हालांकि वह उन प्रयासों में असफल रहे। गवर्नर पद के लिए अपनी उम्मीदवार के दौरान, सिंह ने खुद को ट्रम्प के साथ निकटता से जुड़े एक अधिक रूढ़िवादी विकल्प के रूप में स्थापित किया। हालाँकि, वह अंततः तीसरे स्थान पर आये। ओपिनियन पोल विश्लेषण और राजनीति पर ध्यान केंद्रित करने वाली अमेरिकी वेबसाइट फाइव थर्टीएट के अनुसार, जुलाई 2023 के अंत तक, ट्रम्प रिपब्लिकन मतदाताओं के बीच सबसे आगे थे और लगभग 52 प्रतिशत रिपब्लिकन समर्थक उनके पक्ष में थे। ट्रम्प के सहयोगी से प्रतिद्वंद्वी बने फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस लगभग 15 प्रतिशत वोट के साथ दूसरे स्थान पर थे। रामास्वामी 6.8 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर रहे। इसलिए, सिंह एक दूरदर्शी उम्मीदवार हैं।

राष्ट्रपति चुनाव के लिए रिपब्लिकन उम्मीदवार का चयन कब होगा ?

गौरतलब है कि रिपब्लिकन पार्टी के नामांकन की दौड़ में ट्रंप भी शामिल हैं, जो कानूनी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद प्रमुख दावेदार बने हुए हैं। 15 से 18 जुलाई, 2024 तक मिल्वौकी, विस्कॉन्सिन में होने वाला रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन, पार्टी के अगले राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को औपचारिक रूप से चुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पार्टी के अन्य सदस्य पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार के लिए अपनी प्राथमिकता में मतदान करेंगे। प्रतिद्वंद्वी डेमोक्रेटिक पार्टी के लिए एक समान प्रणाली मौजूद है, हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन के दोबारा चुनाव लड़ने के फैसले के साथ, किसी नए उम्मीदवार के विजयी होने की संभावना नहीं है।

निक्की हेली कौन हैं

दक्षिण कैरोलिना की पूर्व गवर्नर निक्की हेली ने फरवरी के महीने में ट्विटर पर 2024 रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के नामांकन के लिए अपने एक बार के बॉस को चुनौती दी। ट्रंप के शासन में संयुक्त राष्ट्र के पूर्व राजदूत ने वीडियो में कहा, मैं निक्की हेली हूं और मैं राष्ट्रपति पद के लिए दौड़ में हूं। हेली ने अपने अभियान की घोषणा करते हुए एक वीडियो में कहा कि हमारी सीमा को सुरक्षित करने और हमारे देश, हमारे गौरव और हमारे उद्देश्य को मजबूत करने के लिए यह नई पीढ़ी के नेतृत्व का समय है। निक्की हेली 2010 में दक्षिण कैरोलिना की पहली महिला और एशियाई गवर्नर बनीं और 2014 में पुनः चुनाव जीता। दक्षिण कैरोलिना की गवर्नर बनने से पहले, उन्होंने दक्षिण कैरोलिना विधायिका में छह साल बिताए। गवर्नर के रूप में सबसे उल्लेखनीय कदमों में से एक में हेली ने 2015 में एक बिल पर हस्ताक्षर किए, जिसमें नौ काले उपासकों को एक गोरे सर्वोच्चतावादी द्वारा चर्च में मारे जाने के बाद राज्य के मैदान से कॉन्फेडरेट ध्वज को हटाने का आदेश दिया गया था। हेली ने 2016 में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को रिपब्लिकन प्रतिक्रिया भी दी थी और आव्रजन पर चर्चा की थी। निक्की हेली का जन्म पंजाब के एक प्रवासी परिवार में हुआ था। निमरत रंधावा यानी निक्की के माता-पिता कभी अमेरिका गए फिर वहीं बस गए। निक्की के पिता अजीत सिंह रंधावा पंजाब के तरनतारन के रहने वाले थे। लेकिन साल 1954 के बाद वो अमृतसर में बस गए। निक्की का विवाह माइकल हेली से हुआ है। ■

दुनिया को महाविनाश से बचाने को

रूस-यूक्रेन युद्ध रोकना होगा

रूस-यूक्रेन युद्ध से हो रहे और होने वाले मानव जाति को महाविनाश से बचाने के लिए अभी रशिया-अफ्रीका फोरम प्रयास कर रहा है, आज जबकि इस युद्ध को रूकवाने में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका काकोई महत्व नहीं, ऐसे में इस युद्ध को रूकवाने में पूरी दुनिया को आगे आना चाहिए। सबको अपने प्रयास करने चाहिए। डेढ़ साल से चल रहा ये युद्ध किसी भी समय परमाणु हमले की जद में आ सकता है। इस युद्ध में हिरोशिमा-नागासाकी के बाद फिर से मानवजाति के महाविनाश की कहानी लिखी जा सकती है। इसकी खास बात ये होगी कि इस बार महाविनाश हिरोशिमा नागासाकी से कई गुना भारी होगा, क्योंकि अब परमाणु बमों की क्षमता पहले से बहुत अधिक है।

अशोक मधुप

फरवरी 2022 में रूस-यूक्रेन जंग के शुरू होने पर लगा था कि लड़ाई इकतरफा है। रूस के सामने यूक्रेन नहीं टिक पाएगा, किंतु हुआ सोच के विपरीत। डेढ़ साल बाद भी यूक्रेन मजबूती के साथ रूस के सामने खड़ा है। सूचनांए आ रही हैं कि यूक्रेन अब बढ़त ही ओर है। यूकेन का रूस पर बढ़त लेना बहुत ही खतरनाक संकेत है। रूस अपने को परास्त होता देख अपने सम्मान और हनक की खातिर परमाणु शस्त्रों का प्रयोग करने से कभी नहीं चूकेगा और यदि ऐसा हुआ तो मानव जाति का महाविनाश असंभावी है। रूस ने वर्ष 2014 में यूक्रेन का हिस्सा रहे क्रीमिया पर कब्जा कर लिया था। इससे पहले भी रूस और यूक्रेन के बीच इस क्षेत्र को लेकर काफी तनाव बना हुआ था। ऐसा इसलिए क्योंकि सोवियत संघ ने इस क्रीमिया क्षेत्र को तोहफे के रूप में यूक्रेन को सौंपा था। साल 2015 में फ्रांस और जर्मनी मध्यस्थता करते हुए रूस और यूक्रेन में शांति समझौता करवाया। यूक्रेन और रूस में समझौते के बाद यूक्रेन पश्चिमी देशों से अपने अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अच्छे बनाने में जुट गया, यह रूस की मर्जी विरूद्ध था। रूस नहीं चाहता था कि यूक्रेन के संबंध किसी भी पश्चिमी देश का अच्छे हों, यूक्रेन चाहता था कि वह नाटो देशों के समूह में शामिल हो। यूक्रेन रूस से सटा देश है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसके खिलाफ थे। वे नहीं चाहते थे कि नाटो की सेना की आमद उसकी सीमा तक हो जाए। यूक्रेन के न मानने पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को युद्ध का निर्णय

लेना पड़ा।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ही नहीं, पूरी दुनियां मान रही थी कि रूस का मुकाबला यूक्रेन के लिए संभव नहीं, किंतु यूक्रेन भारी नुकसान के बाद भी युद्ध का मुकाबला करता रहा। शुरूआत में उसका कुछ भाग रूस के कब्जे में चला गया। रूस-यूक्रेन का सबसे ज्यादा असर यूक्रेन के आम लोगों पर पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि युद्ध यूक्रेन की जमीन पर हो रहा है। इस युद्ध के चलते एक अनुमान के अनुसार यूक्रेन में 8000 से अधिक आम लोगों की मौत हो चुकी है। 80 लाख से अधिक लोगों ने यूक्रेन छोड़ दिया जबकि करीब 1.4 करोड़ लोगों को विस्थापित होना पड़ा। इस युद्ध में अब तक रूस के एक लाख 45 हजार से अधिक सैनिकों की मौत हो चुकी है, वहीं यूक्रेन को भी अपने एक लाख सैनिकों की जान से हाथ धोना पड़ा। युद्ध के चलते यूक्रेन में करीब 138 अरब डॉलर का इन्फ्रास्ट्रक्चर पूरी तरह से बर्बाद हो गया है। यूक्रेन के 1100 से ज्यादा अस्पताल और 1,49,300 रिहायशी इमारतों को नुकसान पहुंचा है। यूक्रेनी राष्ट्रपति के आर्थिक सलाहकार ओलेग उस्तेंको के मुताबिक, यूक्रेन को युद्ध की वजह से एक ट्रिलियन डॉलर (करीब आठ लाख करोड़ रुपये) का नुकसान हो चुका है। दूसरी तरफ रूस अब तक युद्ध में करीब 8,000 अरब रुपये फूंक चुका है। दूसरी तरफ अमेरिका और यूरोप मिलकर यूक्रेन की मदद के नाम पर युद्ध में 12,520 अरब रुपये झोंक चुके हैं। भोजन और ईंधन की बढ़ी हुई कीमतें, बाधित आपूर्ति श्रृंखला, महंगाई और बेरोजगारी जैसे कारकों को शामिल कर देखा जाए, तो युद्ध की वजह से पूरी दुनिया पर करीब 24 लाख करोड़ रुपये (तीन ट्रिलियन डॉलर) का बोझ पड़ा है। नाटो देश इस युद्ध में सीधे तो शामिल नहीं हुए किंतु वे यूक्रेन की सैन्य मदद कर रहे हैं। यूक्रेन का मोरल बढ़ाने को अमेरिका सहित कुछ देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने यूक्रेन का दौरा भी किया। यूक्रेन को युद्ध में प्रत्येक प्रकार की सैन्य सहायता का वायदा नहीं किया अपितु सैन्य अस्त्र- शस्त्रों की आपूर्ति बढ़ाई। इन्हीं अस्त्र- शस्त्रों के बल पर यूक्रेन रूस के आगे टिका है।

हाल ही में अमेरिका के रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने यूक्रेन को क्लस्टर बम सौंप दिए। उन्होंने यह भी कहा है कि अगर यूक्रेन ने रूस के खिलाफ इस हथियार का इस्तेमाल किया तो वह भी इसका कड़ा जवाब देंगे। दरअसल क्लस्टर बम एक बेहद खतरनाक हथियार है। यह कई सारे छोटे-छोटे बमों का समूह होता है, जिन्हें एक खोल के अंदर रखा जाता है। इस बम को जमीन या हवा दोनों जगह से दागा जा सकता है। इस बम का प्रयोग किसी बड़े क्षेत्र को एक साथ खत्म करने के लिए किया जाता है। जब क्लस्टर बम को दागा जाता है तो यह जमीन पर पहुँचने से पहले ही खुल जाता है। इसके बाद इसके अंदर मौजूद बम अलग-अलग जगह बिखरकर उस पूरे इलाके को तबाह कर देते हैं। क्लस्टर बम को जब दागा जाता है तो इसमें मौजूद छोटे बमों में से 10 से 40 फीसदी बम फटते ही नहीं हैं। यह मिट्टी के नीचे दबे होते हैं। ऐसे में जब सालों बाद कोई आम आदमी उस जगह पर पहुंचता हैं तो इसकी चपेट में आ जाता है। अर्थात इन बमों से सालों तक तबाही होती रहती है।

साल 2008 में दुनिया के 120 देशों ने संयुक्त राष्ट्र के एक सम्मेलन में क्लस्टर बम पर बैन लगाने वाले समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इसमें फ्रांस और ब्रिटेन जैसे अमेरिका के सहयोगी देश भी हैं। हालांकि अमेरिका, रूस और यूक्रेन ने अब तक क्लस्टर बम पर प्रतिबंध नहीं लगाया है।

जहां यूक्रेन को नाटों देश सैन्य साज -सामान और अन्य सहायता उपलब्ध करा रहे हैं, वहीं इन्होंने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाया हुआ है। अंतराष्ट्रीय न्यायालय ने रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन को युक्रेन पर हमला करने का अपराधी घोषित किया हुआ है। ऐसी हालात में रूस के राष्ट्रपति पुतिन का झल्लाना स्वाभाविक है। इसी झल्लाहट में वह कुछ भी निर्णय ले सकतें हैं। हाल में रूसी प्रेसिडेंट व्लादिमिर पुतिन के स्पेशल एडवाइजर और रूस के पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने यूक्रेन को परमाणु हमले की धमकी दी है। मेदवेदेव ने कहा है कि अगर यूक्रेन इसी तरह जवाबी हमले करता रहा और उसने नाटो के साथ मिलकर हमारी जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की तो फिर हमें मजबूरी में न्यूक्लियर वेपन्स इस्तेमाल करने पड़ेंगे। रूस की तरफ से यूक्रेन पर एटमी हमले की धमकी पहली बार नहीं दी गई है। फरवरी और अप्रैल में खुद पुतिन कह चुके हैं कि अगर अमेरिका और नाटो यूक्रेन की मदद करते रहे तो रूस एटमी हथियारों समेत तमाम ऑप्शंस इस्तेमाल करेगा। इतना ही नहीं उसने अपने न्यूकिलियर शस्त्र तैनात भी कर दिए हैं।

मेदवेदेव ने कहा- जरा सोचिए, अगर हमारे सैनिकों को पीछे हटना पड़ा तो क्या होगा। यूक्रेन को अमेरिका और नाटो की तरफ से खुली मदद मिल रही है। अगर वो हमारी जमीन छीनने की कोशिश करते हैं या रूस के टुकड़े करने की कोशिश करते हैं तो हमें न्यूक्लियर वेपन्स इस्तेमाल करने ही होंगे। मेदवेदेव का बयान इस बात की पुष्टि करता है कि जंग अगर यूक्रेन के फेवर में जाने लगी तो रूस उस पर एटमी हमला करेगा। यहां ये जान लेना भी जरूरी है कि मेदवेदेव रूसी सिक्योरिटी काउंसिल के चेयरमैन भी हैं। मेदवेदेव ने कुछ महीने पहले अमेरिका को भी सीधी धमकी दी थी। उन्होंने कहा था- अगर यूक्रेन से जंग में रूस की हार हुई तो अमेरिका में सिविल वॉर छिड़ जाएगा और इसके बाद न्यूक्लियर वॉर भी होगा। ऐसा कोई हथियार नहीं है, जो रूस के पास न हो। हमने अब तक खतरनाक हथियारों का यूज किया ही नहीं, रूस आज भी जंग को चंद दिनों में खत्म कर सकता है, लेकिन हम अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। इधर हाल में यूक्रेन के प्रेसिडेंट जेलेंस्की ने कहा कि हमने जीत की डगर पर कदम बढ़ा दिए हैं। बहुत जल्द हमारी फौज उन इलाकों को हासिल कर लेगी, जिन पर रूस ने कब्जा किया है।

जुलाई महीने की शुरूआत से ही रूस आक्रामक है। पुतिन मानो खुद फ्रंटफुट पर अमेरिका और यूरोप के खिलाफ बैटिंग कर रहे हैं। रूस इसी महीने खुद को काला सागर अनाज समझौते से अलग कर चुका है। रूस 17 मई को इस समझौते को 60 दिनों के लिए बढ़ाने पर सहमत हुआ था। इस डील के एक हिस्से की वजह से रूस असंतुष्ट था और जुलाई में आखिरकार उसने इसके खत्म करने का ऐलान कर दिया। उधर यूक्रेन ने घोषणा कर दी कि वह रूस के बंदरगाहों से दूसरे देशों को हो रही तेल की आपूर्ति नही होने देगा। बीते डेढ़ साल से कई बार समझौते की बात चली। रूस और यूक्रेन दोनों ने यही कहा है कि वो बिना शर्तों के शांति वार्ता के लिए बातचीत की मेज तक नहीं आएंगे। यूक्रेन का कहना है कि वो अपनी जमीन का कोई हिस्सा रूस को नहीं देगा। वहीं रूस का कहना है कि यूक्रेन को नई जमीनी सच्चाई को स्वीकार करना होगा। बीते साल फरवरी के आखिर में रूस ने यूक्रेन के खिलाफ विशेष सैन्य अभियान छेड़ दिया था। बीते वक्त के दौरान रूस ने यूक्रेन के दक्षिण और पूर्व में कई हिस्सों पर कब्जा कर लिया है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि यूक्रेन को लेकर शांति वार्ता के आइडिया को वो खारिज नहीं करते। असेंट पीटर्सबर्ग में हो रहे रशिया-अफ्रीका फोरम के दौरान अफ्रीकी देशों के नेताओं से बातचीत के बाद उन्होंने कहा कि चीन की तरफ की गई पेशकश या अफ्रीका की तरफ से की जा रही कोशिश शांति वार्ता करने का आधार बन सकती हैं। लेकिन पुतिन ने ये भी कहा कि संघर्ष विराम तब तक नहीं हो सकता जब तक यूक्रेन की सेना उन पर हमले करना जारी रखेगी। पुतिन ने कहा, अगर वो हम पर हमला करेंगे तो हम जवाबी कार्रवाई क्यों नहीं करेंगे। कुछ लोग चाहते हैं कि शांति वार्ता की बात हो। हमने इससे इनकार नहीं किया है। आपको पता ही है कि मैंने पहले भी कहा है कि हम शांति वार्ता से इनकार नहीं करते। कुछ भी हो हालत बहुत नाजुक है। अपने को हारता देख पुतिन कुछ भी कर सकतें हैं। परमाणु बम भी उसका ही एक विकल्प है। ऐसी हालत में पूरी दुनिया को यह प्रयास करना चाहिए कि महाविनाश की ओर जा रही यह लड़ाई किसी तरह से रूके। आज जबकि इस युद्ध को रूकवाने में संयुक्त राष्ट्र संघ पूरी तरह असफल रहा है। दोनों में से युद्धरत

सीमा-अंजू के प्रेम कहानी में पाक की चाल तो नहीं

पवन आगरी

आजकल सोशल मीडिया पर सीमा और अंजू की मोहब्बत से जुड़ी कहानियों को चटकारे लगाकर पेश किया जा रहा है। पर इस तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि कहीं इन दोनों के कथित इश्क में पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों का कोई रोल तो नहीं है। ये आप सभी जानते हैं कि सीमा एक पाकिस्तानी महिला है। उसका ग्रेटर नोएडा के सचिन नाम के नौजवान से सोशल मीडिया पर इश्क का परवान चढ़ा तो वो अपना वतन और शौहर को छोड़कर नेपाल होते हुए अपने प्रेमी के पास आ गई। वो अपने साथ अपने बच्चों को भी ले आई। उधर, राजस्थान के भिवाड़ी में रहने वाली दो बच्चों की मां अंजू पाकिस्तान चली गई अपने प्रेमी से मिलने। वहां उसने निकाह के बाद इस्लाम धर्म को कुबूल भी कर लिया। अब अंजू हो गई है फातिमा। अंजू की फेसबुक के जरिये पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रान्त में रहने वाले 29 साल के नसरूल्लाह से दोस्ती हुई थी, यह बताया जा रहा है ।

पर यहां हम बातें करेंगे उस बड़े सवाल की, जिसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत है। पहले बात सीमा की। सीमा बिना किसी पासपोर्ट या वीजा के नेपाल के रास्ते भारत आ गई। एक बार हम यह मान भी लेते हैं कि वह पाकिस्तान की किसी खुफिया एजेंसी से संबंध नहीं भी रखती होगी। पर एक दुश्मन देश की नागरिक का अपने चार छोटे बच्चों के साथ नेपाल से बिना किसी अवरोध या मदद के या गतिरोध ग्रेटर नोएडा तक आसानी से पहुंचना गंभीर सवाल तो खड़े करता ही है। इसी तरह से नेपाल के रास्ते पाकिस्तानी आतंकवादियों को भारत में कत्लेआम मचाने के लिए भी तो भेजा जा सकता है। उसने 2008 में मुंबई में भी तो यही तो किया था। उसके बाद मुंबई हमेशा-हमेशा के लिए बदल गयी। 26 नवंबर 2008 को पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकवादियों ने समुद्री मार्ग से मुंबई में प्रवेश किया और अचानक मुम्बई के बाजारों चौराहों पर हमला कर दिया। उस आतंकी हमले में सैकड़ों लोगों की जानें चली गईं और हजारों करोड़ रुपए की संपत्ति तबाह हो गई। इसके बावजूद पाकिस्तान में उस हमले के मास्टर माइंड खुलेआम घूम रहे हैं। अगर कोई सोच रहा है कि मुंबई हमलों के बाद सब कुछ शांत हो गया था, तो वे फिर पठानकोट और उसके बाद उरी की घटनाओं को भी जरा याद कर लें। कहने का मतलब यह है कि हमें जागना होगा। हमें याद रखना होगा कि पाकिस्तान किसी भी रास्ते से भारत की पीठ पर वार कर सकता है। क्या यह संभव नहीं है कि पाकिस्तान की ही खुफिया एजेंसियों ने ही सीमा को भारत में भेजा हो ताकि टोह ली जा सके कि हमारे निगाहबान कितने सतर्क हैं? अब बात कर लें अंजू से फातिमा बनी महिला की। यह सवाल तो पूछा ही जाएगा कि उसे

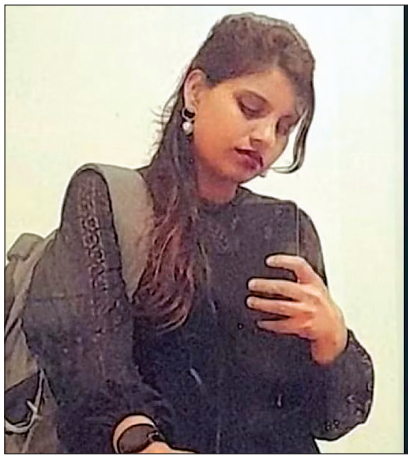

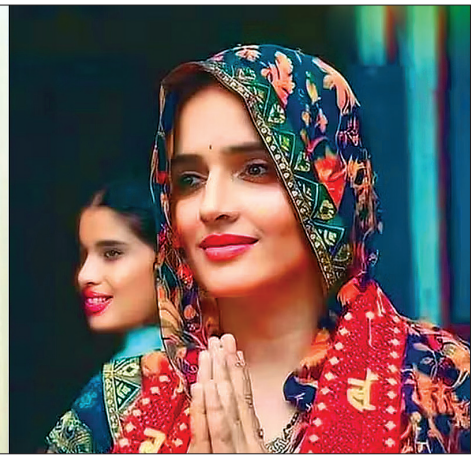

मजे-मजे में पाकिस्तान का वीजा कैसा मिल गया। पाकिस्तानी एँबेसी से भारतीय नागरिकों को बहुत कम ही वीजा मिलते हैं। आप कभी पाकिस्तानी एँबेसी के गेट के बाहर जाकर खुद देख लें। उनका वीजा देने वाला गेट नेहरू पार्क की तरफ है। वहां पर बुजुर्ग मुसलमान वीजा के लिए सुबह से शाम तक बैठे होते हैं। वे सरहद के उस पार अपने करीबियों को मिलने जाना चाहते हैं। पर उन्हें पाकिस्तान वीजा देने से इंकार करता रहता है। इसलिए ही ये सवाल पूछने का मन कर रहा है कि पाकिस्तान एँबेसी ने अंजू को अपने दोस्त से मिलने का वीजा कैसे दे दिया? पाकिस्तान में मुहाजिरों के हकों के लिए लड़ने वाली मुताहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम) के नेता अल्ताफ हुसैन 2004 में राजधानी दिल्ली आए थे। वे तब कह रहे थे कि दोनों पड़ोसी मुल्कों के संबंध खराब होने के कारण देश के बंटवारे के समय बंट गए परिवार भी हमेशा-हमेशा के लिए एक-दूसरे से दूर हो गए। कारण यह है कि अब दोनों देशों का वीजा लेना मुश्किल हो गया है। भारत तो पाकिस्तान के नागरिकों को वीजा देने में इसलिए बहुत ऐहतियात बरतता है, क्योंकि वहां से पाकिस्तान भारत में आतंकी तत्वों को भेजता रहा है। हालांकि वहां से हजरत निजामउद्दीन औलिया के उर्स में भाग लेने के लिए इस बार भी बहुत से तीर्थ यात्रियों को भारत ने वीजा दिया था, पर पाकिस्तान तो भारत के लेखकों, पत्रकारों, डाक्टरों को भी वीजा देने से आनाकानी करता है। पर उसने अकेली अंजू को वीजा देने में गजब की जल्दी दिखाई। इसलिए शक तो होता है कि आखिर पाकिस्तान ने किस वजह से उसे फटाफट वीजा दिया। एक दौर में हर साल सैकड़ों निकाह होते थे, जब दूल्हा पाकिस्तानी होता था और दुल्हन हिन्दुस्तानी। इसी तरह से सैकड़ों शादियों में दुल्हन पाकिस्तानी होती थी और दूल्हा हिन्दुस्तानी। सरहद के आरपार निकाह इसलिए बंद हो गए, क्योंकि पाकिस्तान लगातार भारत में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता रहा। वीजा और फिर नागरिकता पाने के झंझट से बचने के लिए बहुत सारे लोग सीमा के उस पार अपना जीवन साथी खोजना बंद कर चुके हैं। पाकिस्तान के भारत के खिलाफ छदम युद्ध जारी रखने की नीति के कारण दोनों देशों के नागरिकों को ही सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। मुंबई हमलों से पहले दिल्ली-मुंबई में पाकिस्तान से शायर, लेखक, फिल्मी कलाकार बराबर आते रहते थे। दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में पाकिस्तान के मशहूर शायर अहमद फराज को लगातार देखा जा सकता था। उनका एक मशहूर शेर है 'रंजिश ही सही, दिल ही दुखाने के लिए आ, आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ।' खैर, हर हालत में भारत की सुरक्षा और जांच एजेंसियों को यह गहराई से जाँच कर पता लगाना चाहिए कि सीमा कैसे भारत आ गई और अंजू भारत से पाकिस्तान कैसे चली गई। इन दोनों के कथित प्रेम के पीछे का सच सामने आना ही चाहिए। पाकिस्तान हमें बार-बार नुकसान पहुंचाता रहा है। वहां पर आम लोगों की जिंदगी कठिन होती जा रही है। राजनीतिक अस्थिरता और महंगाई के कारण आम इंसान का जीना मुश्किल हो गया है। इसलिए वहां की जनता सड़कों पर आने को बेताब है। ■

77वें स्वतंत्रता दिवस की

हार्दिक शुभकामनाएं

"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से 12 मार्च, 2021 से प्रारंभ होकर 75 सप्ताह तक मनाया जाने वाला **'आजादी का अमृत महोत्सव'** भारतवर्ष की अस्मिता एवं गौरवशाली इतिहास की पुनर्स्थापना के महनीय उद्देश्य में पूर्णतया सफल रहा है। यह उत्सव **'हर घर तिरंगा'** एवं **'मेरी माटी-मेरा देश'** अभियान के माध्यम से हर देशवासी को आजादी के नायकों को नमन करने, अपनी समृद्ध संस्कृति, विरासत एवं उपलब्धियों पर गर्व करने के साथ ही भविष्य की चुनौतियों का आकलन करते हुए आजादी के 100वें वर्ष 2047 तक भारतवर्ष को विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व में प्रतिस्थापित करने के लिए पूरे मनोयोग से कार्य करने की सच्ची प्रेरणा देता है।"

जय हिन्द!

- योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

यमुना की बदहाली को लेकर **1978** से 1983 तक दिल्ली विकास प्राधिकरण, बाढ़ सिंचाई विभाग, दिल्ली जल बोर्ड ने यमुना से प्रदूषण खत्म करने के लिए बड़ी-बड़ी स्कीमें बनाई, सर्वे किये, रिपोर्ट बनाई परंतु वह कागजी कार्रवाई तक ही मौजूद रही। वाटर टैक्सी चलाने का प्लान भी तैयार हुआ। दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने अब तक करीब दो दर्जन मास्टर प्लान बना चुका है।

क्यों तड़प उठी दिल्ली में यमुना नदी

जब भी किसी भी नदी की धारा सूख जाती है, तो लोग उसमें अपना घर बना लेते हैं या तरह-तरह के अतिक्रमण कर लेते हैं और जब बारिश के दिनों में नदी अपने वास्तविक स्वरूप में लौटती है तो कहा जाने लगता है कि देखो, बाढ़ आ गई। आज जब यमुना अपनी अस्तित्व तो बचाने के लिए अपने पूरे सामर्थ्य के साथ दिल्ली के लोगों और दिल्ली की गंदगी दोनों से एक साथ लड़ रही है तो दिल्ली भर में हाहाकार मचा हुआ है। सच में, दिल्ली के द्वारा दिए गए कष्ट से ही तड़प उठी है यमुना। दिल्ली को अपनी यमुना को तो हर सूरत में बचाना ही होगा। हालत तो यह बन गई है कि जो यमुना दिल्ली की जीवन रेखा मानी जाती थी, अब उसमें तमाम शहर की गंदगी, गंदे कपड़े, कबाड़, पॉलिथीन मरे हुए जानवरों फैक्ट्रियों कारखानों से निकलने वाले जहरीले रासायनिक तत्व मिलाए जा रहे हैं। जो यमुना नदी दिल्ली की जीवन रेखा थी आज वह खुद ही अपने जीवन की भीख मांग रही है।

बाढ़ से हुई तबाही

यमुना नदी में फिर आई बाढ़ से हुई तबाही से लेखिका और अनुवादक जिलियन राइट उदास हैं। वो दिल्ली की प्राण और आत्मा यमुना नदी को 1970 के दशक के आरंभ से देख रही हैं। उस समय यमुना साफ-सुथरी थी। पर इसमें दिल्ली वालों ने कूड़ा-कचरा फेंककर बर्बाद कर दिया। उनका दिन खराब हो जाता है जब वो देखती हैं कि लोग यमुना नदी में अपनी कारें रोक-रोककर लोग पूजा सामग्री के अवशेष आदि डाल रहे होते हैं। उन्हें रोकने वाला कोई भी हीं होता। वो मानती हैं कि यमुना को प्रदूषित करने का ही नतीजा है कि अब इसके आसपास विचरण करने वाली सफेद बिल्लियां भी देखने में नहीं आती। सत्तर के दशक तक तो हालात ठीक थे। उसके बाद स्थिति हाथ से निकल गईं।

ब्रजेश शर्मा

इसबार तो दिल्ली सरकार के केंद्र, दिल्ली सचिवालय से लेकर राजघाट,शांतिवन, शक्ति स्थल, सुप्रीम कोर्ट और निगम बोध घाट तक में चला गया यमुना में आई बाढ़ का पानी। बाढ़ ने इन सबके दरवाजे बंद करवा दिए। दिल्ली के पुराने मोहल्ले, कटरों, कूचों, गलियों, बाडो के बाशिंदे इसे कभी यमुना नदी कहकर नहीं पुकारते, आज भी उनकी जुबान पर 'जमुना जी' चढ़ा है। यमुना कभी भी इनके लिए एक नदी नहीं रही। वे जमुना जी में स्नान कर-के खुद को धन्य, मोक्ष की प्राप्ति समझते थे। जब दिल्ली, कश्मीरी गेट, लाहौरी गेट अजमेरी गेट, दिल्ली गेट तक ही सीमित थी, तो यहां के रहने वालों के लिए रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने का जरिया भी थी जमुनाजी। पीने का पानी, किनारे पर पैदा होने वाली साग सब्जी, गाय भैंस को पानी पिलाने, नहलाने, तैराकी के मेले, मरघट वाले हनुमान बाबा का मंदिर। दिल्ली की बुजुर्ग महिलाओं का भोर में ही जमुनाजी जाकर स्नान ध्यान करना एक आम बात थी। यमुना में आई बाढ़ से सिर्फ गरीब- असहाय ही कष्ट में नहीं है। इसने धनी और असरदार लोगों को भी जमुना जी ने उनकी सही ताकत का अहसास करा दिया। यमुना के करीब सिविल लाइंस में बनी विशाल कोठियां भी पानी-पानी हो गईं। साधना टीवी के सीईओ और प्रधान संपादक राकेश गुप्ता के सिविल लाइंस वाले घर की बेसमेंट और पहली मंजिल में बाढ़ का पानी चला गया। उन्हें और उनके परिवार को नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फोर्स (एनडीआरएफ) के जवान नावों में सुरक्षित स्थानों पर लेकर गए। राकेश गुप्ता कह रहे थे कि वे जब नाव पर बैठे थे तो वे यह सोच रहे थे कि इंसान को हमेशा बुरे वक्त को याद रखना चाहिए। बुरा वक्त बहुत कुछ सिखा जाता है। बहरहाल, इसी सिविल लाइंस के एक घर में बाबा साहेब अंबेडकर ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष गुजारे। इसी सिविल लाइंस मेट्रो स्टेशन के करीब 1925 में बने दिल्ली ब्रदरहुड हाउस में बाढ़ का पानी नहीं घुस पाया, पर पानी गुरु जम्भेश्वर धर्मशाला तक पहुंच गया था। यानी दिल्ली ब्रदरहुड हाउस को लगभग स्पर्श कर गया। यहां से ही फिलहाल दिल्ली डाइआसिसन बोर्ड के समाज सेवा से जुड़े काम होते हैं। इनके कार्यकर्ता आजकल राजधानी के बाढ़ से प्रभावित इलाकों में भोजन, फल और दवाइयां बांट रहे हैं। इनका अधिकतर काम यमुना पुश्ते पर चल रहा है। बाढ़ ने पुश्ते के आसपास रहने वाले लाखों लोगों को अपनी चपेट में लिया। दिल्ली डाइआसिसन बोर्ड राजधानी के गिरिजाघरों, ईसाई समाज की तरफ से संचालित

यमुना बगैर दिल्ली को कोई मतलब नहीं

कई इमामबाड़ों में भी गईं और मर्सिया होते देखा। उन्हें ये सब करने से 'आधा गांव' का अनुवाद करने में मदद मिली। उनके पसंदीदा उपन्यासों में 'राग दरबारी' भी है। आपने रिंग रोड में आश्रम से आते-जाते वक्त राजधानी का तारीखी गांव किलोकरी अवश्य बाहर से देखा होगा। यहां पर खेती बंद हुए तो एक जमाना बीत गया है। कहते हैं हजरत निजामुद्दीन औलिया किलोकरी में रहते हुए इसके आगे से गुजरने वाली यमुना नदी को निहारते थे। वे वजू भी यमुना के जल से ही करते थे। किलोकरी के आगे से ही यमुना बहती थी। इस बीच, कहते हैं कि हजरत कुतुबुद्दीन बाख्तियार काकी जब भारत आये तो महरौली से पहले वे किलोकरी में ही रुके थे। शायद इसी कारण बाद के बहुत से सूफी संत भी यहाँ आते रहे और रुके, जिनमें प्रमुख हजरत निजामुद्दीन औलिया, शेख रुकनुद्दीन फिरदौसी और ख़्वाजा महमूद बहार प्रमुख हैं। बहरहाल, याद रख लिया जाए कि यमुना नदी या जमुना जी के बगैर दिल्ली को कोई मतलब नहीं है। इसे पहले की तरह स्वच्छ और निर्मल तो बनाना ही होगा, वरना इसमें भी इतनी शक्ति है कि वह गंदगी फैलाने वालों को गंदगी में गोता लगाने पर मजबूर कर दे।

स्कूलों, ओल्ड एज होम वगैरह का प्रबंधन करता है। इस बाढ़ ने दिल्ली के मनावीय पक्ष को उभारा। दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी समेत बहुत से समाजसेवी संगठन बाढ़ प्रभावित लोगों को पहुंचाने लगे।

इस बीच, अगर इतिहास के पन्नों को खंगालें तो हम देखते हैं कि 1857 के गदर में, मेरठ के विद्रोहियों ने कश्मीरी गेट से दाखिल न लेकर दिल्ली गेट से इसलिए दाखिला लिया, क्योंकि बचाव के लिए सामने यमुना नदी थी। बहादुर शाह जफर को भी यमुना नदी ने हीं बचाया था जब गोरी हुकूमत की फौज ने दिल्ली की घेराबंदी कर ली तो बादशाह जफर नदी के रास्ते एक नाव पर सफर करके सुरक्षित हुमायूं के मकबरे में पहुंच गए। यमुना जी बादशाहों से लेकर गुरबत में रहने वाले सबके लिए एक वक्त मनोरंजन का साधन थी। इतिहाल के पन्नो को खंगालेंगे तो पता चलेगा कि शाहजहां जमुना में नाव चला कर लुफ्त उठाता था। वही दिल्ली का गरीब आवाम जमुना जी के घाटों की बुलंदियों से छलांग लगाकर छपाक से पानी में कूदकर अपने जोहर तैर कर आगे निकलने की ताकत का इजहार करते थे। नावो मैं बैठकर नौजवानों की टोली दूसरी नाव मैं सवार टोली से टक्कर लेने के लिए जोर-जोर से चप्पू तथा लंबे बांस के सहारे आगे निकालने का जी तोड़ प्रयास करते थे। राजधानी होने का कारण बढ़ती हुई आबादी तो इसका मुख्य जिम्मेदार है ही। दिल्ली के यमुना किनारे खादर में लगभग 36 नई सौ कालोनियां बसा दी गईं। यमुना के अधिकार क्षेत्र वाली जमीन पर स्वामीनारायण मंदिर, कॉमनवेल्थ अपार्टमेंट, दिल्ली सरकार का नया सचिवालय, इंद्रप्रस्थ इंदौर स्टेडियम इंटरस्टेट बस अड्डा का नया डिपो, बिजली घर जैसी इमारतें बना दी गईं। अनुमान है कि यमुना तकरीबन डेढ मील पूरब की तरफ सरक गई। यमुना की बदहाली को लेकर 1978 से 1983 तक दिल्ली विकास प्राधिकरण, बाढ सिंचाई विभाग, दिल्ली जल बोर्ड ने यमुना से प्रदूषण खत्म करने के लिए बड़ी-बड़ी स्कीमें बनाई, सर्वे किये, रिपोर्ट बनाई परंतु वह कागजी कार्रवाई तक ही मौजूद रही। वाटर टैक्सी चलाने का प्लान भी तैयार हुआ। दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने अब तक करीब दो दर्जन मास्टर प्लान बना चुका है। हर प्लान में यमुना को लेकर कई प्रावधान किए गए, परंतु हुआ वही, ढाक के तीन पात। ■

इस बार राजस्थान का चुनाव वसुंधरा नहीं

बल्कि मोदी के नाम पर लड़ेगी भाजपा!

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने में चार महीने से भी कम का समय रह गया है। सभी राजनीतिक दल अपनी चुनावी तैयारियों में जुट गए हैं। प्रदेश में सत्तारुढ़ कांग्रेस व भाजपा ने भी अपना सांगठनिक ढांचा मजबूत बना लिया है। मंडल, ब्लॉक, जिला से लेकर प्रदेश कार्यकारिणी का गठन हो चुका है। कांग्रेस पार्टी चुनाव में जाने को पूरी तरह तैयार नजर आ रही है। ऐसे में भाजपा भी जोरों से चुनावी तैयारियां कर रही है। भाजपा के बड़े नेता चाहते हैं कि राजस्थान में हर बार राज बदलने की परंपरा को इस बार भी कायम रखा जाए। उसी परंपरा के तहत प्रदेश में एक बार फिर भाजपा की सरकार बनाई जाए। इस बार के चुनाव में भाजपा पहले से हटकर कुछ नया करने जा रही है। भाजपा द्वारा राजस्थान विधानसभा के अब तक लड़े गये सभी चुनावों में पार्टी एक नेता का नाम घोषित कर उनके चेहरे पर चुनाव लड़ती रही थी। पहले भैरोंसिंह शेखावत राजस्थान में भाजपा के चेहरे हुआ करते थे। उनके बाद 2003 से लेकर 2018 तक के चुनाव में वसुंधरा राजे को नेता घोषित कर पार्टी चुनाव लड़ती रही थी। मगर इस बार के चुनाव में ऐसा नहीं होगा। इस बार भाजपा आलाकमान ने पूरा चुनाव एक नए अंदाज में लड़ने का फैसला किया है। भाजपा इस बार राजस्थान के किसी भी नेता को पार्टी का चेहरा घोषित कर चुनाव नहीं लड़ेगी। पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ेगी। इसका खुलासा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राजस्थान दौरे के दौरान सीकर मीटिंग में पूरी तरह हो चुका है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा द्वारा हाल ही में घोषित की गई राष्ट्रीय कार्यकारिणी में वसुंधरा राजे को फिर से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। यह इस बात का संकेत है कि उनको राजस्थान की राजनीति से हटाकर राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय किया जाएगा। हालांकि वसुंधरा राजे पिछले लंबे समय से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनी हुई हैं। मगर उनके पास दिल्ली में पार्टी की कोई भी जिम्मेदारी नहीं है। पिछले दिनों जरूर उनको झारखंड की चार लोकसभा सीटों कोडरमा, दुमका, गिरिडीह और गोड्डा भेजकर पार्टी के पक्ष में प्रचार करवाया गया था। उसके अलावा उन्होंने आज तक राष्ट्रीय पदाधिकारी के रूप में किसी भी प्रकार की कोई भूमिका नहीं निभाई है। वसुंधरा राजे स्वयं राजस्थान नहीं छोड़ना चाहती हैं। उनके समर्थक भी चाहते हैं कि राजे प्रदेश की राजनीति में ही सक्रिय रहें। ताकि अगले विधानसभा चुनाव के बाद उन्हें फिर से मुख्यमंत्री बनने का मौका मिल सके। मगर भाजपा आलाकमान किसी भी स्थिति में ऐसा नहीं होने देना चाहता है। इसीलिए पार्टी ने फैसला किया है कि अगला विधानसभा चुनाव बिना नेता के ही लड़ेंगे। भाजपा राजस्थान में कांग्रेस सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाकर भ्रष्टाचार के मुद्दे को हवा देना चाहती है। राजस्थान में पेपर लीक प्रकरण, राजस्थान लोक सेवा आयोग प्रकरण, शिक्षक भर्ती घोटाला व भ्रष्टाचार के अन्य मुद्दों को हवा देकर भ्रष्टाचार को मुख्य मुद्दा बनाना चाहती है। ऐसे में यदि भाजपा वसुंधरा राजे को चेहरा बनाकर चुनाव लड़ती है तो कांग्रेस के खिलाफ भ्रष्टाचार का मुद्दा कमजोर हो जाएगा। वसुंधरा राजे के आगे आते ही कांग्रेस भाजपा का हथियार उन्हीं के खिलाफ प्रयोग में ला सकती है। इसी डर से भाजपा आलाकमान वसुंधरा राजे को आगे नहीं कर रहा है। वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री रहते उनकी सरकार के भ्रष्टाचार के बहुत से मामले उजागर हुए थे। कांग्रेस नेता सचिन पायलट तो अभी भी वसुंधरा राजे सरकार के दौरान हुए कथित भ्रष्टाचार की जांच की मांग करते आ रहे हैं। वसुंधरा राजे पर मुख्यमंत्री रहते एक चौकड़ी से घिरे रहने के आरोप भाजपा के ही नेता लगाते रहे थे। वही पुरानी चौकड़ी आज भी वसुंधरा राजे के चारों तरफ नजर आ रही है। वसुंधरा समर्थक कालीचरण सर्राफ, यूनुस खान, भवानी सिंह राजावत, रोहिताश शर्मा, देवी सिंह भाटी, अशोक परनामी, प्रताप सिंह सिंघवी, प्रह्लाद गुंजल, अशोक लाहोटी, सिद्धि कुमारी, रामचरण बोहरा जैसे नेता आज भी उनको घेरे रहते हैं। इससे वसुंधरा राजे की आम जनता में नकारात्मक छवि बन चुकी है। वसुंधरा राजे समर्थकों ने तो दो साल पहले वसुंधरा राजे विचार मंच नामक एक संगठन बनाकर प्रदेश में भाजपा के समानांतर संगठन चलाने का भी प्रयास किया था। मगर उसे ज्यादा समर्थन नहीं मिलने के कारण वह संगठन निष्क्रिय-सा हो चुका है। पिछले विधानसभा चुनाव में तो वसुंधरा राजे के खिलाफ जनता का आक्रोश इतना अधिक हो गया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में आयोजित चुनावी जनसभाओं में जनसमूह 'मोदी तुझसे बैर नहीं वसुंधरा तेरी खैर नहीं' के नारे लगाता था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रचार के बावजूद भी 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को राजस्थान में करारी हार का सामना करना पड़ा। भाजपा 163 से घटकर 73 विधानसभा सीटों पर सिमट गई थी। यानी भाजपा को उन 90 विधानसभा क्षेत्रों में हार का सामना करना पड़ा था जहां उनके प्रत्याशी 2013 के विधानसभा चुनाव में जीते थे। 2018 की चुनावी सभाओं में प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं देखा था कि वसुंधरा राजे के खिलाफ आमजन में कितना आक्रोश व्याप्त है। उसी के चलते 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने वसुंधरा राजे को चुनाव प्रचार से दूर ही रखा था। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनसभाओं में भी वसुंधरा राजे शामिल नहीं होती थीं। 2019 में भाजपा ने लगातार दूसरी बार प्रदेश की सभी 25 लोकसभा सीटें जीती थीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के सभी बड़े नेताओं का मानना है कि प्रदेश में आज भी वसुंधरा राजे की नकारात्मक छवि से भाजपा को नुकसान हो सकता है। इसीलिए उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में लाकर दूसरे प्रदेशों में प्रचार करवाया जाए। राजस्थान की राजनीति में वसुंधरा राजे का पिछली बार सबसे अधिक विरोध उनके राजपूत समाज ने ही किया था। आनंदपाल एनकाउंटर के चलते राजपूत समाज खुलकर वसुंधरा राजे के खिलाफ हो गया था। जिसका उन्हें खामियाजा भी भुगतना पड़ा था।

> **पिछले विधानसभा चुनाव में तो वसुंधरा राजे के खिलाफ जनता का आक्रोश इतना अधिक हो गया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में आयोजित चुनावी जनसभाओं में जनसमूह 'मोदी तुझसे बैर नहीं वसुंधरा तेरी खैर नहीं' के नारे लगाता था।**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रदेश में हो रही जनसभाओं में भी वसुंधरा राजे को बोलने का अवसर नहीं मिल रहा है। इसका भी सीधा-सीधा संदेश है कि पार्टी उन्हें प्रदेश की राजनीति में ज्यादा तवज्जो नहीं देना चाहती है। विधानसभा में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा वसुंधरा राजे का खुलकर आभार जताने के बाद प्रदेश की जनता को गहलोत-वसुंधरा के मिलीभगत की राजनीति का भी पता चल गया। वैसे भी वसुंधरा राजे विपक्ष की राजनीति में अधिक सक्रिय नहीं रहती हैं। पूर्व मुख्यमंत्री होने के नाते उनको लगातार प्रदेश में घूम-घूम कर पार्टी को मजबूत करना चाहिए था। उस समय वसुंधरा राजे अपने को धौलपुर महल तक ही सीमित कर लेती हैं। ऐसी कई बातें हैं जिनके चलते वसुंधरा राजे को प्रदेश की राजनीति से दूर किया जा रहा है। वह पार्टी से विद्रोह नहीं कर सकें इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय कार्यकारिणी में भी बनाए रखा गया है। वसुंधरा राजे अब कितना भी जोर लगा लें उनको नेता घोषित नहीं किया जाएगा। वह चाहती हैं कि उन्हें चुनाव समिति या प्रचार समिति का ही अध्यक्ष बना दिया जाए। मगर मौजूदा परिस्थितियों से ऐसा लगता है कि भाजपा आलाकमान उन्हें शायद ही प्रदेश में कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दे। उनको बैलेंस रखने के लिए उनके समर्थक किसी नेता को चुनाव के दौरान महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है। मगर मौजूदा परिस्थिति में वसुंधरा राजे का प्रदेश में नेता बनना मुश्किल ही नहीं असंभव-सा नजर आ रहा है। ■

अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने ऐसी बॉल फेंकी है जिस पर

मोदी छक्का लगा देंगे

यह पूरे देश की जनता को मालूम है कि इस अविश्वास प्रस्ताव से मोदी सरकार को कोई खतरा नहीं है क्योंकि इसके पास अपने बूते पर सदन में जबर्दस्त बहुमत है और 538 की वर्तमान सदस्य संख्या वाली लोकसभा में भाजपा व इसके सहयोगी दलों के 332 सांसद हैं।

मधुसूदन भट्ट

विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) ने मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का निर्णय लेकर अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता, नासमझी एवं विवेकहीनता का ही परिचय दिया है, यह प्रस्ताव स्वीकार भी हो गया। अब प्रतीक्षा है उस पर बहस की। आइएनडीआइए भले ही अविश्वास प्रस्ताव को अपनी जीत समझ रहा हो और यह मानकर चल रहा हो कि उसे संसद में अपनी एकजुटता एवं ताकत दिखाने का अवसर मिलेगा, लेकिन एक तो इस प्रस्ताव का गिरना तय है, दूसरा विपक्षी एकता एवं शक्ति के दावे भी खोखले साबित होने है। जब प्रस्ताव का गिरना पहले से ही तय है तो क्यों विपक्ष अपनी किरकिरी कराने पर तुला है। विपक्षी दलों का मणिपुर पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य की अपनी मांग पर अड़े रहना भी हास्यास्पद है। क्योंकि प्रधानमंत्री ने पहले ही मणिपुर के हालात पर क्षोभ व्यक्त करते हुए संसद भवन परिसर में कहा था कि यह घटना किसी भी सभ्य समाज को शर्मसार करने वाली है और इससे पूरे देश की बेइज्जती हुई है। बावजूद विपक्ष की जिद इसलिये भी बचकानी एवं बेहूदी कही जायेगी क्योंकि कोई भी मामला जिस मंत्रालय से संबंधित होता है, उसके ही मंत्री को उस पर वक्तव्य देना होता है। सोचने वाली बात है कि विपक्ष यदि वास्तव में मणिपुर पर दुःखी होता तो चार दिन संसद का काम रोक कर न तो नारेबाजी और न हठधर्मिता में अपनी ऊर्जा खपा रहा होता और न ही गृहमंत्री को सुनने से इन्कार कर रहा होता। विपक्षी दलों की चिंता मात्र एक दिखावा ही अधिक प्रतीत हुई है। विपक्ष का चेहरा जनता के सामने बेनकाब हुआ है, जो कुछ बाकी रहा है प्रधानमंत्री अविश्वास प्रस्ताव पर अपने वक्तव्य में उसे उघाड़ देंगे, इस नए गठबंधन की कथित एकजुटता की पोल भी खोल ही देंगे और उसकी आपसी खींचतान को भी उजागर कर ही देंगे। विपक्षी गठन इंडिया के गठन के बाद वे कितने राजनीतिक रूप से शक्तिशाली हुए हैं और प्रधानमंत्री को चुनौती देने की स्थिति कितने सक्षम बने हैं, इन स्थितियों का भी पदार्पाश होगा। बात जब तीर से निकली है तो दूर तक जायेगी, अविश्वास प्रस्ताव की बहस केवल मणिपुर तक सीमित नहीं रहने वाली, क्योंकि हालिया पंचायत चुनावों के दौरान बंगाल में जो भीषण हिंसा हुई, कोई भी उसकी अनदेखी नहीं कर सकता-मोदी सरकार तो बिल्कुल भी नहीं। यह सही है कि अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने अपने इस उद्देश्य को हासिल कर लिया कि मणिपुर के मामले में प्रधानमंत्री को सदन में बोलना ही पड़ेगा, लेकिन उसने उन्हें अपनी राजनीतिक हठधर्मिता को बेनकाब करने का अवसर भी दे दिया है। एक तरह से विपक्ष ने अपने पांव पर खुद कुल्हाड़ी चला दी है। यह पूरे देश की जनता को मालूम है कि इस अविश्वास प्रस्ताव से मोदी सरकार को कोई खतरा नहीं है क्योंकि इसके पास अपने बूते पर सदन में जबर्दस्त बहुमत है और 538 की वर्तमान सदस्य संख्या वाली लोकसभा में भाजपा व इसके सहयोगी दलों के 332 सांसद हैं जबकि इंडिया दलों के 142 व निरपेक्ष या संकट के समय मोदी सरकार का साथ देने वाले दलों के सदस्यों की संख्या 64 है। यह अविश्वास प्रस्ताव सांकेतिक है और इस बात का प्रयास है कि इसके माध्यम से विपक्षी गठबन्धन देश के लोगों के बीच अपने समर्थन में 'जन-अवधारणा' का निर्माण कर सके। लेकिन

विपक्षी दलों का यह न्यूसेंस भरा ध्येय अधूरा ही रहने वाला है। अविश्वास प्रस्ताव संसदीय लोकतन्त्र में प्रायः सरकारों के खिलाफ जन अवधारणा सृजित करने के लिए ही लाये जाते हैं क्योंकि भारत के संसदीय इतिहास में अब तक 28 अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये, जिनमें केवल तीन बार ही सत्तारुढ़ सरकारें इनके माध्यम से सत्ता से बेदखल की गई हैं।

मोदी सरकार अपने इस कार्यकाल में पहली बार अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रही है, इसके पहले 2018 में भी मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था, तब भी विपक्ष को पराजय का सामना करना पड़ा था और उस समय ही मोदी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि 2023 में फिर से अविश्वास प्रस्ताव लाने का आपको मौका मिले। मौका तो विपक्ष को मिल ही गया है, पिछली बार की तरह इस बार भी ऐसा ही सुनिश्चित सा दिख रहा है, कि प्रस्ताव औंधे मुंह गिरेगा। हालांकि लोकतंत्र के सर्वोच्च मंच संसद पर सत्ता पक्ष और विपक्ष की ऐसी रस्साकशी कोई नई बात नहीं है। इसे स्वस्थ लोकतंत्र का लक्षण भी कहा जा सकता है। लेकिन इस तरह की कवायद एवं मंथन से जनता के हित में कुछ निकलना चाहिए, वह निकलता हुआ दिख नहीं रहा है। मणिपुर में जिस तरह के दृश्य पिछले दिनों देखने को मिले, उसके मद्देनजर इस तरह की रस्साकशी की बजाय सार्थक बहस का माहौल बनाकर समस्या के समाधान का रास्ता निकला जाता तो वह आशा की किरण बनता। बेहतर तो यही होता कि विपक्ष और सरकार आपस में बातचीत से सहमति की कोई सूरत निकाल कर मणिपुर पर विस्तृत चर्चा कर लेते और इसके लिए अविश्वास प्रस्ताव की नौबत नहीं आती। अविश्वास प्रस्ताव से तीन बार ही सत्तारुढ़ सरकारें सत्ता से बेदखल की गई हैं। इनमें सभी सरकारें गठबंधनों की खिचड़ी सरकारें थीं और एक बार 1999 में तो अटल बिहारी वाजपेयी की साझा सरकार केवल एक वोट से ही गिर गई थी। जबकि इससे पहले 1990 में वीपी सिंह की 'दो खड़ाऊ' भाजपा व वामपंथियों के समर्थन पर खड़ी सरकार बुरी तरह लोकसभा में हार गई थी और 1997 में कांग्रेस के समर्थन पर टिकी देवेगौड़ा सरकार का हश्र भी ऐसा ही हुआ था। मगर मोदी सरकार में तो भाजपा के ही 301 सांसद हैं। अब जबकि अविश्वास प्रस्ताव पर बहस होना निश्चित हो गया है तो यह बहस लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एवं सार्थक बहस हो। आदर्श मूल्यों की वाहक बने। मणिपुर जैसी जटिल समस्या के साथ अन्य समस्याओं के समाधान की प्रेरक बने। संविधान पक्ष एवं विपक्ष को केवल अधिकार नहीं देता, उनसे शुद्ध आचरण की अपेक्षा भी करता है। अब संसद में कामकाज सुचारू ढंग से शुरू हो, इसकी व्यवस्था होनी चाहिए मगर साथ ही ध्यान रखा जाना चाहिए कि उच्च सदनों में विपक्ष के नेताओं को भी अपनी बात रखने का समुचित अवसर सम्मानजनक तरीके से दिया जाये। संसदीय प्रणाली में विपक्ष के नेता का महत्व भी कोई कम नहीं होता क्योंकि वह भी उन करोड़ों लोगों की आवाज होता है, जिनको अपनी आवाज संसद में रखने के लिये जनता ने ही चुना है। भाजपा सरकार पर संसद में रवैया बहुत एकपक्षीय और मनमाना होने का आरोप भी निराधार साबित होना चाहिए। न्यूसेन्स में जैसे कोई आधार नहीं होता, कोई तथ्य नहीं होता, कोई सच्चाई नहीं होती तो दूसरों के लिए खोदे गए खड्डों में स्वयं एक दिन गिर जाने की स्थिति बन जाती है। ■

योगी ने ज्ञानवापी पर जो कुछ कहा है

उससे भाजपा को सियासी फायदा होगा या नुकसान?

मुख्यमंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि मुझे लगता है कि भगवान ने जिसे दृष्टि दी है वो देखे ना। त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा है। हमने तो नहीं रखे न। ज्योर्तिलिंग हैं देव प्रतिमायें हैं। पूरी दीवारें चिल्ला-चिल्ला के क्या कह रही हैं।

अजय कुमार

क्या ज्ञानवापी मंदिर-मस्जिद विवाद का नतीजा आने से पूर्व भारतीय जनता पार्टी ने मांइड गेम शुरू कर दिया है। सवाल उठ रहा है कि कहीं बीजेपी इस विवाद के निपटारे का श्रेय अदालत की जगह अपने आप को देने के लिए तो उतावली नहीं है? ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि जब तीन अगस्त को ज्ञानवापी विवाद निपटारे के लिए एक महत्वपूर्ण फैसला आने वाला हो, उससे पूर्व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यदि यह कहें कि ज्ञानवापी प्रकरण में ऐतिहासिक गलती को सुधारने के लिए मुसलमान आगे आएं तो साफ है कि योगी एक तीर

से कई निशाने साधना चाहते हैं। कुछ लोगों को लगता है कि उन्हें सीएम की कुर्सी पर रहते ऐसे बयानों से बचना चाहिए। खैर, यह सच है कि योगी अपनी साफगोई के लिए जाने जाते हैं, लेकिन ज्ञानवापी पर उनका बयान साफगोई तक सीमित नहीं है। योगी के बयान की टाइमिंग पर लोग सवाल खड़े कर रहे हैं। कुछ उनके साथ हैं तो काफी लोग उनके बयान की मुखालफत भी कर रहे हैं। सवाल तो यहां

तक उठ रहे हैं कि यूपी सरकार के मुखिया ज्ञानवापी मुकदमे का फैसले को प्रभावित करने की कोशिश तो नहीं कर रहे हैं या फिर योगी का फोकस अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव पर है वह हिन्दू वोटों का ध्रुवीकरण करना चाहते हैं।

मुख्यमंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि मुझे लगता है कि भगवान ने जिसे दृष्टि दी है वो देखे ना। त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा है। हमने तो नहीं रखे न। ज्योर्तिलिंग हैं देव प्रतमियें हैं। पूरी दीवारें चिल्ला चिल्ला के क्या कह रही हैं। इतना ही नहीं मुख्यमंत्री ने यहां तक कहा कि उन्हें (योगी) लगता है ये प्रस्ताव मुस्लिम समाज की ओर से आना चाहिए कि साहब ऐतिहासिक गलती हुई है। उसके लिए हम चाहते हैं समाधान हो। गौरतलब है कि ज्ञानवापी विवाद में याचिका अंजुमन इस्लामिया मस्जिद कमेटी (एआईएमसी) द्वारा दायर की गई थी, जो मस्जिद का प्रबंधन करती है। समिति ने पूजा स्थल अधिनियम, 1991 का हवाला देते हुए मामले की स्थिरता पर सवाल उठाया है। अधिनियम के अनुसार, 15 अगस्त 1947 को मौजूद पूजा स्थल के धार्मिक चरित्र में परिवर्तन निषिद्ध है। 1991 पूजा स्थल अधिनियम की तरह, इस मामले की जड़ें भी वर्ष 1991 में हैं। मामले में पहली याचिका स्वयंभू ज्योर्तिलिंग भगवान विश्वेश्वर ने 1991 में वाराणसी अदालत में दायर की थी। याचिका में ज्ञानवापी परिसर में पूजा करने के अधिकार की मांग की गई थी। बहरहाल, योगी के ज्ञानवापी विवाद पर बयान के बाद इसका विरोध भी शुरू हो गया है। सीएम योगी के बयान पर अब विपक्ष की ओर से भी प्रतिक्रिया आने लगी है। मुरादाबाद से समाजवादी पार्टी के सांसद डॉ. एसटी हसन का बड़ा बयान इस मुद्दे पर आया है। हसन का कहना है ज्ञानवापी विवाद के जरिए उन्होंने देश की 3000 मस्जिदों पर चल रहे विवाद का मुद्दा छेड़ दिया। सपा सांसद ने सीएम योगी को सलाह दी कि यह मुद्दा ठहरा हुआ पानी है। अगर इसमें लाठी मारी गई तो हलचल होगी। देश के हित में इस प्रकार के विवादों से बचने की सलाह देते सपा सांसद दिखे।

उधर संभल से सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने दावा किया है कि मुसलमानों से कोई गलती नहीं हुई और ज्ञानवापी पर कानूनी हक भी उन्हीं का है। उन्होंने आरोप लगाया कि जबरदस्ती ज्ञानवापी को मंदिर बताया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वहां कोई त्रिशूल नहीं था, न तो ऐसा कुछ मिला है और न ही हम ऐसा मानते हैं। शफीकुर्रहमान बर्क ने कहा कि मुसलमानों से कोई गलती नहीं हुई और न ही मुसलमानों ने झगड़े किए। इन्हीं लोगों ने छेड़छाड़ करके जबरदस्ती मंदिर कहना शुरू कर दिया लेकिन आज हम अपनी आस्था के हिसाब से मस्जिद मानते हैं तो इन्हें क्या ऐतराज है। उन्होंने यह भी दावा किया कि ज्ञानवापी में कोई त्रिशूल नहीं था, हम तो ऐसा नहीं मानते और न ही वहां ऐसा कुछ मिला है। शफीकुर्रहमान ने आगे कहा कि देश के अंदर कानून मौजूद है, लोकतंत्र है, देश में सबको हर मजहब वाले को अपने अपने मजहब पर रहने और अपनी बात कहने का हक दिया गया है। दूसरों को भी जीने का मौका दीजिए। उनके साथ इस किस्म का जुल्म ज्यादती करना गलत है। कुल मिलाकर योगी के ज्ञानवापी विवाद पर बयान के बयान दो पक्ष आमने समाने आ गए हैं, एक योगी की साफगोई से खुश है तो दूसरा वर्ग इसे कोर्ट में दखलंदाजी मान रहा है। सवाल यह भी उठ रहा है कि जब मोदी टीम और बीजेपी मुसलमानों को अपने साथ जोड़ने के लिए स्नेह यात्रा जैसे कार्यक्रम चला रही है। पार्टी में मुस्लिम नेताओं को महत्वपूर्ण पदों पर बैठाया जा रहा है। मुसलमानों का विश्वास जीतने के लिए उनको तमाम सरकारी योजनाओं में बराबर की भागेदारी दी जा रही है, ऐसे समय में योगी का बयान कहीं दिल्ली का खेल बिगाड़ तो नहीं देगा। राजनीति के कुछ जानकार तो यहां तक कह रहे हैं कि योगी के इस बयान से 2024 के लोकसभा चुनाव में फायदे की जगह नुकसान ही उठाना पड़ेगा। इस तरह

वैसे कुछ लोगों को यह भी लगता है कि योगी प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था से परेशान हैं, विकास के कार्य भी गति नहीं पकड़ पा रहे हैं, सड़कों का बुरा हाल है, बेरोजगारी और महंगाई सुरसा की तरह मुंह फैलाए हुए हैं, इसलिए लोगों का ध्यान इन सब समस्याओं से हटाने के लिए यह बयान दिया गया है।

के बयानों से मुसलमान वोटों का एक बार फिर से बीजेपी के खिलाफ किसी भी एक पार्टी के पक्ष में वोटों का ध्रुवीकरण हो सकता है। अब देखना यह है कि केन्द्र और संघ योगी के बयान को किस तरह से लेता है। वैसे कुछ लोगों को यह भी लगता है कि योगी प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था से परेशान हैं, विकास के कार्य भी गति नहीं पकड़ पा रहे हैं, सड़कों का बुरा हाल है, बेरोजगारी और महंगाई सुरसा की तरह मुंह फैलाए हुए हैं, इसलिए लोगों का ध्यान इन सब समस्याओं से हटाने के लिए यह बयान दिया गया है। ■

यूपी में भाजपा नये-नये सहयोगी दलों को तो साथ ले रही है

मगर सीटें कैसे बाँटेगी?

अजय शर्मा

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी तो अपना कुनबा बढ़ाती जा रही है, लेकिन उसके सामने समस्या यह है कि समझ नहीं पा रहा है कि गठबंधन के बाद सीटों के बंटवारे के मामले में वह अपने सहयोगियों को कैसे संतुष्ट करे। उसके सहयोगी लोकसभा की सीटों को लेकर उम्मीद से अधिक की दावेदारी कर रहे हैं। बीजेपी की पुरानी सहयोगी पार्टी अपना दल पांच सीटों के लिए दावा कर रही है तो निषाद पार्टी के दावे इससे भी बड़े हैं। उनकी बातों से लगता है कि वह भी चार-पांच सीटों के लिए अपना दावा पेश कर रहे हैं। वहीं सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के ओमप्रकाश राजभर की भी लोकसभा सीटों को लेकर अपनी उम्मीदें हैं। बीजेपी ओमप्रकाश राजभर को संतुष्ट करने के लिए उन्हें योगी सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार में जगह दे सकती है, वहीं उनके लड़के को लोकसभा का टिकट मिल सकता है। इसके अलावा भी ओम प्रकाश राजभर को दो से तीन लोकसभा सीटें मिलने की उम्मीद है।

भाजपा के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मत्स्य मंत्री डॉ. संजय निषाद कहते हैं कि उनकी निषाद पार्टी देशभर में 37 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार है। संजय निषाद अपने सिंबल पर ही चुनाव लड़ने का दावा कर रहे हैं। उन्होंने बीजेपी आलाकमान से मांग की है कि भाजपा 2019 के चुनाव में जिन सीटों पर हारी थी वो सभी हमें दे दे। हम उन्हें जीतकर दिखा देंगे। निषाद पार्टी उत्तर प्रदेश के अलावा दूसरे राज्यों में भी विस्तार कर रही है जिससे पार्टी को मजबूती मिलेगी और भविष्य में पार्टी दूसरे राज्यों में भी चुनाव लड़ेगी। पार्टी अध्यक्ष संजय निषाद ने बताया कि बीते दिन वह छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के दौरे पर थे। वहां पार्टी के विस्तार को लेकर निषाद पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की, साथ ही निषाद पार्टी द्वारा आयोजित केवट सम्मेलन में भी शिरकत की।

उधर, सूत्रों के मुताबिक अपना दल की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने भाजपा नेतृत्व के सामने कम से कम पांच सीटों पर दावेदारी पेश की है। इनमें से मिजार्पुर से खुद अनुप्रिया सांसद हैं। इसके अलावा प्रतापगढ़, अंबेडकरनगर, फतेहपुर और जालौन सीट की भी मांग की गई है। पार्टी का मानना है कि जब 6 व 8 विधायकों वाले दूसरे सहयोगियों को दो से तीन सीटें देने की बात हो रही है तो 13 विधायकों वाले अपना दल को तो कम से कम पांच सीट मिलनी ही चाहिए। अपना दल इस बार सोनभद्र सीट भी बदलना चाहता है। 2019 में यह सीट अपना दल के कोटे में दी गई थी और इस पर पकौड़ी लाल कोल सांसद हैं। अगर ऐसा हुआ तो कोल चुनाव मैदान से बाहर हो जाएंगे। पार्टी नेतृत्व सोनभद्र के स्थान पर बुंदेलखंड की कोई कुर्मी बहुल सीट लेना चाहता है। वैसे पार्टी की पहली पसंद जालौन है। इसके अलावा पार्टी की दावेदारी प्रतापगढ़ पर भी है। यह सीट 2014 में अपना दल के ही पास थी, लेकिन 2019 में इस सीट को भाजपा ने वापस ले लिया था और इस सीट पर अपना दल के ही विधायक संगमलाल गुप्ता को चुनाव लड़ाया था। इस बार इसी सीट पर फिर से दावेदारी है। बताते हैं कि 18 जुलाई को दिल्ली में भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के साथ हुई बैठक पार्टी की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने सीटों को लेकर अपनी दावेदारी कर दी है, लेकिन अभी तक उस पर फैसला नहीं हुआ है। अनुप्रिया ने भाजपा नेताओं से यह भी अनुरोध किया है कि इस बार लोकसभा चुनाव में सीटें तय करते हुए उनके दल के विधायकों की संख्या बल का भी ध्यान रखा जाए। यानि दूसरे सहयोगी दलों से उन्हें अधिक सीट मिलनी चाहिए। उनके प्रस्ताव पर भाजपा ने हामी भी भरी है, लेकिन अपना दल को कितनी सीटें मिलेंगी, यह बाद में साफ होगा। ■

भाजपा के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मत्स्य मंत्री डॉ. संजय निषाद कहते हैं कि उनकी निषाद पार्टी देशभर में 37 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार है।

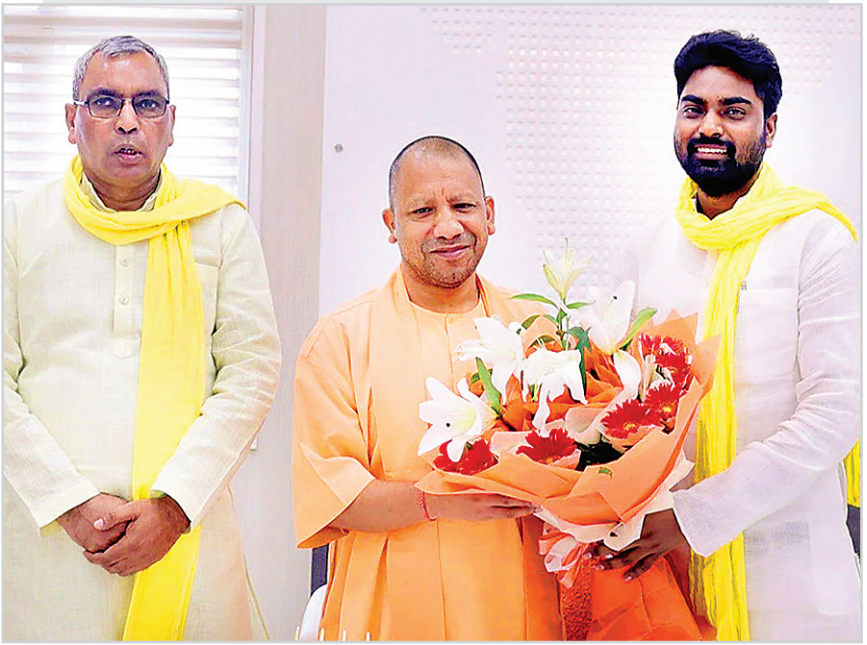

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

राहुल ने जो अमेठी सीट गँवाई थी, उसे कांग्रेस की झोली में वापस डालने के लिए

खुद लड़ सकती हैं प्रियंका

कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी पिछले चार लोकसभा चुनाव से रायबरेली से सांसद हैं। पिछले दिनों उनके सियासत से संन्यास लेने की चर्चा शुरू हो गई, लेकिन पार्टी के नेता इस चर्चा को एक सिरे से खारिज कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के लिए बंजर मरुस्थल बन गया है। अब यहां ना कांग्रेस की सीटें आती हैं, ना वोट मिलता है। स्थिति यह है कि कांग्रेस यूपी में सोनिया गांधी की एक मात्र रायबरेली संसदीय पर सिमट गई है। कहने को तो गांधी परिवार से ताल्लुक रखने वाली मेनका गांधी और वरूण गांधी भी यूपी से सांसद हैं, लेकिन वह कांग्रेस की जगह भारतीय जनता पार्टी से चुने गए हैं।

यूपी की राह आसान नहीं

पश्चिम बंगाल में टीएमसी की ममता बनर्जी, दिल्ली में अरविंद केजरीवाल, आंध्र प्रदेश में वाईएसआर सीपी के वाईएस जगन मोहन रेड्डी, तमिलनाडु में एमके स्टालिन की पार्टी डीएमके और जम्मू-कश्मीर में पीडीपी और नेशनल कांफ्रेंस दोनों ही मुस्लिम वोट कांग्रेस से बांटने का काम करती हैं। लब्बोलुआब यह है कि कांग्रेस के लिए यूपी में तभी राह आसान हो सकती है जब उसका पुराना वोट बैंक वापस आता है, जो होता दिख नहीं रहा है, ऐसे में उसे समाजवादी पार्टी से गठबंधन से ही यूपी में सियासी जीवनदान मिल सकता है। समाजवादी पार्टी 10 से लेकर 15 सीटें तक कांग्रेस के लिए छोड़ सकती है।

स्वदेश कुमार

कांग्रेस से यूपी दूर हुआ तो दिल्ली भी दूर होते देरी नहीं लगी। कभी कांग्रेस का मजबूत वोट बैंक समझा जाने वाले दलित-अगड़े-पिछड़े और मुसलमान वोटर भाजपा और क्षेत्रीय दलों सपा-बसपा के बीच बंट गए हैं। इसी के साथ गांधी परिवार के लिए यूपी गले की फांस बन गया है ना वह इसे निगल पा रही है ना ही उगलते बन रहा है। वैसे कुछ लोग यह भी कहते हैं यूपी में जिस कांग्रेस को राहुल गांधी ने डुबोया है, उसे प्रियंका गांधी फिर से जीवनदान देंगी। सवाल कैसे तो, कहा जा रहा है कि समाजवादी पार्टी से गले मिलकर। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस एक ही गठबंधन का हिस्सा हो गए हैं और अगले वर्ष होने वाला लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ेंगे, इससे कांग्रेस को अच्छा खासा फायदा हो सकता है। कांग्रेस जो रायबरेली तक सिमट गई है, वह एक बार फिर अमेठी को जीतना चाहती है। 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी यहां से बीजेपी प्रत्याशी स्मृति ईरानी से चुनाव हार गए थे।

कांग्रेस करीब तीन दशकों से यूपी में उभार की उम्मीद लगाए बैठी है, लेकिन उसके हालात सुधरने की बजाए बिगड़ते जा रहे हैं। आज की तारीख में तो न उसके पास संगठन बचा है और न नेता एवं वोटर। इसके लिए कौन जिम्मेदार है की बात चलती है तो गांधी परिवार ही कुसूरवार लगता है, लेकिन यह बात कहने की हिम्मत पार्टी का कोई छोटा या बड़ा नेता कभी जुटा नहीं पाया। यही वजह है कि कांग्रेस यूपी में गर्दिश में चली गई है। अब कहा जा रहा है कि कांग्रेस के गर्दिश के दिनों को कांग्रेस की महासचिव प्रियंका वाड्रा गांधी दूर करेंगी। कांग्रेसी कह रहे हैं कि भले ही 2022 के विधान सभा चुनाव में यूपी की प्रभारी रहते हुए प्रियंका वाड्रा कुछ खास नहीं कर पाई हों, लेकिन अब हालात बदल गए हैं। प्रियंका ने जिस तरह से कांग्रेस को कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में सत्ता दिलाई है, वैसे ही यूपी से दिल्ली के लिए भी वह रास्ता बनायेंगी। उत्तर प्रदेश की सियासी नब्ज पर नजर रखने वाले कहते हैं कि प्रियंका के प्रति जनता में आकर्षण है। वह हिमाचल, कर्नाटक के बाद मध्य प्रदेश में सक्रिय हैं। जहां भी प्रियंका की जनसभा होती है, लोग उनकी बात को गौर से सुनते हैं। ऐसे में प्रियंका के जरिए पार्टी उत्तर प्रदेश में फिर से खुद को खड़ा कर सकती है। पिछले दिनों प्रियंका ने कहा भी था कि राष्ट्रीय अध्यक्ष का आदेश होगा तो वह अमेठी या कहीं से भी चुनाव लड़ेंगी। प्रियंका अभी चुनावी राज्यों में निरंतर सक्रिय हैं। उम्मीद है कि देर सबेर वह उत्तर प्रदेश में सक्रियता बढ़ाएंगी। लोग प्रियंका गांधी के अंदर उनकी दादी की छवि देखते हैं। उनकी सिर्फ शक्ल ही अपनी दादी से नहीं मिलती बल्कि उनके काम करने का अंदाज भी कुछ वैसा ही है, कांग्रेस की स्टार प्रचारक प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश से लोकसभा के सियासी संग्राम में उतर सकती हैं। जबकि कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के रायबरेली से चुनाव लड़ने की संभावना अभी खत्म नहीं हुई है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी रायबरेली व अमेठी में पूरी शिद्दत से जुट गई हैं। गांधी परिवार के लिए अन्य संभावित सीटों पर भी गुणा-गणित शुरू हो गया है। गौरतलब है कि कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी पिछले चार लोकसभा चुनाव से रायबरेली से सांसद हैं। पिछले दिनों उनके सियासत से संन्यास लेने की चर्चा शुरू हो गई, लेकिन पार्टी के नेता इस चर्चा को एक सिरे से खारिज कर रहे हैं। क्योंकि विधानसभा चुनाव में भले ही रायबरेली के वोटर दूसरे दलों की ओर कदम बढ़ा दें, लेकिन लोकसभा में कांग्रेस के प्रति पूरी तत्परता दिखती है। ऐसे में पार्टी रायबरेली से सोनिया गांधी को उम्मीदवार मानकर चल रही है। फिर भी अपरिहार्य स्थिति में सोनिया गांधी ने चुनाव लड़ने से इंकार किया तो यहां से प्रियंका गांधी उम्मीदवार होंगी। इसी तरह राहुल गांधी का मामला कोर्ट में होने की वजह से प्रियंका को अमेठी से भी दावेदार बनाया जा सकता है। खैर, लाख टके का सवाल यही है कि यह सब होगा कैसे? कांग्रेस अपना वोट बैंक कैसे वापस लायेगी? अभी तक तो मुस्लिम वोटों के लिए सपा-बसपा ही ताल ठोका करते थे, अब तो बीजेपी भी मुस्लिम वोटों की राजनीति में हाथ अजमा रही है। उत्तर प्रदेश में हुए उपचुनाव में बीजेपी ने मुस्लिम बाहुल्य सीटें होने के बावजूद जीत दर्ज कर सबको चौंका दिया। आजम खान के गढ़ रामपुर में 50 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम हैं। इसके बावजूद बीजेपी ने जीत दर्ज की। वहीं आजमगढ़ जो कभी मुलायम सिंह गढ़ था, वहां मुस्लिम-यादव समीकरण 40 प्रतिशत से अधिक होने के बाद भी बीजेपी ने जीत हासिल करके यह साबित कर दिया मुस्लिम वोट एकजुट होने का भी उसे ही फायदा मिलता है। बात कांग्रेस की कि जाए तो मुस्लिम वोटरों में कांग्रेस का ग्राफ 15वीं और 16वीं लोकसभा में स्थिर रहा। 2009 और 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस का मुस्लिम वोट एक समान 38 प्रतिशत ही रहा। हालांकि इसके पहले 1998 में 32 प्रतिशत, 1999 में सर्वाधिक 40 फीसद और 2004 में गिरकर 36 प्रतिशत पर आ गया था। कांग्रेस को उन राज्यों में मुस्लिम वोट बैंक का अधिक नुकसान उठाना पड़ता है जहां तथाकथित क्षेत्रीय सेक्युलर पार्टियां प्रभावशाली होती हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, असम, जम्मू-कश्मीर और तेलंगाना में मजबूत क्षेत्रीय पार्टियों के कारण मुस्लिम वोट एकतरफा कांग्रेस को नहीं मिल पाता। यहां पर मुस्लिम वोट, धार्मिक, भाषा, क्षेत्रीय आधार पर बंट जाते हैं। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव मुस्लिमों के नेता हैं। बिहार में आरजेडी के नेता लालू प्रसाद यादव मुस्लिमों के मसीहा हैं। ■

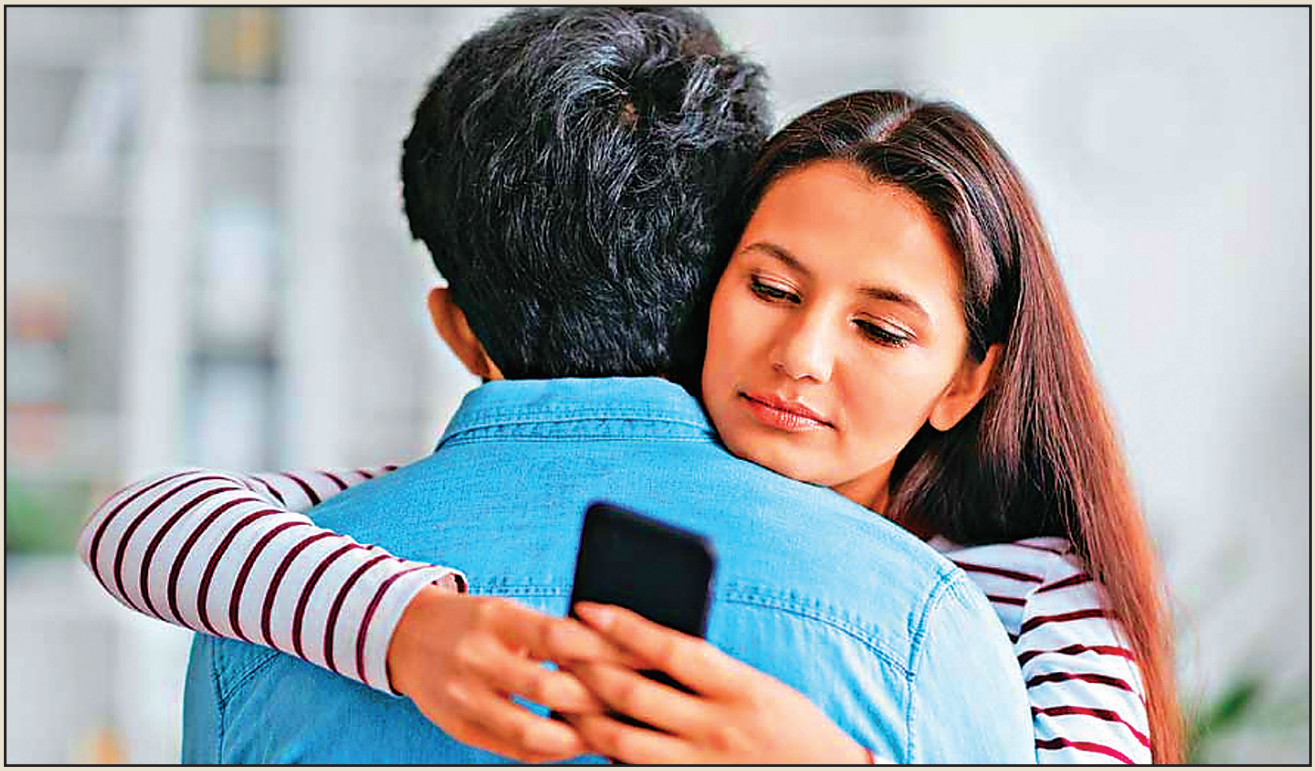

डेटिंग ऐप: बेवफाई का बाजार

वर्जनाएं तोड़ने की ललक, नई-नई जिज्ञासाएं और दमित इच्छाओं की पूर्ति का सहज साधन उपलब्ध कराने के वादे के साथ डेटिंग ऐप का बाजार अब कस्बों और दूर-दराज के इलाकों तक फैला

अफसाना नया नहीं है। नया कुछ है तो बस आधुनिक बाजार की पैठ। विवाह, विवाहेत्तर रिश्ते, सुख की विविध आकांक्षाएं, वफा-बेवफाई तो शायद अनादिकाल से हैं। दुनिया भर के साहित्य, प्राचीन ग्रंथ, महाकाव्य, पौराणिक कथाओं में अनेक तरह के किस्से हमारी याददाश्त का हिस्सा हैं। शायद किसी भी दौर और किसी भी समाज में तमाम तरह की मानव-प्रवृत्तियां सक्रिय रहती हैं, लेकिन ये सब व्यक्तिगत मामले रहते आए हैं। हाल के दौर में रिश्तों की तलाश के व्यावसायीकरण की थोड़ी-बहुत या छोटे-मोटे धंधे का एक नजारा उत्तर भारत के शहरों और रेललाइनों के किनारे दीवार पर लिखे में देखा जा सकता था कि, एक बार मिल तो लें।

आकांक्षा पारे काशिव

अब कई डेटिंग ऐप ने इसे बाकायदा संगठित कारोबार और बाजार की शक्ल दे दी है। ये ऐप बाजार बनाने की तमाम मार्केटिंग रणनीतियां अपना रहे हैं और दबी-छुपी लालसाओं, वासनाओं के लिए मौका मुहैया करा रहे हैं। विवाहितों के लिए बने डेटिंग ऐप्स उन लोगों के लिए भी नए दरवाजे खोल रहे हैं, जिन्हें अब तक शादी 'निभाने' की बात लगा करती थी। यह पेशकश भी है कि बिना मिले सिर्फ बात या चैट करके (सेक्सटिंग) भी संतुष्टि पा सकते हैं। ये ऐप इंटरनेट और स्मार्टफोन के दौर में महानगरों से आगे छोटे शहरों और कस्बों तथा दूर-दराज के इलाकों में बाजार तलाश रहे हैं। कुछेक दावों को मानें तो दूसरे-तीसरे दर्जे के शहरों में विवाहेत्तर सेक्स इच्छाओं की पूर्ति का आकर्षण तेजी से बढ़ रहा है।

आजाद चाहतें

विवाहित लोगों के लिए बनाई गई डेटिंग ऐप ग्लीडेन का दावा है कि फिलहाल 20 लाख लोग उसके एक्टिव यूजर हैं। ग्लीडेन ने हाल में एक सर्वेक्षण के जरिये दावा किया है कि महानगरों (टीयर-1) में 58 फीसदी लोगों ने विवाहेत्तर संबंधों की बात कबूली जबकि टीयर-2, 3 शहरों में 56 फीसदी लोग इसके हक में हैं। कथित तौर पर 1500 लोगों का यह सर्वे देश के 12 शहरों में किया गया है। ग्लीडेन की भारत में कंट्री मैनेजर सिबिल शिडेल के मुताबिक, महिलाओं द्वारा खास तौर से महिलाओं के लिए बनाए गए इस ऐप ने छोटे शहरों को भी वह आजादी दी जिसके बारे में खुद उन्होंने सोचा नहीं था। यह अलग बात है कि ग्लीडेन के पहले भी एक रिपोर्ट के अनुसार ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स के प्रयोग के मामले में भारत शीर्ष पांच देशों में शामिल था। ग्लीडेन के सर्वे की खास बात यह है कि मझोले और छोटे शहरों में इसका आकर्षण बढ़ रहा है। दूसरा चौंकाने वाला संकेत यह है कि विवाहेत्तर या एकाधिक संबंधों के आकर्षण के मामले में महिलाएं लगभग पुरुषों के बराबर हैं। संभव है, यह मार्केटिंग रणनीति का हिस्सा हो या फिर रिश्तों की चाहत के मामले में वर्जनाएं तेजी से टूट रही हों।

बदला है नज़रिया

बेशक, वर्जनाएं पहले से टूटी हैं लेकिन ग्लीडेन जैसे ऐप कुछ और पेशकश करते हैं। जैसा कि सिबिल शिडेल कहती हैं, सेक्स रहित विवाह में रहकर तनाव पालने के बजाय कुछ ऐसा करें कि रिश्ते को वापस बनाने और आगे बढ़ाने पर ध्यान दे सकें। यानी ये ऐप इस ओर इशारा करते हैं कि अच्छी शादी में भी ऊब और नतीजतन बेवफाई की गुंजाइश संभव है। लेकिन इसमें इजाफे की बात मात्र एक छोटे-से सर्वे के आधार पर कह पाना संभव नहीं लगता। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रियंवद की मानें, तो यह कोई बीमारी थोड़ी है जो कह सकें कि आजकल बेवफाई बढ़ रही है। यह तो व्यक्तिगत स्वभाव है। जिसकी फितरत में बेवफाई होगी, वह चाहे अमेरिका में रहे या अमरोहा में, करेगा वह वैसा ही। शायद बेवफाई अलग रोमांच और दिलचस्पी जगाती है। बॉलीवुड का भी यह पसंदीदा विषय रहा है। लेकिन ये ऐप अब चिट्ठियां लिख कर, आंखों के इशारों से बतियाने या चोरी-छुपे मिलने की झंझट को हाइटेक बना रहे हैं। इन पर शादी के बाद किसी भी कारण से साथी से संतुष्ट न होने पर निजता के खयाल के साथ किसी अपने जैसे को खोजा जा सकता है। ग्लीडेन खुद भरोसा देता है कि यहां शादीशुदा लोग जो सदस्य बनते हैं, उनकी निजता का पूरा खयाल रखा जाता है। ग्लीडेन ने नई तकनीक विकसित की है जो उसके सदस्यों को सुरक्षित माहौल देने का वादा करता है, जहां वे अपनी खास दोस्तियों को खाद-पानी दे सकें। विश्वासघात से टूटा आदमी अब तुरंत कहीं जुड़ (कनेक्ट) जाता है। टूटे हुए बहुत से लोग ऐप्स पर जुड़ने की प्रतीक्षा सूची में रहते हैं। नए रास्तों को तलाशने वालों के लिए यह तकनीक वरदान की तरह है और उसने उन्हें सुविधाजनक माहौल दिया है। एक साथी के छूट जाने के बाद नए साथी की तलाश नई उम्मीद की तरह हो सकती है, शायद इसी वजह से आजकल अपने प्रोफाइल को बढ़ा-चढ़ा कर बनाना, शानदार तस्वीर खिंचवा कर पोस्ट करना और खुद को इतना प्रेम करने वाला, देखभाल करने वाला बताना आम होता जा रहा है। दरअसल 'मूव ऑन' पीढ़ी ने रिश्ते टूटने या जुड़ने के तनाव को एक झटके में दूर फेंक दिया है। सिर्फ शादीशुदा लोगों के लिए बाजार में उतारे गए ग्लीडन ऐप का दावा है कि उनके यहां प्रोफाइल सिलेक्शन पॉलिसी बहुत सख्त है, वे लोग केवल वास्तविक लोगों को ही मंच मुहैया कराते हैं। किसी भी तरह के फेक प्रोफाइल को हर वक्त निगरानी कर रही टीम हटा देती है। सबसे दिलचस्प तो इसमें यह है कि यह महिलाओं के नजरिये से बनी ऐप है। इसे महिलाएं ही चलाती हैं। इसलिए जब कोई भावनाओं के भंवर में फंस जाए, तो उसे बस अपने स्मार्टफोन से ऐसा जादुई ऐप डाउनलोड कर लेना है, जो उसके प्रेम की व्याख्या को दूसरे के दिल तक सीधे पहुंचा दे। यहां न सामने मिलने वाली घबराहट है, न कोई हदबंदी, न पहली नजर का जुनून, सो जितने लोगों से चाहे चैट कीजिए और फिर एक दिन बेकाबू धड़कनों के साथ कहीं मिल कर जो चाहे कीजिए।

दिल में नहीं, मोबाइल में जगह

भारत में शादीशुदा लोगों के लिए बने पहले डेटिंग ऐप ग्लीडेन ने जिस तरह यहां के लोगों के मोबाइल में जगह बनाई, उसे भले कुछ लोग हजम न कर पाएं, लेकिन सच्चाई तो यही है कि शादी से उपजी ऊब इसमें बड़ी भूमिका निभाती है। अब दिल में उसी के लिए जगह है जिसके लिए मोबाइल में जगह है। अब व्यक्ति दिल से बाद में उतरता है, मोबाइल पर पहले ब्लॉक हो जाता है। अब दैहिक स्पर्श टचस्क्रीन के स्पर्श के जरिये मिल जाता है। विवाहेतर संबंधों के बढ़ने की वजह यह हो सकती है कि घर में, सफर में, दफ्तर में, जहां चाहे वहां बैठ कर किसी से भी संपर्क साधा जा सकता है। इंटरनेट ने यह आजादी तो दी ही है कि जो मन करे वह देखो, सुनो। जो लोग लिख-पढ़ नहीं पाते, वे वॉइस सर्च से जो चाहे खोज सकते हैं। ऐसे में कोई ऐप का विज्ञापन सामने आ जाए, तो उत्सुकता में उस पर क्लिक होगा ही। एक बार आप उस पर गए तो यूजर की संख्या में तुरंत इजाफा हो जाएगा। कस्बे भी अब आधुनिकता की दौड़ में हैं। विवाहेत्तर संबंध रखना यहां अब साथी को धोखा देना नहीं रह गया है। ऐसे में ग्लीडेन जैसे ऐप उनके लिए सोने पर सुहागा हैं। घोषित रूप से विवाहित लोगों के लिए बने इस ऐप का दावा भी है कि यह लोगों को बहुत विश्वसनीय ढंग से जोड़ता है और व्यक्तिगत सूचनाएं लीक नहीं होतीं। यहां आप अपनी शादीशुदा जिंदगी का दिल से विस्तृत ब्यौरा बिना इस डर के दे सकते हैं कि यह कोई और न जान ले।

क्यों बदली तासीर

विवाह को पवित्र बंधन मानने वाले भारतीय समाज में इस बंधन के बाहर का कोई भी रिश्ता अस्वीकार्य है। बड़े शहरों में स्वीकृति की परवाह किसे थी, सो महानगरों ने इसे खुले दिल से भले ही न स्वीकारा लेकिन लानतें भी नहीं भेजी गईं। ऐसा नहीं था कि कस्बे और गांव विवाह की पवित्र भावनाओं से भरे थे और किसी और से संबंध रखने को महापाप मानते थे, लेकिन ग्लीडेन ऐप के आंकड़े बताते हैं पिछले तीन साल में खासकर कोविड महामारी के बाद आश्चर्यजनक रूप से भोपाल, गुरुग्राम, वडोदरा, नवी मुंबई, कोच्चि, ठाणे, देहरादून, पटना, नासिक और गुवाहाटी जैसे टीयर 2 शहरों में रिश्ते में रहते हुए रिश्ते खोजने वालों की बाढ़ सी आ गई है। महामारी में जब आवागमन के साधन बंद थे, दफ्तरों की जगह घर से काम हो रहा था, मिलने-जुलने पर पाबंदी थी, तब वर्चुअल डेटिंग ने अपने पैर पसार लिए और मोबाइल देवता की कृपा से नगर, महानगर, मझोले या छोटे शहर, कस्बों और गांव के बीच की दूरी मिट गई। कुछ लोग लॉकडाउन के चलते, तो कुछ नौकरी छूट जाने की वजह से बड़े शहर छोड़ छोटे शहर या कस्बों में अपने घरों को लौट आए और उन लोगों के साथ आई ऐप की रंगीन दुनिया। यह बढ़ता आंकड़ा तब है जब ग्लीडेन के ही अनुसार भारत अब भी सबसे कम तलाक वाला देश है। हमारे यहां प्रति 1000 में से 13 लोग ही शादी तोड़ते हैं। यहां 90 फीसदी शादियां अब भी परिवार वाले ही तय करते हैं और 100 में से 5 ही जोड़े ऐसे हैं, जो प्रेम के लिए शादी करते हैं। तो क्या इसका दूसरा अर्थ यह निकाला जाए कि अब शादी से बाहर के संबंधों पर पाप की भावना हावी नहीं होती? ग्लीडेन का सर्वे बताता है कि 67 फीसदी लोगों का मानना है कि उन्हें मौका मिले तो वे भी एक बार किसी और के साथ जाना चाहेंगे। जाहिर है, इसमें दैहिक आकर्षण प्रमुख होता है। प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रियंवद कहते हैं, देह के साथ प्रेम हो यह जरूरी नहीं है मगर प्रेम के साथ देह का होना जरूरी है। बिना प्रेम के देह-संबंध बनाना बहुत आसान है। बाजार में लाखों संबंध रोज बनते हैं। वैसे प्रेम देह के बिना भी संभव है लेकिन उसकी संपूर्णता देह के साथ ही आती है। ■

चिंताजनक

आगे बढ़ता भारत आखिर महिलाओं और बच्चियों की रक्षा क्यों नहीं कर पा रहा है?

विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर एवं दुनिया की तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था का दावा करने वाले देश की महिलाएं मध्ययुग से भी ज्यादा सामंती सोच, असंवेदना, असुरक्षा, हिंसा, वीभत्स अपराधों और हवस की शिकार बन रही हैं।

आदर्श नंदन गुप्ता

मणिपुर में 19 जुलाई को दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने का वीडियो वायरल हुआ था, उस घटना ने देश-विदेश के सभ्य समाजों को झकझोर दिया है। अब ऐसी ही एक घटना पश्चिम बंगाल के मालदा में सामने आई है। यहां भीड़ ने दो महिलाओं की पिटाई की, फिर उन्हें अर्धनग्न कर दिया गया। यह घटना मालदा के बामनगोला पुलिस स्टेशन के पाकुआ हाट इलाके में हुई। दोनों पीड़ित महिलाएं आदिवासी हैं। जब उनकी पिटाई हो रही थी और कपड़े उतारे जा रहे थे तो पुलिस वहां मूकदर्शक बनी खड़ी हुई थी। बात केवल आदिवासी महिलाओं की नहीं है, बात केवल महिलाओं पर हो रहे अपराधों, यौन-उत्पीड़न, बलात्कार, हिंसा की भी नहीं है, बल्कि अधिक विचलित करने वाली बात महिलाओं एवं बच्चियों के लापता होने की है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की ओर से संकलित आंकड़ों के अनुसार 2019 से 2021 के बीच यानी मात्र तीन

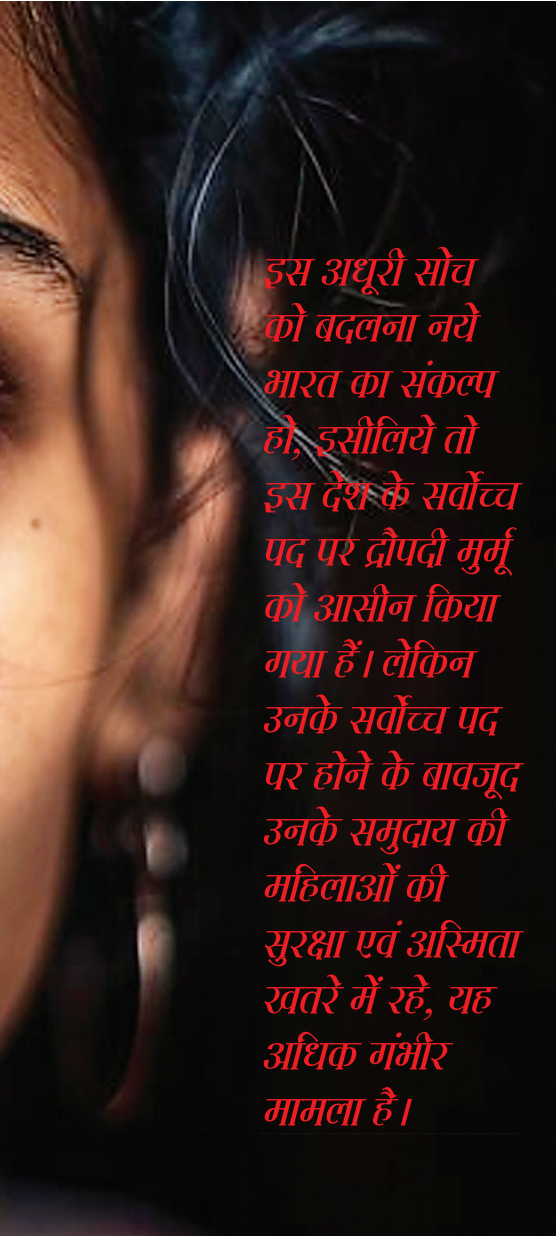

इस अधूरी सोच को बदलना नये भारत का संकल्प हो, इसीलिये तो इस देश के सर्वोच्च पद पर द्रौपदी मुर्मू को आसीन किया गया हैं। लेकिन उनके सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद उनके समुदाय की महिलाओं की सुरक्षा एवं अस्मिता खतरे में रहे, यह अधिक गंभीर मामला है।

वर्षों में देश भर में 13 लाख से अधिक लड़कियां और महिलाएं लापता हुई हैं। इन लापता होने वाली लड़कियों और महिलाओं में दलित, आदिवासी जनजाति की संख्या ज्यादा है। एक आदिवासी महिला के देश के राष्ट्रपति होने के बावजूद महिलाओं पर बढ़ते अपराध एवं लापता होने की घटनाएं अधिक चिन्ता का सबब है। विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर एवं दुनिया की तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था का दावा करने वाले देश की महिलाएं मध्ययुग से भी ज्यादा सामंती सोच, असंवेदना, असुरक्षा, हिंसा, वीभत्स अपराधों और हवस की शिकार बन रही हैं। आज जब देश में हर मुद्दे पर बहस छिड़ जाना आम बात हो गई है, दर्जनों टी.वी. चैनल एक से ही सवाल पर घंटों बहस करते हैं, आम चुनाव की चौखट पर खड़े देश के राजनीतिक दल ज्वलंत मुद्दों के नाम पर सरकार को घेरने की तलाश में रहते हैं तो इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं के लापता होने एवं यौन-उत्पीड़न के सवाल पर बहस क्यों नहीं छेड़ी जाती? बहस इस बात पर भी होनी चाहिए कि दिल्ली के निर्भया कांड के बाद महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित कानूनों को कठोर किया गया लेकिन कानून बन जाने के बाद भी स्थितियां क्यों नहीं सुधरी हैं? चिन्ता का कारण है कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में कोई विशेष कमी आती नहीं दिख रही है। वे पहले की ही तरह यौन अपराधियों का शिकार बन रही हैं, लापता हो रही है। छेड़छाड, बलात्कार, अपहरण, लापता होने और दुष्कर्म के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।

बड़ा प्रश्न है कि तमाम कानून एवं सुरक्षा व्यवस्थाएं होने के बावजूद आखिर इतनी बड़ी संख्या में लड़कियां और महिलाएं कहां गायब हो रही हैं? यह वह प्रश्न है, जिसका उत्तर नीति-नियंताओं के साथ ही समाज को भी देना होगा, क्योंकि यह ऐसा मामला नहीं, जिसके लिए केवल सरकारों को कठघरे में खड़ा कर कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाए। गायब होती लड़कियों और महिलाओं के मामले में समाज भी उत्तरदायी है। स्वयं को देश का भाग्य निर्माता मानने वाले राजनीतिक दल भी इसके दोषी हैं। इन सबको अपने अंदर झांकना होगा और स्वयं से यह प्रश्न करना होगा कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि देश के कई हिस्सों में अभी बालक-बालिकाओं का अनुपात संतुलित नहीं हुआ है, क्योंकि कन्या भ्रूण हत्या का सिलसिला कायम है। यह सिलसिला कानूनों को कठोर करने के बाद भी कायम है। गायब होने वाली लड़कियों में अच्छी-खासी संख्या नाबालिग लड़कियों की भी है। इसका मतलब है कि नारी सुरक्षा का मामला बहुत ही गंभीर है। यह मानने का कोई कारण नहीं कि 2021 के बाद स्थितियों में सुधार आया होगा, क्योंकि लड़कियों और महिलाओं के लापता होने या उनका अपहरण किए जाने अथवा बहला-फुसलाकर भगा ले जाने के समाचार आए दिन आते ही रहते हैं। महिलाओं के प्रति यह संवेदनहीनता एवं बर्बरता कब तक चलती रहेगी? भारत विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी कई हिस्सों में महिलाओं को लेकर गलत धारणा है कि महिलाएं या बेटियां शोषण एवं उत्पीड़न के लिये ही हैं। एक विकृत मानसिकता भी कायम है कि वे भोग्य की वस्तु है? उन्हें पांव के नीचे रखा जाना चाहिए। यों लापता होने की घटनाएं आए दिन होने वाले जघन्य अपराधों की ही अगली कड़ी है, मगर यह पुरुषवादी सोच और समाज के उस ढांचे को भी सामने करती है, जिसमें महिलाओं की सहज जिंदगी लगातार मुश्किल बनी हुई है, संकटग्रस्त एवं असुरक्षित है। भले ही महिलाओं ने अपनी जंजीरों के खिलाफ बगावत कर दी है, लेकिन देश में ऐसा वर्ग भी है जहां आज भी महिलाएं अत्याचार का शिकार होती है। देश के अन्य हिस्सों की ही भांति गुजरात एवं मध्य प्रदेश में आदिवासी महिलाएं बड़ी संख्या में लापता हो रही हैं। भले एक खास महिला वर्ग ने आर्थिक मोर्चे पर आजादी हासिल की है, लेकिन एक बड़ा महिला वर्ग आज भी पुरुषप्रधान समाज की संकीर्ण एवं विकृत सोच का शिकार है। ऐसा माहौल कायम है तभी आजादी के अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र की तमाम महिलाएं अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की सुरक्षा की गुहार लगातीं हुई दिखाई देती है। इसलिये कि उन्हें सदियों से चली आ रही मानसिकता, साजिश एवं सजा के द्वारा भीतरी सुरंगों में धकेल दिया जाता है, अत्याचार भोगने को विवश किया जाता है। बात मणिपुर की दो महिलाओं या बंगाल के मालदा में दो महिलाओं को नग्न करने या समूचे देश में महिलाओं के लापता होने से अधिक चिन्ता की बात यह है कि इन शर्मसार करने एवं झकझोर देने वाली घटनाओं पर भी राजनीतिक दल राजनीति करने से बाज नहीं आते। इन अति संवेदनशील मुद्दों पर राजनीतिक लाभ की रोटियां सेंकना दुर्भाग्यपूर्ण है। अच्छा हो सभी मिलकर नारी सम्मान के प्रति सचेत और संवेदनशील होकर उनके लापता होने, उन पर लगातार हो रहे अत्याचारों को रोकने की दिशा में कोई प्रभावी एवं सार्थक पहल करें। गायब होती लड़कियों और महिलाओं की बड़ी संख्या यही बताती है कि भारतीय समाज उनके प्रति अनुदार है। इस अनुदारता को दूर करने के लिए सबसे अधिक राजनीतिक वर्ग को ही आगे आना होगा और अनिवार्य रूप से समाज को भी।

नरेन्द्र मोदी की पहल पर निश्चित ही महिलाओं पर लगा दोयम दर्जा का लेबल हट रहा है। हिंसा एवं अत्याचार की घटनाओं में भी कमी आ रही है। बड़ी संख्या में छोटे शहरों और गांवों की लड़कियां पढ़-लिखकर देश के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे उन क्षेत्रों में जा रही हैं, जहां उनके जाने की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। वे टैक्सी, बस, ट्रक से लेकर जेट तक चला-उड़ा रही हैं। सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा कर रही है। अपने दम पर व्यवसायी बन रही हैं। होटलों की मालिक हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाखों रुपये की नौकरी छोड़कर स्टार्टअप शुरू कर रही हैं। वे विदेशों में पढ़कर नौकरी नहीं, अपने गांव का सुधार करना चाहती हैं। अब सिर्फ अध्यापिका, नर्स, बैंकों की नौकरी, डॉक्टर आदि बनना ही लड़कियों के क्षेत्र नहीं रहे, वे अन्य क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इस तरह नारी एवं बालिका शक्ति ने अपना महत्व तो दुनिया समझाया है, लेकिन नारी एवं बालिका के प्रति हो रहे अपराधों में कमी न आना, घरेलू हिंसा का बढ़ना, आदिवासी-दलित महिलाओं एवं बालिकाओं पर अत्याचारों का बढ़ना एवं उनका लापता होना, उनकी सुरक्षा खतरे में होना- ऐसे चिन्तनीय प्रश्न हैं, जिन पर सरकार को कठोर बनना होगा, सख्त व्यवस्था बनानी होगी। सरकार ने सख्ती बरती है, लेकिन आम पुरुष की सोच को बदलने बिना नारी एवं बालिका सम्मान की बात अधूरी ही रहेगी। ■

अगर आप बिजनेस फील्ड में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो बीकॉम आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। 12वीं के बाद स्टूडेंट्स में यह ट्रेंडिंग कोर्स में से एक है क्योंकि इस कोर्स के बाद बच्चों के लिए कई जॉब ऑप्शंस उपलब्ध होते हैं।

बीकॉम

व्यवसायिक शिक्षा और करियर के विकल्प

एडीटोरियल टीम

आपको बता दें कि बीकॉम एक अंडर ग्रेजुएट डिग्री प्रोग्राम है जिसकी अवधि 3 साल है और 6 सेमेस्टर में बंटा हुआ है। भारत में बीकॉम की लोकप्रियता बहुत ज्यादा है क्योंकि, इसमें पैसों का मैनेजमेंट, बैंक से जुड़ी जानकारी, पैसों के लेनदेन, हिसाब-किताब, इनकम टैक्स और पीएफ की जानकारी आसानी से समझी जा सकती है। छात्र इन विषयों को अच्छे से मैनेज कर पाते हैं।

बीकॉम कैसे करें?

बीकॉम कोर्स करने के लिए 12वीं पास होना जरूरी है। एडमिशन उसी कॉलेज में लें जिसमें रेगुलर क्लासेस होती हो क्योंकि बीकॉम रेगुलर किया जाये तो बेहतर होगा। जिससे आपको एकाउंटिंग की अच्छी जानकारी मिल सके और अच्छे तरीके से अकाउंट और फाइनेंस को समझ सकें। यह कोर्स करने के लिए आप किसी भी बीकॉम कॉलेज में एडमिशन ले सकते हैं।

बीकॉम के लिए शैक्षणिक योग्यता

आपको बता दें कि बीकॉम एक अंडरग्रेजुएट कोर्स है, जो आप 12वीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करने के बाद ही कर सकते हैं। बीकॉम में प्रवेश पाने के लिए आपको इंटरमीडिएट स्तर को 50 प्रतिशत अंकों से पास करना होगा जिसके बाद आप इस कोर्स में एडमिशन ले सकते हैं। चाहे आपने 12वीं में साइंस–पीसीएम, पीसीबी या कॉमर्स से किया हो। अगर आप इंटरमीडिएट में कॉमर्स पढ़ रहे हैं तो ये आपके लिए बेहतर साबित हो सकता है।

बीकॉम सब्जेक्ट

कॉमर्स से जुड़े कई सब्जेक्ट बीकॉम में पढ़ाये जाते हैं। आप जिस भी कॉलेज या यूनिवर्सिटी से अपनी बीकॉम की पढ़ाई करना चाहते हैं, आपको वहां के सिलेबस पर एक नजर जरूर डाल लेनी चाहिए।

- ईकोनोमिक्स
- बेंकिंग
- बिजनेस लॉ
- टैक्सेशन
- कंपनी लॉ
- फाइनेसियल अकाउंटिंग
- कोस्ट काउंटिंग
- मैनेजमेंट
- बिजनेस ऑर्गनाइजेशन

बीकॉम के बाद क्या करें?

बीकॉम कोर्स करने के बाद आप किसी भी कंपनी में नौकरी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप बीकॉम के बाद सीजीसी लेंडेन से ही मास्टर डिग्री कर सकते हैं। मास्टर डिग्री करने के लिए आप एमकॉम, एमसीए या फिर एमबीए कोर्स का चुनाव कर सकते हैं।

बीकॉम के बाद सरकारी नौकरी

बीकॉम कोर्स पूरा करने के बाद विद्यार्थियों के पास भी सरकारी नौकरी के कई विकल्प होते हैं। बैंकिंग सेक्टर के अलावा आयकर विभाग में भी बीकॉम स्टूडेंट्स करियर बना सकते हैं। इसके अलावा और भी बहुत सारे करियर ऑप्शंस कोर्स पूरा करने के बाद स्टूडेंट्स को मिलते है जैसे कि :-

- अकाउंटेंट
- बैंकिंग एंड इंश्योरेंस
- टैक्स कंसल्टेशन
- कंपनी सेक्रेटरी
- चार्टेड अकाउंटेंट
- एचआर
- स्टॉक ब्रोकर
- इनकम टैक्स डिपार्टमेंट
- इंडियन रेलवे
- इंडियन आर्मी
- इंडियन एयरफोर्स

आप एकाउंटिंग फील्ड में बना सकते हैं अपना करियर

बीकॉम के बाद आप सीएम यानी चार्टर्ड एकाउंटेंसी जैसे विषय की पढ़ाई कर सकते हैं। साथ ही आप ऐसी जॉब्स के लिए भी अप्लाई कर सकते हैं जिनके लिए ग्रेजुएशन पूरी करने की मांग होती है। जैसे की बैंक क्लर्क, पीओ आदि। बीकॉम करने के बाद आप फाइनेंस एकाउंटिंग और टैक्स के अच्छे जानकर भी बन सकते हैं। इसके अलावा आप किसी कंपनी का अकाउंट भी संभाल सकते हैं।

बीकॉम करने के बाद अनुमानित सैलरी

अगर आप सीजीसी, लेंडेन की बात करें तो यह संस्थान अपने छात्रों को अच्छा सैलरी पैकेज दिलवाने के लिए जाना जाता है। बीकॉम में 19.25 लाख का हाईएस्ट पैकेज सीजीसी लांडरां के छात्रों ने यहां से बीकॉम डिग्री करने के बाद लिया है। बीकॉम करने के बाद एक फ्रेशर कैंडिडेट को 15,000 रू से 25,000 रू की रेंज में हर महीने सैलरी मिल सकती है और एक एक्सपीरियंस कैंडिडेट हर माह 50 हजार रू से लेकर 1 लाख रू तक की सैलरी आसानी से ले सकता है। ■

इन क्षेत्रों में महिलाओं के लिए बेहतरीन कॅरियर ऑप्शन

महिलाओं ने किचन से केबिन तक का रास्ता तय करने में अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया है। खेतों में काम करने से लेकर आसमान में हवाई जहाज उड़ाने तक का काम महिलाएं कर रही हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में अपना नाम बना रही हैं।

विनय शर्मा

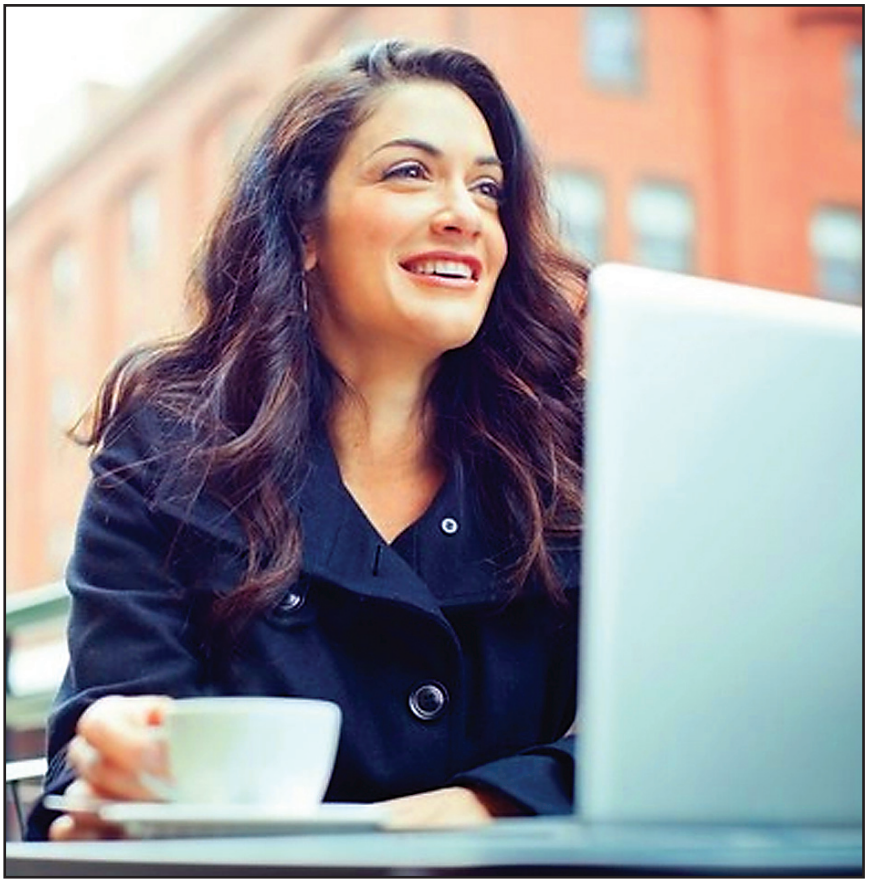

पुराने भारत से लेकर नए भारत तक की महिलाओं की तस्वीर दिन प्रति दिन बदलती जा रही है। एक समय तक महिलाओं को घर की चारदीवारी के लिए बेहतर माना जाता था। लेकिन अब महिलाएं घर की दहलीज पार कर काम करने लगी हैं। महिलाओं ने किचन से केबिन तक का रास्ता तय कर लिया है। खेतों में काम करने से लेकर आसमान में हवाई जहाज उड़ाने तक का काम महिलाएं कर रही हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में अपना नाम बना रही हैं। इतना ही नहीं हर क्षेत्र में महिलाएं अपनी योग्यता का भी बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे क्षेत्रों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर महिलाएं अपना बेहतर कॅरियर बना सकती हैं। यह टॉप 3 फील्ड महिलाओं को बेहतरीन कॅरियर के साथ स्मार्ट सैलरी भी देंगी।

टीचिंग

महिलाओं के लिए टीचिंग हमेशा से ही बेस्ट कॅरियर रहा है। इस प्रोफेशन में जाने के लिए परिवार का भी कोई ऑब्जेक्शन नहीं होता है। टीचिंग फील्ड में अच्छा पैसा होने के साथ ही रुतबा भी है। इस क्षेत्र में कॅरियर बना कर आप लोगों की जिंदगी में अहम रोल निभा सकती हैं। हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। इस जॉब के साथ समय भी अच्छे से मैनेज हो जाता है। एक दशक से इस फील्ड में नौकरी के अवसर भी बढ़े हैं। प्राइमरी हो या डिग्री हर जगह अच्छी सैलरी मिलती है। इस फील्ड में आपको 55,000 से 2,25,000 रुपए तक प्रतिमाह पा सकती हैं।

न्यूट्रिशन या फिटनेस

आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ी है। हर कोई फिट और सेहतमंद रहना चाहती है। इस क्षेत्र में कॅरियर की अपार संभावनाए हैं। अगर आप योग, न्यूट्रिशन व एक्सरसाइज एक्सपर्ट्स हैं। तो इस फील्ड में अपना शानदार कॅरियर बना सकती हैं। आप इसकी शुरूआत डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए भी कर सकती हैं। इस फील्ड में महिलाएं साल भर में 3-4 लाख रुपए सालाना कमा सकती हैं।

ह्यूमन रिसोर्स

कॉर्पोरेट सेक्टर में नौकरी की चाह रखने वाली महिलाओं के लिए यह क्षेत्र काफी अच्छा है। आप ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट में MBA या PGDM करने के बाद इस फील्ड में नौकरी कर सकती हैं। जो महिलाएं लोगों की समस्या को सॉल्व करने करने में दिलचस्पी रखती हैं। यह जॉब उनके लिए बेस्ट है। ह्यूमन रिसोर्स में कैंडिडेट्स को शॉर्टलिस्ट करने के बाद उनका इंटरव्यू करना, उन्हें ट्रेंड करना, सैलरी, विश्लेषण, पॉलिसी बनाना साथ ही साथी कर्मियों की देखभाल करना होता है। इस फील्ड में 3-4 लाख रुपए साला कमा सकती हैं। वहीं एक्सपीरियंस के बाद सैलरी भी बढ़ती जाती है। ■

पार्टनर संग घूमने का बना रहे प्लान, तो इन जगहों को करें एक्सप्लोर

हमारे देश में कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जहां पर हर साल लाखों की संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। आपको अगस्त के महीने में इन जगहों पर जरूर जाना चाहिए।

नीतू शर्मा

हर दूसरा व्यक्ति घूमने का बहुत शौकीन होता है। हर व्यक्ति अपने बिजी समय से थोड़ा सा समय घूमने के लिए जरूर निकालता है। आप भी अपने परिवार के साथ, दोस्तों के साथ या फिर पार्टनर के साथ घूमने के लिए गए होंगे। हमारे देश में कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जहां पर हर साल लाखों की संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। घूमने के दौरान जहां आपकी थकावट भी गायब हो जाती है, तो वहीं दूसरी ओर आप कई अच्छी यादें भी लेकर साथ लेकर आते हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अगस्त के महीने में जा सकते हैं। आपका यह ट्रिप यकीनन बेहद अच्छा हो सकता है। क्योंकि यह जगह इतनी ज्यादा खूबसूरत हैं कि आपका वहां बार-बार जाने का मन करेगा। आइए जानते हैं उन जगहों के बारे में जहां पर आप अगस्त के महीने में अपने दोस्तों या पर्टनर के साथ घूमने के लिए जा सकते हैं।

पहलगाम (जम्मू-कश्मीर)

हर भारतीय का सीना जम्मू-कश्मीर का नाम आते ही गर्व से चौड़ा हो जाता है। यहां पर हर साल लाखों की संख्या में पर्टयक घूमने के लिए पहुंचते हैं। बता दें कि जम्मू-कश्मीर की एक बेहद खूबसूरत जगह पहलगाम है। अगस्त के महीने में पहलगाम की खूबसूरती कई गुना बढ़ जाती है। यहां पर आप बीटा घाटी, तुलियन झील और बैसारन हिल्स जैसी जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

मॉलिंनॉन्ग (मेघालय)

शिलांग से लगभग 90 किलोमीटर दूर स्थित मॉलिंनॉन्ग एक छोटा सा गांव है। वैसे तो शिलांग और मेघालय में घूमने के लिहाज से कई खूबसूरत जगहें हैं। लेकिन अगस्त के महीने में मॉलिंनॉन्ग घूमने का अलग ही मजा है। आप यहां पर अपने पार्टनर के साथ डावकी नदी किनारे समय गुजार सकते हैं। इसके अलाव स्काई व्यू आदि जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं। इस दौरान मॉलिंनॉन्ग जलप्रपात का लुत्फ उठाना न भूलें।

कौसानी (उत्तराखंड)

उत्तराखंड की वादियां हर पर्यटक का दिल जीत देती हैं। उत्तराखंड का कौसानी एक छोटा सा गांव है। कौसानी की सुंदरता अगस्त में देखने लायक होती है। कौसानी में हरे-भरे मैदान, ऊंचे-ऊंचे हिमालय की चोटियां और देवदार के पेड़ यहां की शोभा में चार चांद लगाने का काम करते हैं। यहां पर आप कौसानी टी एस्टेट, ग्वालदम और रुद्रधारी फॉल्स जैसी जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

पंचगनी (महाराष्ट्र)

बता दें कि पंचगनी महाराष्ट्र में स्थित है। यहां पर हर साल काफी पर्यटक पहुंचते हैं। आपको यहां पर सिडनी प्वाइंट, कास पठार, भीलर फॉल्स, टेबल लैंड, राजपुरी गुफाएं, केट्स प्वाइंट और पारसी प्वाइंट जैसी खूबसूरत जरूर घूमनी चाहिए। इसके अलावा आपका फोटोग्राफी का शौक है, तो यह शौक भी यहां पर पूरा हो सकता है। इसके अलावा आप ट्रैकिंग का भी लुत्फ उठा सकते हैं। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

अपनी खूबी ले डूबी

ताराचंद संतोष से क्यों नाराज थे?

ताराचंद और संतोष काटो तो खून नहीं की हालत में खड़े रह गए। कुछ देर बाद ताराचंद संतोष पर बिफर पड़े, भाड़ में गई तुम्हारी खूबी, तुम्हारे चलते डूब गई न नैया...

शक्ति पैन्यूली

तुम चिल्लाते क्यों हो जी। कुरता पाजामा वहीं खूंटी पर तो टंगा है। लेकिन ठहरो, अभी तुम कपड़े मत बदलना... संतोष ने भीतर से आते हुए कहा। क्यों...? ताराचंद ने पूछा। संतोष मुस्करा कर बोली, क्योंकि तुम्हारी इच्छा चाय पीने की होगी। ऐसा करो तुम दुर्गा ताई के घर हो आओ। ताऊ को कल शाम से बुखार है। वहां चाय के साथ नमकीन भी मिल जाएगी... थोड़ा रुक कर वह फिर बोली, कल हम दोनों ही वहां जाकर सुबह की चाय पी लेंग। आज दिनभर वहां बैठे-बैठे मैं तो 2 बार की चाय पी आई थी। लौटते समय 6 संतरे भी साथ ले आई थी। संतरे? ताराचंद ने पूछा। संतोष फिर मुसकरा कर बोली, हां, ताऊ का हालचाल पूछने जो भी आ रहा था, ज्यादातर संतरे ही ला रहा था। मैंने ताई के कान में फुसफुसा कर कह दिया था कि किसी-किसी बुखार में संतरा जहर का काम करता है। बस, ताई ने सारे संतरे आस-पड़ोस में बांट दिए। मेरे हाथ भी 6 संतरे लग गए। मिल ही रहे थे, तो पूरे दर्जनभर ले आती, ताराचंद ने कहा। ले तो आती, मगर सोचा कि शाम को 6 ही तो खा सकेंगे। बाकी रखे-रखे सड़ गए तो फेंकने ही पड़ेंगे। अब कपड़े बदल लो। शाम के लिए कटोरा भरकर आलूपालक की सब्जी सुशीला दे गई है। भूख लग आए तो बता देना। मैं

रोटियां सेंक दूंगी, संतोष ने कहा। सुशीला के घर की सब्जी में तो मिर्च बहुत होगी, ताराचंद बोले। अरे, मुफ्त की तो मिर्च में भी मजा ले लेना चाहिए। तुम्हें तो मुझे शाबाशी देनी चाहिए, जो मौका मिलते ही मुफ्त का जुगाड़ कर लेती हूं, संतोष ने कहा। ताराचंद हंस कर बोले, तुम्हारी खूबी का तो मैं शुरू से ही कायल रहा हूं। कोई सोच भी नहीं सकता कि इस छोटी सी खोपड़ी के भीतर अक्ल का इतना बड़ा भंडार है। तभी ताराचंद को अपनी बात याद आई, तुम्हारी तो बात हो गई, लेकिन आज मैंने भी कुछ कम अक्ल का काम नहीं किया है। मेज पर लिफाफे में 4 आम रखे हैं। आम, संतोष चौंकी। तुम जरा इन की खुशबू तो लो, ताराचंद बोले। अब बता भी दो कि कहां से लाए हो... इतराते हुए संतोष ने पूछा।

आज एक आदमी हमारे खन्ना साहब के लिए तोहफे में थैला भरकर आम ले आया था। साहब ने मुझ से ही कह दिया कि एक-एक सब को बांट दो। बस, मैंने मौका देखकर उनमें से 4 आम चुरा लिए, उन्होंने बताया। अरे, चुराने ही थे, तो कम से कम 6 तो चुराते, संतोष ने मुंह बिचकाया। ताराचंद कुछ कहने ही वाले थे कि आवाज सुनकर रुक गए। संतोष बहन... आवाज पहचान कर संतोष बोली, अरी कमलेश बहन, बाहर से क्या आवाजें दे रही हो, अंदर आ जाओ।' नमस्ते भाई साहब। मैं कह रही थी कि तुम्हारे घर में थोड़ा सा गरम मसाला होगा। मैं तो आज मंगाना ही भूल गई और ये हैं कि बिना गरम मसाले के खाने में स्वाद ही नहीं मानते, कमलेश ने अंदर आ कर कहा। संतोष दुनियाभर का अफसोस अपने चेहरे पर लाते हुए बोली, तुम भी कैसे समय पर आई हो बहन, गरम मसाला मेरे यहां भी सुबह ही खत्म हुआ है। इनसे मंगाया तो था, लेकिन मर्दों की भूलने की आदत तुम जानती ही हो, सो ये भी भूल गए। लो, ये 2 आम तुम भी ले जाओ। वह तो ठीक है... लौकी के कोफ्ते बना रही थी, मगर अब गरम मसाला... कमलेश की बात पूरी होने से पहले ही संतोष बोल पड़ी, लौकी के कोफ्ते तो एक दिन सरोज ने खिलाए थे हमें। कह रही थी कि उसके जैसे कोफ्ते पूरे महल्ले में कोई नहीं बना सकता। कमलेश ने मुंह बनाया, अपने मुंह से अपनी तारीफ करना मुझे तो नहीं आता। कल दोबारा बनाऊंगी, तो तुम्हारे यहां भी भिजवा दूंगी। फिर तुम खुद ही देख लेना कि कोफ्ता किसे कहते हैं। कमलेश के बाहर जाते ही संतोष मुसकराई, देखा, कल की सब्जी का भी इंतजाम हो गया। वह तो देखा, लेकिन उसे इतने महंगे आम क्यों दे दिए? देने ही थे तो संतरे दे दिए होते, ताराचंद बोले। संतोष हंसी, अक्ल से काम लेना सीखो। हो सकता है कि दुर्गा ताई ने उसे भी संतरे दे दिए हों। अचानक ताराचंद के चेहरे पर आई उदासी देख कर संतोष को हैरानी हुई। उसने वजह पूछी, तो ताराचंद परेशान हो कर बोले, खन्ना साहब कल रात घर आ रहे हैं, वह भी पत्नी के साथ।

यह सुन कर संतोष भी सोच में डूब गई। कुछ देर बाद थोड़ा खुश हो कर वह इतमीनान से बोली, आसपड़ोस में मेरा दबदबा तो तुम ने देख ही लिया है। सब्जियों का जुगाड़ हो जाएगा। हमें केवल रोटियों और सलाद का इंतजाम करना पड़ेगा। सुनो, खन्ना साहब की मिसेज को पिछली बार खीर बहुत पसंद आई थी। खन्ना साहब दफ्तर में भी बहुत दिनों तक उसी की चर्चा करते रहे थे, ताराचंद ने याद दिलाया। वह सुशीला के यहां से आई थी, कहते हुए संतोष 2 समोसे और थोड़ी सी बरफी साथ लेकर सुशीला के घर निकल गई। 2 दिन बाद उन्होंने खन्ना साहब को बड़े आदर के साथ अपने घर आने की दावत दी, जिसे खन्ना साहब ने खुशी-खुशी मंजूर कर लिया। शाम को वे दोनों इतमीनान से घर पर खन्ना साहब के आने का इंतजार करने लगे। मोहल्ले भर से दाल, सब्जी, रायता का एक-एक डोंगा शाम को साढ़े 7 बजे से पहले ही उन के घर पहुंच चुका था। बस, सुशीला के घर से खीर आने की कमी रह गई थी। जब पौने 8 बजे तक खीर नहीं पहुंची तो ताराचंद को थोड़ी चिंता सताने लगी। तभी बाहर खन्ना साहब की कार के रुकने की आवाज सुनाई दी। खन्ना साहब अपनी पत्नी के साथ उन्हीं के घर की ओर बढ़ रहे थे। लो, ये लोग तो आ गए। लेकिन तुम्हारी सुशीला अभी तक नहीं आई, ताराचंद फुसफुसाए। संतोष भी उसी अंदाज में बोली, तुम इन लोगों का स्वागत करो। मैं सुशीला के घर से होकर आती हूं।

वह तेजी के साथ सुशीला के घर की ओर चल दी। सुशीला उसे घर में कहीं दिखाई नहीं दी। संतोष सीधे उस के रसोईघर में पहुंच गई। यह देखकर उसे बड़ी राहत मिली कि सुशीला खीर तैयार करने के बाद ही कहीं गई थी। खीर भरी पतीली सामने ही रखी थी। उस ने फटाफट डोंगा भरा और अपने घर पहुंच गई। डोंगा रसोईघर में रख संतोष भी उन के बीच चली आई। मिसेज खन्ना बोलीं, मिसेज चंद, आप हैं कहां? हमारे पास बैठिए। खाना तो एक बहाना है। हम तो प्यार के भूखे हैं, इसीलिए तो मुंह उठाए किसी भी छोटे-मोटे आदमी के यहां जा टपकते हैं। जी, ताराचंद और संतोष के मुंह से एक साथ निकल पड़ा। खन्नाजी ने समझाने के अंदाज में कहा, इनका मतलब है कि हम किसी को भी छोटा नहीं समझते। संतोष ने कुछ ही देर में खाना मेज पर सजा दिया। ढेर सारी चीजें देख कर मिसेज खन्ना बोलीं, अरे, इतना सब कुछ करने की क्या जरूरत थी... यह तो कुछ भी नहीं है, आप शुरू करें, संतोष ने एक डोंगा उन की तरफ बढ़ाया। वे सब खाने में जुट गए। बीच में संतोष ने ताराचंद को इशारा किया कि वह खन्ना साहब से अपने प्रमोशन की बात छेड़ दें। सर, आप बुरा न मानें तो... ताराचंद हकलाने लगे। अरे, अब कह भी डालिए, खन्ना साहब ने कुछ तेजी के साथ कहा। ताराचंद सकपका गए और बोले, मेरा मतलब है सर, आप ने यह बैगन का भरता तो छुआ ही नहीं है। थोड़ा यह भी लीजिए न। ओ जरूर लेंगे, जरूर लेंगे। लेकिन इसमें इतना हकलाने की क्या बात थी, खन्ना साहब बोले। भाई साहब, अब यह खीर तो लीजिए। आप लोगों के लिए खासतौर से बनवाई है, कुछ देर बाद संतोष ने खन्ना साहब से कहा। भई, खीर तो हमारी श्रीमतीजी की पसंद है। वे जी भर कर खा लें, खन्ना साहब बोले। आप लीजिए न, मैं तो 2 कटोरी ले चुकी हूं, मिसेज खन्ना ने खीर का डोंगा खन्ना साहब के सामने सरका दिया। वे बड़े चाव से खीर खा ही रहे थे कि अचानक सुशीला वहां चली आई और बोली, संतोष बहन, जो खीर तुम मेरे घर से उठा लाई थीं, वह तुम ने खाई तो नहीं? उसे खाना मत। वह कौशल्या है न, उस का कुत्ता आज पता नहीं कैसे खुला रह गया और मेरी रसोई में घुस कर उस खीर में मुंह मार गया। मैं ने तो खीर अलग रख दी थी कि रामकली की गाय को खिला दूंगी, मगर इस बीच तुम उसे उठा लाईं। मैं उस समय कौशल्या की खबर लेने चली गई थी। अचानक सुशीला की नजर खाने की मेज पर पड़ी और वह ठिठक गई। मेहमानों को देख कर उस ने वहां रुकना ठीक नहीं समझा और उलटे पैर वापस चली गई। उसके जाते ही वहां कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। फिर मिसेज खन्ना अचानक चीखीं, खीर कुत्ते की जूठी थी। इसके साथ ही उन्होंने एक उबकाई ली और सारा खाया-पिया वहीं मेज पर उगल दिया।

डार्लिंग... डार्लिंग... खन्ना साहब ने घबरा कर कहा और अचानक ताराचंद की ओर देखते हुए दहाड़े, यू... मिस्टर ताराचंद... तुम्हारी यह हिम्मत, हमें भिखारी समझते हो। भीख में मांगा हुआ खाना हमें खिलाते हो, वह भी कुत्ते का जूठा... हम तुम्हें दरदर का भिखारी बना देंगे। ऐसा भिखारी जिसे कुत्ते का जूठा भी कभी नसीब नहीं होगा, समझे तुम। सर... सर, माफ कर दीजिए सर, कुछ नहीं होगा सर। कुत्ते को इंजैक्शन लगे हुए हैं सर, ताराचंद के दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। तभी मिसेज खन्ना की उबकाइयां बढ़ती गईं। अपने आप को संभालो डार्लिंग, कहते हुए खन्ना साहब फिर से उन्हें संभालने लगे। ताराचंद के मुंह से खन्ना साहब के अंदाज में ही निकला, हां हां, डार्लिंग, अपने आपको संभालो। मिस्टर ताराचंद, तुम्हारी यह मजाल कि तुम हमारी बीवी को डार्लिंग कह रहे हो, वह भी हमारे ही सामने... खन्ना साहब चीखे। वह शायद ताराचंद के कपड़े भी फाड़ देते, लेकिन मिसेज खन्ना फिर उबकाई लेने लगीं। अपनी बातों के तीरों से ताराचंद को अच्छी तरह से छलनी करने के बाद वे लोग चले गए। ताराचंद और संतोष काटो तो खून नहीं की हालत में खड़े रह गए। कुछ देर बाद ताराचंद संतोष पर बिफर पड़े, भाड़ में गई तुम्हारी खूबी, तुम्हारे चलते डूब गई न नैया... इतना सुनना था कि संतोष रोने लगी और भीतर जा कर ताराचंद नाक रगड़-रगड़ कर माफी मांगने के अभ्यास में जुट गए। ■

व्यंग्य

नीली चिड़िया का टिटिम्मा...

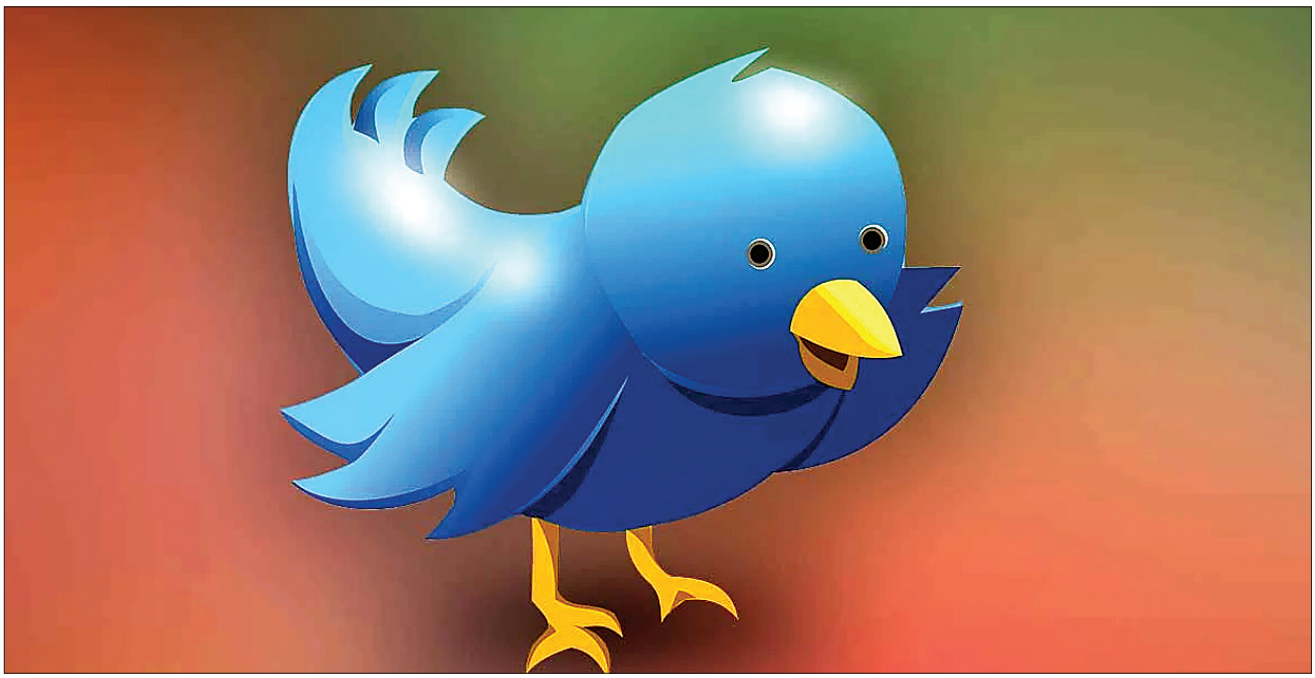

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

चित्रगुप्त ने कहा, महाराज! नीली चिड़िया के बारे में आप ठीक से नहीं जानते हैं। हम इंसानों का हिसाब रखते हैं और इंसान हैं कि नीली चिड़िया के बहाने हर चहचहाहट का हिसाब किताब रखते हैं। इसका ट्विटराना मेरे हिसाब-किसाब को भी मात देता है। चित्रगुप्त जी मरने वालों का हिसाब रखते-रखते बोर हो गए हैं। आजकल वे यमराज से ज्यादा नीली चिड़िया के आगे-पीछे लगे हुए हैं। सुबह से लेकर शाम तक और शाम से लेकर सुबह तक वे नीली चिड़िया से प्यार करते हैं। यह देख यमराज जी उन पर कई बार गुस्सा हुए। उनका इन्क्रिमेंट रोका, वर्क लोड बढ़ाया, लेकिन चित्रगुप्त हैं कि नीली चिड़िया के प्यार में दीवाने हुए पड़े हैं।

एक दिन यमराज ने चित्रगुप्त से पूछा, चित्रगुप्त जिस नीली चिड़िया का मालिक एलन मस्क है, उसका हिसाब-किताब हम रखते हैं। ऐसे में एक तुच्छ मानव की नीली चिड़िया में तुम्हें ऐसा क्या सुख मिलता है जो उसी के पीछे लगे रहते हो? इस पर चित्रगुप्त ने कहा, महाराज! नीली चिड़िया के बारे में आप ठीक से नहीं जानते हैं। हम इंसानों का हिसाब रखते हैं और इंसान हैं कि नीली चिड़िया के बहाने हर चहचहाहट का हिसाब किताब रखते हैं। इसका ट्विटराना मेरे हिसाब-किसाब को भी मात देता है। किसने कब, कहाँ, क्यों और क्या कहा सब पता चल जाता है। एक झटके में दुनिया भर में उसकी चहचहाहट की खुजली का पता चल जाता है। नीली चिड़िया मेरी जैसी भुलक्कड़ नहीं है। सबका कहा बवाल की प्लेट में धरकर खूब मजे लेती है।

चित्रगुप्त कुछ कह ही रहे थे कि तभी ट्विटर के एक ट्विट ने फलां देश पर शासन कर रहे सफेद चोलाधारियों का ट्विट टरका दिया। उस ट्विट में आलू से सोना बनाने वाली बात का प्रचार-प्रसार करने वाले अंधे लोग की पोल उस समय खुल गयी जब पता चला कि ऐसी बातें पप्पू नहीं गप्पू ही कर सकता है। लंबी-लंबी फेंकने वाले को नीली चिड़िया धर दबोचती है। उनकी कही पुरानी बातों को आगे ला-लाकर उनके आगे की जिंदगी हराम कर देती है। महंगाई के नाम पर रोने वाले और अपनी कार फूँकने की बात करने वाले अपने ही चहचहाहट में छटपटा के रह जाते हैं। कई तो अपनी चहचहाहट रोकने के नाम पर उसे हटाने की कोशिश करते हैं। ये क्या चित्रगुप्त! नीली चिड़िया तो बड़े कमाल की है। किंतु मैंने सुना है कि इस पर गन्दी-गन्दी पोस्ट से लेकर नफरत फैलाने वाली पोस्ट तक भेजते हैं। मुझे डर है कि कहीं ऐसे चहचहाने वाले हमारे यहाँ आ जायेंगे तो हमारी चहचहाहट कब थरथराहट में बदल जाएगी पता भी नहीं चलेगा। प्रभु ने भृकुटी चढ़ाते हुए कहा। "महाराज! बात तो सही है, किंतु जो भी हो नीली चिड़िया का हिसाब-किताब हमसे पक्का है। हम एक बार के लिए भूल सकते हैं, किंतु वह कतई नहीं।"

"तो क्या कहना चाहते हो? तुम्हें रिटायर करके नीली चिड़िया को काम पर लगा दूँ?" "महाराज! ऐसा मत कहिए। ये तो मेरा पूर्णकालिक काम है। इसी से मेरा घर-बार चलता है। मैं पहले से लोगों के अच्छे-बुरे कामों का हिसाब-किताब रखता आया हूँ। मैं तो नीली चिड़िया के बारे में इसलिए बता रहा था, कि भविष्य में नीली चिड़िया वाला विकल्प बहुत काम आएगा। एकदम पक्का और सही-सही हिसाब का बाप है वो।" नहीं नारद नहीं! कतई नहीं। जब तक शरीर में प्राण है तब तक नीली चिड़िया के बारे में नहीं सोचूँगा। मुझे अपनी गद्दी बचाए रखना है तो नीली चिड़िया से बचकर रहना होगा। तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो। मुझे कोई शिकायत नहीं है। मैं तुम्हें हटाकर नीली चिड़िया को काम पर लगाऊँगा तो मेरे पैरों पर मैं खुद कुल्हाड़ी चलाने वाला हो जाऊँगा। इंसान जब पीड़ा में होता है तो सुख खोजता है और जब सुख में होता है तब नीली चिड़िया जैसा टिटिम्मा पालता है। हम इंसान को क्या मारेंगे, वे खुद अपने हाथों मरने के लिए एक से बढ़कर एक बहाने खोज लेते हैं। ■

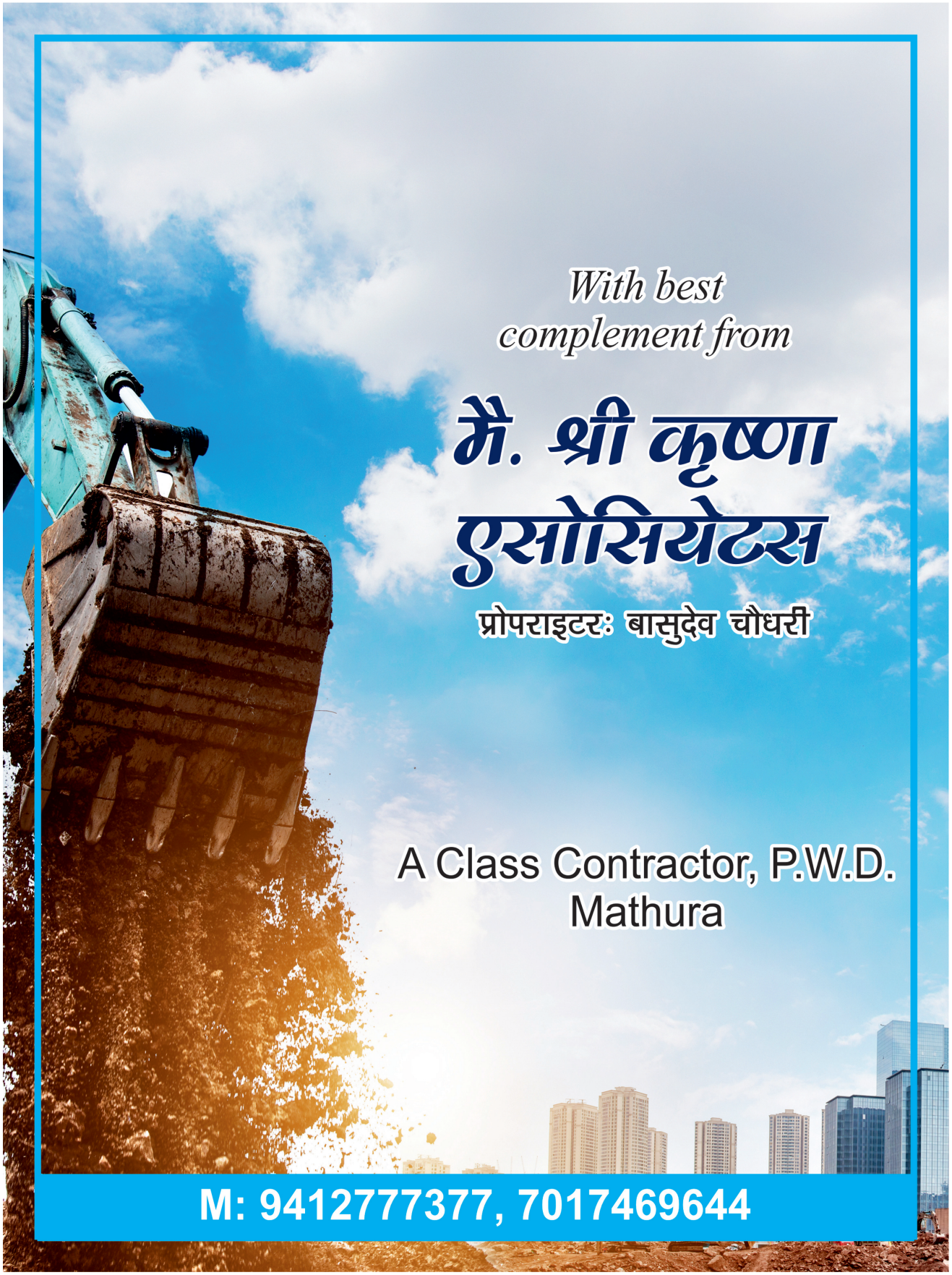
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

क्यों बन रहीं हैं हिंदू धर्म का मजाक उड़ाने वाली फिल्मों

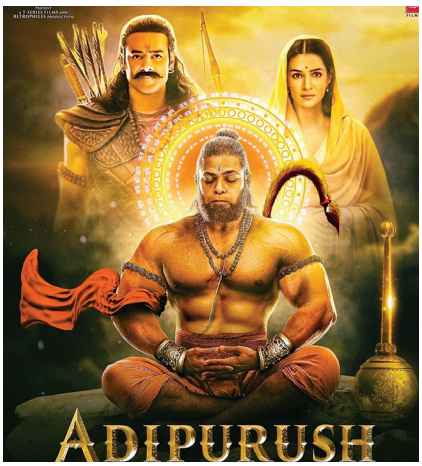

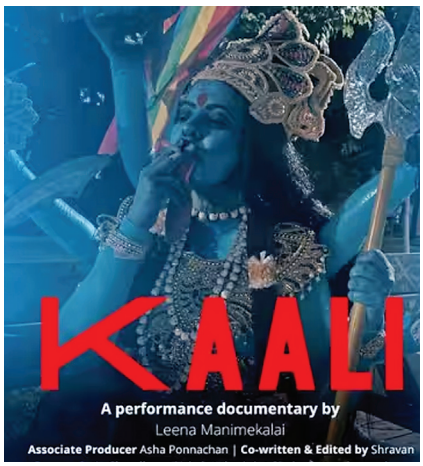

अविनाश वर्मा

आपको न जाने कितनी इस तरह की फिल्में मिल जाएंगी जिनमें हिंदू धर्म के देवी-देवताओं को अपमानित होते हुए या गलत तरीके से पेश किये जाते हुए दिखाया गया है। यह किसके इशारे पर हो रहा है, समझ नहीं आता कि अब हमारे यहां सार्थक फिल्में क्यों नहीं बनती? इसी तरह से बच्चों की पृष्ठभूमि पर फिल्में बनाना क्यों फिल्मकारों ने छोड़ दिया है? कुछ फिल्म वाले हिंदू धर्म और हिंदू धर्म के आराध्य देवी-देवताओं के साथ बार-बार खिलवाड़ करके पता नहीं क्या साबित करना चाहते हैं? राम भारत की आत्मा में है। भारत की राम के बिना कल्पना तक भी नहीं की जा सकती। नवजात शिशु के कान में पहला शब्द राम ही बोला जाता है और शवयात्रा में रामनाम सत्य है ही कहकर मृतात्मा को अंतिम विदाई दी जाती है उन्हीं राम और रामायण को लेकर एक बेसिर पैर की फिल्म आदिपुरुष बना दी जाती है और सहिष्णु हिन्दू चुपचाप बैठे रहते हैं। उस पर तगड़ा बवाल भी हुआ। सवाल ये है कि क्या सेंसर बोर्ड में खासमखास ओहदों पर बैठे ज्ञानियों ने आदि पुरुष को देखा नहीं था? उन्होंने उसे प्रदर्शन की इजाजत कैसे दे दी? इसके संवाद एक दम घटिया हैं। अब आमिर खान की फिल्म पीके को ही लें। इसमें भगवान शंकर के वेश में एक युवक को सड़कों पर बेताहशा दौड़ते हुए दिखाया गया था। क्या आमिर खान को यह दिखाना चाहिए था? अब लीना मनिमेकलाई की फिल्म काली की बात कर लें। इसके पोस्टर में मां काली को सिगरेट पीते दिखाया गया है। क्या इससे हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंची? हिंदू धर्म और हिंदू देवी-देवताओं का अपमान करना एक तरह से फैशन होता जा रहा है। यह सिर्फ हिन्दू समाज की सहिष्णुता की वजह से हो रहा है जिस दिन हिन्दू भी ईश निंदा के मसले पर गंभीर हो जायेगा, तब हिन्दुओं का मजाक उड़ाने वालों का क्या होगा, यह सोचने की बात है, जरा सोचिए कि जिस देश में 80 फीसद से अधिक हिंदू रहते हैं वहां पर ये गटरछाप फिल्में दिखाई जाती हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि कंट्रोवर्सी खड़ी करने के लिए जानबूझकर फिल्मों के कंटेट को हिंदू विरोधी बनाया जाता है। कुछ साल पहले अहमदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट यानी आईआईएम ने एक अध्ययन किया था। उन्होंने दावा किया था कि बॉलीवुड की फिल्में हिंदू धर्म के खिलाफ लोगों के दिमाग में धीमा जहर घोल रही हैं। फिल्मों के शैदाइयों को कई अन्य फिल्में भी याद आ जाएंगी जिनमें कला की स्वतंत्रता के नाम पर करोड़ों हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई जाती रही। मैं यहां सलमान खान की फिल्म टाइगर जिंदा हैं की खासतौर पर चर्चा करना जरूरी मानता हूं। इस फिल्म में पाकिस्तान की भारत विरोधी खुफिया एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलीजेंस (आईएसआई) को भारत की हमदर्द एजेंसी के रूप में पेश किया गया था। तो क्या कुख्यात आईएसआई का हृदय परिवर्तन हो गया? क्या वह भारत की दोस्त और शुभचिंतक बन गई है? टाइगर जिंदा है की संक्षेप में कहानी का सार यह है इराक में भारत की नर्से कट्टरवादी इस्लामिक संगठन आईएसआईएस के कब्जे में आ गई हैं। उन्हें मुक्त करवाने के अभियान में भारत की सक्षम खुफिया एजेंसी रॉ का आईएसआई सहयोग करती है। इससे अधिक झूठ कुछ नहीं हो सकता। दिन को रात कहना कहां तक सही माना जाए? टाइगर जिंदा है को दर्शकों ने बहुत पसंद किया था। फिल्म हिट हुई थी। उसने तगड़ा बिजनेस भी किया था। पर सवाल वही है कि क्या आप क्रिएटिव फ्रीडम की आड़ में कुछ भी दर्शकों को पेश कर देंगे? क्या सेंसर बोर्ड सोया हुआ था, जिसने टाइगर जिंदा है को प्रदर्शन की अनुमति दे दी? कैसे इस फिल्म में आईएसआई को भारत के मित्र के रूप में दिखा दिया गया। आईएसआई का सारा इतिहास भारत में गड़बड़ और अस्थिरता फैलाने के उदाहरणों से अटा पड़ा है। पाकिस्तान को मालूम है कि वह सीधे युद्ध में भारत के सामने टिक नहीं सकता। कौन नहीं जानता कि मुंबई में 2008 में हुए खूनी आतंकवादी हमले और काबुल में भारतीय दूतावास को निशाना बनाकर किए गए विस्फोट के पीछे आईएसआई का ही हाथ था। ये दावा बीबीसी ने भी दो हिस्सों में प्रसारित अपने एक कार्यक्रम में किया था। इसे सीक्रेट पाकिस्तान नाम दिया गया था। पर हम उसे अपने यहां एक मानवीय एजेंसी के रूप में खड़ा कर रहे हैं। भारत में जाली करेंसी का धंधा करवाने की भी फिराक में हमेशा आईएसआई रहती है। नोटबंदी के कारण 500 और एक हजार के नोट बंद करने के ऐलान ने आईएसआई की नींद उड़ा दी थी।

भारत में करोड़ों लोग मनोरंजन के लिए फिल्में देखते हैं। क्या उन्हें पीके, टाइगर जिंदा है, काली, आदिपुरुष जैसी फिल्में दिखाई जानी चाहिए? सेंसर बोर्ड को अधिक सजग होने की जरूरत है ताकि कोई कचरा फिल्म प्रदर्शित ना हो। फिल्में इस तरह की भी बने जो अंध विश्वास पर हल्ला बोलें और दर्शकों का स्वस्थ मनोरंजन करें। हमारी फिल्मों में फूहड़ता भरी होती है। उनमें से अधिकतर में कुछ संदेश नहीं होता। साफ है कि इस तरह की फिल्मों से कोई फायदा नहीं होने वाला। हमें श्याम बेनेगल जैसे दर्जनों फिल्मकार चाहिए जो सार्थक सिनेमा के प्रति प्रतिबद्ध हों। श्याम बेनेगल की आरम्भिक फिल्में अंकुर, निशांत और मंथन थीं। मनोरंजन और सामाजिक सरोकार के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश में बेनेगल ने अपनी बाद की फिल्मों कलयुग, जुनून, त्रिकाल और मंडी से ग्रामीण पृष्ठभूमि को छोड़कर नाटकीय और शहरी विषय-वस्तुओं पर फिल्में बनानी शुरू कीं। श्याम बेनेगल जैसे कई और भी हमारे यहां फिल्मकार हैं, पर उनकी संख्या बहुत कम है। अब भी बुजुर्ग हो रहे हिन्दुस्तानियों को बूट पॉलिश, अब दिल्ली दूर नहीं और जागृति जैसी महान बाल फिल्में याद होंगी। ये सब कालजयी फिल्में थीं। पर अब कहां बनती है इस तरह की अमर फिल्में। मैंने बूट पालिश पटना में देखी थी। मुझे इतने बरस गुजर जाने के बाद भी बूट पालिश की कथा और किरदार याद हैं। ■

दुःखद

नितिन देसाई की मौत के मामले में कर्जदाताओं की भूमिका की जांच होगी

मशहूर कला निर्देशक नितिन देसाई के मृत पाए जाने के एक दिन बाद, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि कर्ज देने वाली एक निजी कंपनी की भूमिका की जांच की जाएगी, जिससे देसाई ने ऋण लिया था।

रेनू तिवारी

जाने-माने फिल्म कला निर्देशक नितिन देसाई का शव बुधवार को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में उनके स्टूडियो में लटका मिला। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि प्रथमदृष्टया यह आत्महत्या का मामला प्रतीत होता है और इसकी सभी पहलुओं से जांच की जा रही है। रिपोर्ट ऐसी भी आ रही है कि वह पिछले काफी समय से आर्थिक तंगी का सामना कर रहे थे। सूत्रों के मुताबिक नितिन देसाई ने एक फाइनेंस कंपनी से 180 करोड़ रुपये का लोन लिया था। उन्होंने अपनी जमीन और अन्य संपत्ति भी गिरवी रख दी थी। कला-निर्देशक ऋण चुकाने में असमर्थ थे और भारी कर्ज में डूबे हुए थे। पिछले सितंबर में उक्त कंपनी ने कलेक्टर को एक पत्र लिखा था और देसाई द्वारा उनसे लिए गए पैसे की वसूली करने का प्रस्ताव दिया था।

मशहूर कला निर्देशक नितिन देसाई के मृत पाए जाने के एक दिन बाद, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि कर्ज देने वाली एक निजी कंपनी की भूमिका की जांच की जाएगी, जिससे देसाई ने ऋण लिया था। उन्होंने कहा कि जांच में पता लगाया जाएगा कि क्या कंपनी अधिक ब्याज वसूलती थी और क्या देसाई तनाव में थे। गृह विभाग का कार्यभार संभाल रहे फडणवीस ने विधानसभा में कहा कि मुंबई के पास कर्ज में देसाई के एनडी स्टूडियो को कैसे संरक्षित किया जा सकता है या सरकार द्वारा अपने नियंत्रण में लिया जा सकता है, इस संबंध में कानूनी पहलुओं पर विचार किया जाएगा। 'जोधा अकबर', 'लगान' जैसी फिल्मों और मशहूर टीवी कार्यक्रम 'कौन बनेगा करोड़पति' का भव्य सेट तैयार करने वाले जाने माने कला निर्देशक नितिन देसाई (57) अपने स्टूडियो में फंदे से लटके पाए गए। देसाई की कंपनी एनडी आर्ट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड ने 2016 और 2018 में ईसीएल फाइनेंस से दो ऋणों के माध्यम से 185 करोड़ रुपये उधार लिए थे और पुनर्भुगतान को लेकर परेशानी जनवरी 2020 से शुरू हुई। पिछले हफ्ते एक दिवाला अदालत में दायर दिवाला से संबंधित याचिका के अनुसार, एनडी आर्ट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड ने अपने वित्तीय कर्जदाता को 252 करोड़ रुपये का ऋण नहीं चुकाया था। ईसीएल फाइनेंस एक अग्रणी एनबीएफसी है, जो एडलवाइस ग्रुप द्वारा प्रवर्तित है। फडणवीस भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक आशीष शेलार की उस मांग का जवाब दे रहे थे जिसमें उन्होंने कहा था कि इस मुद्दे को सिर्फ दुर्घटनावश मौत का मामला नहीं माना जाना चाहिए। व्यवस्थागत प्रश्न के तहत शेलार ने मांग की कि देसाई की मृत्यु को केवल आकस्मिक मृत्यु के मामले के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि बड़े परिप्रेक्ष्य से इसका निपटारा किया जाना चाहिए।

भाजपा विधायक ने कहा कि देसाई ने अपनी प्रतिभा और उपलब्धियों से कला निर्देशन के क्षेत्र में अपना नाम बनाया। शेलार ने आरोप लगाया, यह दुखद है कि चार राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित देसाई को यह कदम उठाना पड़ा। उन्होंने एनडी स्टूडियो के लिए 180 करोड़ रुपये का कर्ज लिया था, जो बढ़कर 252 करोड़ रुपये हो गया। यह राशेश शाह और एडलवाइस एआरसी कंपनी द्वारा ऋण प्रदान करने की कार्यप्रणाली को दिखाता है। शेलार ने कहा कि इसलिए, इस मामले की जांच केवल आकस्मिक मौत के रूप में नहीं की जानी चाहिए, बल्कि लगाए गए ब्याज दर, इस कंपनी द्वारा लागू की गई वसूली प्रक्रिया और ऐसे कई मुद्दों पर गौर करने के लिए एक विशेष टीम गठित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा, तभी नितिन चंद्रकांत देसाई को न्याय मिलेगा। भाजपा विधायक ने यह भी कहा कि उनके पास इस आधुनिक साहूकार के खिलाफ दो और मामलों की जानकारी है और इसके बारे में जानकारी गृह मंत्री को सौंपी जाएगी। कांग्रेस नेता अशोक चव्हाण ने कहा कि सरकार को देसाई के स्टूडियो को नीलाम करने की अनुमति देने के बजाय उसे अपने नियंत्रण में ले लेना चाहिए। उन्होंने कहा, यह नितिन देसाई को श्रद्धांजलि होगी। देसाई को मराठी लोगों का गौरव बताते हुए फडणवीस ने कहा, फिल्मों के अलावा, उन्होंने राजनीतिक कार्यक्रमों के लिए थीम, दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड के लिए राज्य की झांकियां भी तैयार कीं और वाराणसी में घाटों के सौंदर्यीकरण में भी योगदान दिया। उपमुख्यमंत्री ने कहा, देसाई की मौत की जांच में कर्जदाताओं की भूमिका की जांच की जाएगी और देखा जाएगा कि क्या वह मानसिक तनाव में थे और उन पर दबाव डाला जा रहा था। ■

भाई-बहन के प्यार में पगी फिल्मों और उनके सिने आकाश में झिलमिलाते सितारों को

सिर आंखों पर बैठाया है सिनेदर्शकों ने

हिंदी सिनेमा की सिल्वर स्क्रीन सिर्फ प्रेमी-प्रेमिकाओं की रूमानी दस्तानों को बयां करने वाली सुपरहिट फिल्मों का जरिया भर नहीं रही, बल्कि भाई-बहन के पवित्र प्यार में पगी सुपरहिट फिल्मों के लिए भी जानी जाती रही है। इनको बनाने की पुरानी परंपरा हिंदी सिनेमा में रही है। भाई-बहन के प्यार के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन पर इन फिल्मों को देखने का हम सबका मन होता है, लिहाजा ऐसी फिल्में थिएटर में रिलीज होती रही हैं। भाई-बहन के रिश्ते को लेकर कई अच्छी फिल्में आई हैं। उन्हीं फिल्मों और उनके गीतों को याद करेंगे...।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

1941 में आई फिल्म 'सिकंदर' से ही रक्षाबंधन के त्यौहार को फिल्मी पर्दे पर दिखाने की शुरूआत हुई थी, यह माना जाता है। फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने सिकंदर की मुख्य भूमिका निभाई।

1945 में रिलीज हुई महबूब खान की फिल्म 'हुमायूं' में भी रक्षाबंधन के त्यौहार को बखूबी दिखाया। इसमें अशोक कुमार ने हुमायूं और वीना ने कर्णावती की भूमिका निभाई।

1959 में प्रदर्शित फिल्म 'छोटी बहन' में बलराज साहनी, नंदा, महमूद और रहमान ने मुख्य भूमिकायें अदा की थीं। शैलेंद्र का लिखा और शंकर-जयकिशन के संगीत से सजा लता मंगेशकर की आवाज में इसका यह गीत आज भी रक्षाबंधन पर फिजाओं में गूंज उठता है-

"भईया मेरे राखी के बंधन को निभाना
भईया मेरे छोटी बहन को ना भुलाना
देखो ये नाता निभाना निभाना
भईया मेरे राखी के बंधन को निभाना...!"

1965 में रिलीज फिल्म 'काजल' ने रक्षाबंधन के भाव को पूरी शिद्दत से बयां किया। साहिर लुधियानवी के लिखे गीत को रवि ने संगीत दिया और आशा भोंसले की सुरीली आवाज में रिकॉर्ड किया गया। इसमें मीना कुमारी भाई को गीत गाकर सुना रही हैं। गीत के बोल हैं-

"मेरे भैया मेरे चंदा, मेरे अनमोल रतन
तेरे बदले मैं जमाने की, कोई चीज न लूं...!"

1969 में आई फिल्म 'अंजाना' में भी एक बेहद लोकप्रिय गीत याद आता है। आनंद बक्षी का लिखा, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत में सजा और लता मंगेशकर की आवाज में यह गीत कोई नहीं भूलता-

"हम बहनों के लिए मेरे भैया
आता है एक दिन साल में
आता है एक दिन साल में
आज के दिन मैं, जहाँ भी रहूँ
चले आना वहाँ हर हाल में...!"

1971 में रिलीज फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' में एक लड़का अपनी बहन को ढूंढ़ता है और उसे खोजकर अपने परिवार में वापस शामिल करता है। फिल्म उस लड़के के संघर्ष की कहानी है। फिल्म में मुख्य भूमिका में देव आनंद और जीनत अमान की थी।

1972 की फिल्म 'मेरे भैया' भी उल्लेखनीय फिल्म रही है। निर्देशन सत्येन बोस ने किया। फिल्म में विजय अरोड़ा, नाजिमा, सुरेश चटवाल, अनीता दत्त मुख्य भूमिकाओं में थे। इसके गीत खूब हिट रहे। इसमें आगरा के गीतकार सोम ठाकुर ने भी दो गीत लिखे। एक लता मंगेशकर की आवाज में रिकॉर्ड हुआ। इसके बोल थे-

"छोड़ चली घर तेरा बाबुल, पिया के घर जाना बाबुल, पिया के घर जाना, छोड़ चली घर तेरा हम्म हम्म...!"

सोम ठाकुर का लिखा दूसरा गीत, फिल्म का टाइटल गीत था, जिसे सुषमा श्रेष्ठ, जयश्री, नवीन कुमार ने गाया है। बोल थे - **"मेरे भैया...!"**

1974 में फिल्म 'रेशम की डोरी' में भाई-बहन बीच प्यार को बखूबी दिखाया। आत्माराम के निर्देशन में बनी इस फिल्म में धर्मेंद्र और उनकी बहन के प्यार ने दर्शकों की आंखों में आंसू ला दिए। इसका एक गाना बहुत हिट रहा-

"बहना ने भाई की कलाई से
बहना ने भाई की कलाई से प्यार बाँधा है
प्यार के दो तार से, संसार बाँधा है
रेशम की डोरी से, रेशम की डोरी से...!"

1975 में आई फिल्म 'धर्मात्मा' ऐसे व्यक्ति की कहानी थी जिसे पता चलता है कि उसके पिता का हत्यारा उसकी बहन का पति है लिहाजा वह गहरी दुविधा में फंस जाता है। अभिनेत्री फरीदा जलाल ने उनकी बहन का किरदार निभाया। बहन अपने भाई से उसके पति को माफ करने के लिए कहती है, इसके लिए वो उसे राखी बांधती है।

1980 में आई फिल्म 'चम्बल की कसम' में खय्याम के संगीत से सजा साहिर लुधियानवी का लिखा और लता मंगेशकर की आवाज में यह गीत खूब लोकप्रिय हुआ-

"चंदा रे मेरे भईया से कहना, बहना याद करे
चँदा रे मेरे भईया...!"

1991 में रिलीज फिल्म 'सनम बेवफा' में रक्षाबंधन के पर्व को धर्मों से ऊपर दिखाया। एक मुस्लिम लड़की अपनी दोस्त के पांच राजपूत भाइयों को राखी बांधती है। फिल्म में सलमान खान लीड रोल में थे।

1993 में प्रदर्शित फिल्म 'तिरंगा' में भी रक्षाबंधन दिखाया गया। राज कुमार और नाना पाटेकर मुख्य भूमिकाओं में थे। फिल्म का गाना "इसे समझो ना रेशम का तार भैया...!" काफी हिट रहा। अदाकारा वर्षा उसगांवकर भाइयों की कलाई पर राखी बांधते ये गाना गाती हैं।

1994 में आई फिल्म 'साजन का घर', जिसमें जूही चावला के किरदार लक्ष्मी का भाई के प्रति अनोखा प्यार दिखाया था। दीपक तिजोरी सौतेले भाई सूरज की भूमिका में थे। रक्षाबंधन पर लक्ष्मी सौतेली मां के दुर्व्यवहार के बावजूद भाई सूरज को राखी बांधती है।

1998 में प्रदर्शित फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' को रोमांटिक फिल्म कहा जाता है, लेकिन सोहेल खान निर्देशित इस फिल्म में काजोल और अरबाज खान ने भाई-बहन का ऐसा किरदार निभाया, जिसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया। इसमें दिखाया कैसे अरबाज खान अपनी बहन का ख्याल रखते हैं और उन्हें लेकर काफी गंभीर हैं। इसके लिए वो फिल्म में सलमान खान की पिटाई भी कर देते हैं।

1999 में सूरज आर. बड़जात्या के निर्देशन में फिल्म 'हम साथ-साथ हैं' आई, जिसमें नीलम कोठारी ने बहन संगीता की भूमिका निभाई है। वह इस फिल्म में सैफ अली खान और सलमान खान द्वारा अभिनीत भाइयों के किरदारों विनोद और प्रेम को राखी बांधती है।

2000 में फिल्म 'फिजा' में ऋतिक और करिश्मा भाई-बहन के किरदार में नजर आए। फिल्म में दिखाया कैसे दंगो के बीच फिजा का भाई अमान गायब हो जाता है। फिजा भाई की तलाश सालों तक करती है और आखिर में बहन का प्यार जीतता है और फिजा, अमान को खोज लेती है। इसी साल आई फिल्म 'जोश' को देखकर लगा कि समय बदला गया है, तो भाई- बहन के प्यार का अंदाज भी बदल गया है। फिल्मों में आधुनिकता दिखने लगी है। मंसूर खान निर्देशित फिल्म 'जोश' में शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय भाई-बहन के रोल में दिखे। शाहरुख खान अपनी बहन के प्यार के लिए विलेन तक बनते नजर आए।

2012 में रिलीज अमिताभ बच्चन की फिल्म 'अग्निपथ' ऐसे लड़के की कहानी है, जिसके पिता का कत्ल हो जाता है और बचपन से वो बदले की आग में जलता रहता है। वो लड़का (ऋतिक रोशन) जब बड़ा होता है तो बदला लेने निकल पड़ता है। इस दौरान वो खोई हुई बहन को भी ढूंढता है।

2013 में प्रभु देवा निर्देशित फिल्म 'रवैया वस्तावैया' भले रोमांटिक फिल्म क्यों न हो लेकिन इसमें एक भाई अपनी बहन के लिए कितना संवेदनशील रहता है इस बात को अच्छे से दिखाया। इसमें श्रुति हासन, सोनू सूद की भाई-बहन की जोड़ी पसंद की गई। इसी वर्ष रिलीज राकेश ओम प्रकाश मेहरा निर्देशित फिल्म 'भाग मिल्खा भाग' फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह के संघर्ष की कहानी है। जिसमें उनके साथ उनकी बहन का बड़ा रोल है। दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते हैं, एक-दूसरे की तकलीफ में हर वक्त साथ देते हैं।

2015 में जोया अख़्तर निर्देशित फिल्म 'दिल धड़कने दो' में रणबीर सिंह व प्रियंका चोपड़ा ने भाई-बहन का रोल निभाया। वे फिल्म में खुद की समस्याओं के बावजूद एक दूसरे को सपोर्ट करते दिखे थे।

2016 में आई रणदीप हुड्डा और ऐश्वर्या राय बच्चन स्टारर फिल्म 'सरबजीत' एक सच्ची कहानी पर बनी फिल्म है। उमंग कुमार द्वारा निर्देशित फिल्म में सरबजीत नामक शख्स की कहानी है। जिसे पाकिस्तान ने जासूस समझ गिरफ्तार कर लिया था। बहन अपने भाई को वापस भारत लाने के लिए सालों कोशिश करती रही थी। इस फिल्म में भाई-बहन के अटूट रिश्ते को बखूबी दिखाया गया।

2022 में आनंद एल राय निर्देशित फिल्म 'रक्षाबंधन' में अक्षय कुमार ने चार बहनों के भाई का किरदार निभाया। पारिवारिक कॉमेडी-ड्रामा फिल्म में भूमि पेडनेकर, सादिया खतीब, सहजमीन कौर, स्मृति श्रीकांत और दीपिका खन्ना भी प्रमुख भूमिकाओं में दिखाई दिए थे। ■

भूल जाना उन बातों को...

भूल जाना उन बातों को
कह दी थी जो गाहे-बगाहे
कुछ अनसुलझी मुलाकातों में
बुने थे जो ख्वाब कभी मैंने
उधड़ गए वो बिछड़ते ही हमारे
अब नहीं अर्थ कोई उन बातों का
नहीं कोई ठिकाना मुलाकात का
बस अब सिर्फ एक ही तमन्ना
भूल जाना उन बातों को
सुन ली थी जो कभी तुमने
मत सुलझाना मेरी बातों को
उलझ जाएगी जिंदगी हमारी
मेरी नादानियां, तुम्हारी मासूमियत
कब उड़ा ले गया वक़्त का परिंदा
न तुम्हे पता चला न मुझे लगी खबर
बस अब तो सिर्फ कहना है एक बार
भूल जाना उन बातों को
कह दी थी जो गाहे-बगाहे
कुछ अनसुलझी मुलाकातों में

-हरीश भट्ट

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India
NOVA®
DAIRY PRODUCTS
Serving since 1991
Fresh Dahi
Ghee
घी, दूध, दही, छाछ,
पनीर और डेयरी व्हाईटनर
STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.
E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com
Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)
For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050